सामाजिक न्याय का
नकली और असली संघर्ष !

लेखक
डॉ. बी. के. वासनिक (Ph.D)

प्रकाशक
बहुजन मार्च
14, ठवरे कॉलनी (old), नागपुर - 440014
Website : https ://www. bahujanmarch.org

मुद्रक
रवि ऑफसेट वर्क्स, करबला के सामने. 39, ग्रेट नाग रोड,
नागपुर - 440 003 Mobile : 7507637311

पहली आवृति : दिसंबर 2018
मुद्रित प्रतियां : 1000 मात्र
सहयोग राशी Rs. 40/- मात्र

ANTI-COPYRIGHT
कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था शोषितों को शिक्षित करने हेतु
इस कॉपीराईट-मुक्त किताब को छापकर बेचने के लिये स्वतंत्र है।

प्रस्तुति **शोषित समाज जागरुकता मुहिम !**

अनुक्रमणिका

भाग 1 : शोषण व्यवस्था का संक्षिप्त स्वरुप 03

शोषण व्यवस्था का स्वरुप (3),नकली प्रजातंत्र (5), शोषण-व्यवस्था की अनिवार्यताएं (6), वैश्वीक शोषण-व्यवस्था (10), शोषण-व्यवस्थाओं का आधार (11)

भाग 2 : संक्षेप में नकली संघर्ष का स्वरुप 15

नकली संघर्ष तथा गतिविधियों के चंद उदाहरण : सुनहरे भविष्य के वादे (16), सशक्तिकरण के कार्यक्रम को लागु नही करना (17), केवल शाब्दिक सेवा (18), कार्य-योजना की बजाय सिर्फ भाषणबाजी (18), आत्मसुरक्षा के उपायों का अभाव (18), नकली नेता दलितों को दमित-शोषित रखना चाहते है (19), नकली नेताओं की कोई कार्य-प्राथमिकताएं नही होती (20), शोषण-दमन को सिर्फ मौखिक रुप से बेनकाब करना (20), आत्मघाति संघर्ष (21), नकली नेताओं के संम्मेलन (23), लादा गया आर्य-ब्राह्मणवादी नेतृत्व (23), सुधारवादी आन्दोलन (24), अनुत्पादक सामाजिक समारोह (24), पूजारी ओर उनके कर्मकांड (24), बेकार के मुद्दों में उलझना (25), आर्य-ब्राह्मण प्रतिक-पुरुषों के प्रसंशक (26), बहुजन पार्टी-संगठनों का भविष्य (28)

भाग 3 : असली संघर्ष की संक्षिप्त रुपरेखा 30

व्यक्तिगत सशक्तिकरण : स्वास्थ्य वर्धक आदतें (31), खुद को मानसिक तनाव से मुक्त रखे (32), ॲलोपॅथी की दवाओं के इस्तेमाल से बचे (33), हानिकारक उपकरणों से दूर रहे (34), सभी टिकों को नकार दें (35), कृत्रिम विटॅमिन्स न ले (36), अल्कोहोल (शराब) से दूर रहे (37), तर्कपूर्ण बर्ताव को विकसित करें (38), मानसिक स्वास्थ्य का विकास (38), अलग स्थितियों में अलग व्यवहार की समझ (39), आत्मरक्षा के हुनर सीखना (40), सबसे पहले बहुजन मिशन, बाद में संगठन (40), सिर्फ मिशन के कामों में चंदा दें (41), खुद को पसंदीदा मिशनरी गतिविधियों में समर्पित करें (41), सोशल मीडिया को मजबूत करें (41), कम्प्युटर उपभोक्ता के तौर पर लायनुक्स मिंट का उपयोग करे (42)

पारिवारिक सशक्तिकरण : मनुवादी डिश टी.वी कंपनियों तथा पत्र-पत्रिकाओं को त्याग दें (45), निरुपयोगी पत्र-पत्रिकाओं को ना खरीदे (46), अपने घर को पूजारियों से मुक्त रखे (48), कमजोर करने वाली प्रथा-परंपराओं को त्याग दे (49), परिवार में नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता (49), परिवार को आर्थिक रुप से सशक्त बनाएं (50)

सामाजिक सशक्तिकरण : सामाजिक संघर्ष की मूलभूत अनिवार्यताएं (51), सामाजिक सशक्तिकरण संघर्ष के कार्य (54) : सुबह के व्यायाम समुह (54), परस्पर सहयोग का विकास (55), पूजारियोंका पर्याय (55), समाज सहायता केन्द्र (55), न्यायिक सहायता (56), छात्रों के लिये मार्गदर्शक केन्द्र (56), समाज आत्मनिर्भरता केन्द्र (57), प्रत्यक्ष उपभोक्ता उत्पादक संबंध (57), दमन-शोषण का प्रतिकार (58), बंधुत्व कमिटियाँ (59), समाज आत्मरक्षा दल (60), बहुजन प्रचार समुह (60), आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा के शिकार शोषितों का पूर्नवास (61), बहुजनों को साहूकारों से मुक्त कराना (62), आंतर समाज सहकार्य (62) बेहतर प्राथमिक शिक्षा (63), जनहित याचिकाएं तथा आर.टी.आई. का उपयोग (64), सरकार के पास पडे हुए बाबासाहब के अप्रकाशित साहित्य का प्रकाशन (64)

भाग I

शोषण-व्यवस्था का संक्षिप्त स्वरुप

विश्व की शोषण-व्यवस्थाओं का संक्षिप्त स्वरुप निचे दिये मुताबिक है।

1. शोषण-व्यवस्था की जरुरत

अगर जानवरों का मांस पाना ही उद्देश्य है तो जानवर का रखरखाव करने की जरुरत नही होती। लेकिन अगर जानवरों की पैदावार बढा कर उनका व्यापार करने, जानवरों को खेती के कामों में लाने, उनके दूध का व्यवसाय करने, उन्हे वाहनों में जोतने के लिये अगर उनका इस्तेमाल करना है तो उनके लिये रहने का तबेला, चारा, देखरेख के लिये कर्मचारी, चिकित्सा इ. सारी बातों की व्यवस्था करनी होती है।

उसी तरह नगण्य तादाद का शोषक वर्ग को विशाल आबादी वाले बहुजनों का लगातार शोषण करने के लिये शोषण-व्यवस्था का निर्माण करना जरुरी होता है। शोषण-व्यवस्था के जरिये ही शोषक वर्ग देश के तमाम साधन-संसाधनों का तथा लोगों के श्रम का सतत रुपसे शोषण कर सकता है। जब चाहे तब नाममात्र के मुआवजे पर किसानों तथा आम लोगों को उनकी जमीन से बेदखल कर सकता है। शोषण-व्यवस्था चलाने लगने वाले धन को जनता से टॅक्स लगाकर जबरन वसूल कर सकता है।

अपना माल बेचकर भारी मुनाफा कमाने के लिये शोषक उद्योगपतियों को जनता की जरुरत होती है। शोषक सरकारें उनके उद्योगों को भारी सबसिडी देती है, नाममात्र की किमत पर जमीन उपलब्ध कराती है। उन्हे कम दाम पर बिजली, पानी इ. दी जाती है। उनको पूरी सुरक्षा मुहैया करायी जाती है। उनके माल को लाने ले जाने के लिये आम लोगों से वसूल टॅक्स के पैसे से सडके इ. बनायी जाती है। उनका कर्जा माफ किया जाता है। शोषक वर्ग के उद्योगपति सरकारी बँकों से अरबों रुपये कर्जा लेकर विदेश भाग जाते है। (उदा॰ माल्या, निरव मोदी इ॰)। बँकों को हुए घाटे की भरपाई जनता के सरकारी खजाने से अदा की जाती है। सरकारी खजाने में जमा हुए पैसे की पाई पाई अंततः आम जनता से ही वसूल होती है भले ही प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष टॅक्स कोई भी वर्ग क्यों ना अदा करे। इसतरह वे आम जनता का पैसा अपने आर्य-ब्राह्मण उद्योगपतियों को सरकारी बँकों के माध्यम से लूटाने में मदद करते है।

सरकार पर काबिज नेता इंटरनॅशनल मॉनिटरी फंड, विश्व बँक इ. से विभिन्न प्रकल्पों के नाम पर भारी भरकम कर्जा लेते है तथा इन प्रकल्पों के ठेके अपने पसंद के उद्योगपतियों को देते है। आरोप लगाया जाता है कि इसमें उनको दलाली की भारी रकम हासिल होती है। देश की जनता विदेशी कर्जे में डूब जाती है जबकि इन नेताओं का स्विस बँक अकांउंट का खजाना बढता है। जनता जितनी ज्यादा विदेशी कर्जे

में डुबती है ये उतने ही ज्यादा मालामाल होते है। सरकार पर काबिज नेता विदेशी बहुराष्ट्रिय कंपनियों से सामानों की खरीद के सौदे तथा विभिन्न अनुबंध (MOU) तय करते है। जिनकी शर्ते गुप्त होती है। गोपनीयता का हवाला देकर संसद अथवा विधानसभा तक में इसका ब्यौरा नही बताया जाता। आरोपों के मुताबिक इन सौदों तथा अनुबंधों में उन्हे भारी कमीशन हासिल होती है।

सरकार पर काबिज देशों के शोषक जान-बूझकर देशों के बीच दुश्मनी पैदा कर युध्द करते है और अपने अपने देशों के सैनिकों तथा जनता का खून बहाकर वे हथियारों की खरीद के सौदों से भारी कमीशन हासिल करते है। वे अपने खजाने को लगातार बढाने के लिये जनता का लगातार खून बहाते है।

आरोपो के मुताबिक लूटने के लिये सरकारी कोष का पैसा कम पडते जा रहा है इसलिये अब सरकार पर काबिज आर्य-ब्राह्मणवादी नेताओं ने भारतीय रिजर्व बँक के कोष पर भी अपनी नजर जमाई हुई है।

शोषक वर्ग खुद को इन्सान जबकि आम मूलनिवासी शोषित जनता को जानवरों से भी निचले दर्जे का मानते है। उनकी मान्यता है कि ईश्वर ने शोषित अवाम को उनकी सेवा के लिये इन्सानों के रुप में पैदा किया है। इसलिये देश सिर्फ और सिर्फ उनका है, देश के सारे साधन-संसाधन सिर्फ उनके है। क्या आपको काँग्रेसियों का ''इंडिया इज इंदिरा, अन्ड इंदिरा इज इंडीया'' का नारा याद है ? बिजेपी सरकार के ''इंडिया शायनिंग'' नारे का मतलब आर्य-ब्राह्मणवादी शायनिंग था। उनको ही हर तरह से फायदा पहुंचा कर ''चमकाया'' गया था। ''अच्छे दिन आयेंगे'' नारे का मतलब भी आर्य-ब्राह्मणवादियों के अच्छे दिन आयेंगे था। लेकिन भ्रमित जनता तमाम उदाहरणों के बावजूद यही मान बैठी की उनके अपने अच्छे दिन आने वाले है।

गरीब जनता झोपडपट्टियों तथा मुश्किल हालातों में रहती है। तथाकथित नागरी तथा तकनीकी विकास सिर्फ धनवानों के लिये ही होता है। बडे बडे रस्ते, बुलेट ट्रेन, हवाई जहाज, लक्झरी कारें, फाईव स्टार होटल इ. सभी उन्ही की सुविधाओं को ध्यान में रखकर बनाये जाते है।

क्योंकि आर्य-ब्राह्मणवादी शोषक खुद को ही देश तथा राष्ट्र मानते है इसलिये उनके दमन-शोषण का (जिसे वे अपना ईश्वर प्रदत्त अधिकार मानते है) विरोध करने वालों को वे राष्ट्रविरोधी, देशद्रोही, नक्सलवादी, आतंकवादी, पाकिस्तानी इ. करार देते है। उनकी पुलिस तथा अर्धसरकारी बल लाठीचार्ज कर विरोध करने वालों की हड्डियां तोड देते है। घरों में घूस घुस कर लोगों को मारा पीटा जाता है। गोलियों से कईयों को हलाक किया जाता है। आम लोगो पर आतंक ढाया जाता है। राष्ट्रविरोधी, देशद्रोही, नक्सली इ. कह कर अनिश्चित काल के लिये उन्हे जेलों में ठूंसा जाता है। आम जनता शोषक वर्ग के लिये हमेशा ही ''साफ्ट टार्गेट'' यानी आसान शिकार होती है क्योंकि

उसे निहत्था बनाया गया है। जबकि धनवानों को हथियारों के परवाने जारी किये जाते है। शोषक वर्ग हमेशा ही हथियार बंद तथा कडी सुरक्षा व्यवस्था में रहता है।

2. नकली प्रजातंत्र

शोषक वर्ग हर मुमकिन परिणामकारक, आसान, सस्ते तथा भ्रमित करने वाले उपायों से आम जनता को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है। नकली लोकतंत्र इन्ही उपायों में से एक है। संविधान के सामाजिक न्याय के नियम कानून, मानवाधिकार, समान अवसर, ''जनता के लिये, जनता की, जनता व्दारा सरकार'' इ॰ सारी बातें झूठे वादे मात्र होते है। इनका मतलब आम जनता से शोषकों का असली क्रूर चेहरा छुपाना होता है। लोकतंत्र नकली होता है क्योंकि सिर्फ धनवान ही चुनाव लडकर जीत सकते है। भ्रमित आम जनता कभी नही सोचती कि, जो लोग किसी को एक नये पैसे तक की मदद नही करते, वे करोडों रुपये खर्चा करके क्या लोगों की सेवा करेंगे ? वे तो अपने खर्चे की कई गुना रकम वसूल करेंगे और अपने लिये सारी उम्र भर पेंशन तथा सारी सुविधाएं सुनिश्चित करेंगे। इसलिये चाहे कोई भी पार्टी क्यों ना सत्ता पर काबिज हो जाये वे जनता की किमत पर खुद मालामाल होते रहेंगे।

मकडी (शोषक वर्ग) अपने जाल (पुलिस, न्याय-व्यवस्था, नौकरशाही इ.) में मुक्त रुप से संचार करती है, जबकि कीडें-मकौडे (आम गरीब) इस जाल में फँस कर दम तोड देते है। शोषक वर्ग के अपराधी निरपराध छोडे जाते है क्योंकि पुलिस, सीबीआय इ. जांच एजंसियाँ उनके खिलाफ कमजोर मुकदमा दायर करती है। किसी को सजा नही होती। लेकिन गरीबों को मामुली जुर्म में भी अनिश्चित काल के लिये जेलों में ठूंसा जाता है क्योंकि उनके पास न ही जमानत लेने के लिये और न ही अपने मुकदमे लडने के लिये पैसे होते है। आरोपित जुर्म की अधिकतम सजा से भी ज्यादा समय तक वे जेलों में सडते रहते है, उनका पूरा परिवार तहस नहस हो जाता है।

अमेरिका तथा अन्य कई देशों में उन लेखकों को जेलों में ठूंसा गया है जिन्होने हिटलर व्दारा यहूदी लोगों के कथित जनसंहार को नकारने के पुख्ता प्रमाण पेश किये है। भारत की सरकार पर काबिज सभी आर्य-ब्राह्मणवादियों ने **POTA, POTO** तथा अन्य दमनकारी कानूनों को पारित कर लोकतंत्र को मजाक बना दिया है। इन कानूनों के तहत पुलिस व्दारा मार पीट कर लिये गये बयान के आधार पर लोगों को फांसी की सजा तक दी जा सकती है। केवल शक पर किसी को भी जान से मारा जा सकता है, किसी का भी घर ध्वस्त किया जा सकता है। अमेरिका में अनेक अध्यक्षीय निर्देशों (Presidential Decision Directives) जैसे की FEMA इ. व्दारा अमेरिका के संविधान व्दारा लोगों को दिये गये मानवी अधिकारों को निरस्त किया गया है।

अमेरिकी सरकार पर काबिज शोषक MKULTRA इ. मश्तिष्क नियंत्रण के

प्रयोग, घातक विकिरण (radiation) परिणामों के प्रयोग, विद्युत-चुंबकीय तंरगों (electro magnetic frequency) के परिणामों के प्रयोग, विभिन्न नशीली तथा मश्तिष्क पर परिणाम करने वाली दवाओं के प्रयोग उनकी जानकारी के बिना लोगों पर, मरिजों पर, अपहरण किये गए बच्चों पर, कैदियों पर, सैनिकों इ. पर किये जाते है। उन्होने जैविक हथियारों तक के प्रयोग आम जनता पर उनकी जानकारी के बिना किये है। अफ्रीकी देशों में जानबूझकर कर AIDS इ. के विषाणुओं को विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य कई एजन्सियों व्दारा शुरु किये गए टिकाकरण अभियानों के जरिये फैलाया गया। आरोपों के मुताबिक इन टिकों का विकास सरकारी गुप्त प्रयोगशालाओं में किया गया था। टिकों में गर्भ निरोधक दवाएं मिलाकर उन्हे महिलाओं को झूठे बहानों से लगाया गया।

जी.पी.एस से सुसज्जित रोबोटस् की सेना, ड्रोन; चालक रहित विमान, चालक रहित बसे, चालक रहित टॅक्सियाँ तथा रेल गाडियां इ. सभी क्षेत्रों में रोबोट का उपयोग हो रहा है। उद्योगों से लेकर जीवन के हर क्षेत्र में लगातार बढते रोबोटस् के उपयोगों की वजह से दुनियाँ की लगभग **90%** आबादी ''बेरोजगार'' तथा गैरजरुरी करार दी जाएगी। विश्व के शोषकों ने उन्हे अभी से ''गैरजरुरी अनाज के दुश्मन' (**Useless eaters**) करार दिया है। बचे हुए **10%** लोगों को शोषक वर्ग अपने ''गुलाम-प्राणी'' बनाकर उन पर मनमाने तरिकों से राज करेंगे। हॅरी पॉटर फिल्मों में ''गुलाम प्राणियों'' को बताया गया है।

3. शोषण व्यवस्था की अनिवार्यताएं

1. शोषण करने हेतु लोगों को अपने नियंत्रण में रखने के लिये शोषकों को पुलिस, अर्धसैनिक बलों तथा सेना की जरुरत होती है। वे जनता को निशस्त्र बनाकर रखते है तथा सिर्फ धनवान ही हथियार रख सकते है।

2. आम जनता को जानबूझकर पढाई से वंचित तथा अज्ञानी रखा जाता है। भारत में प्राथमिक शिक्षा की दुर्दशा जानबूझकर इसी मकसद से बनाई गई है। अंग्रेजी माध्यम की बेहतर शिक्षा को गरीबों की पहुंच से बाहर की बनाया गया है।

3. धार्मिक पूजारियों के माध्यम से धर्म के अंधविश्वासों, कुप्रथाओं से लोगों में गुलामी की प्रवृत्तियों को विकसित किया जाता है। शासकों को ईश्वर का प्रतिनिधि तथा मालिकों को अन्नदाता करार दिया गया है। धार्मिक पूजारी सुनिश्चित करते है कि लोग हमेशा ही अंधविश्वासों में तथा भावनात्मक मुद्दों में जकडें रहे। महंगे रीतिरिवाजों से यह सुनिश्चित किया जाता है कि जनता हमेशा ही गरीबी और अभाव में सडती रहे।

4. आम जनता को ज्यादा से ज्यादा श्रेणियों में जैसे कि विभिन्न धर्मो, पंथों, कल्टों, इ. में बॉटकर शोषक उन्हे आपस में संघर्षरत रखता है। इसी मकसद से शोषकों ने

कथित ''न्यू एज'' धर्म, पंथों तथा कल्टों को विकसित किया है।

5. टी.वी. सिरियलों के माध्यम से लोगों में मक्कारी, स्वार्थी प्रवृत्ति, अवसरवादिता, धोखेबाजी, अनैतिकता तथा गंदी प्रतिस्पर्धा की भावना को विकसित किया जाता है। इन सिरियलों में एक ही परिवार के सदस्य अपने स्वार्थो को पूरा करने के लिये आपस में एक दूसरे के खिलाफ तरह तरह के षडयंत्रों में शामिल दिखाये जाते है। इन सिरियलों को बच्चे भी देखते है और इन सभी प्रवृत्तियों को आम प्रवृत्ति मानकर ये सब दुर्गुण खुद में विकसित कर लेते है। ऐसी प्रवृत्ति वाले लोग अपने मतलब के लिये शोषकों के इशारों पर अपने परिवार तक को धोखा दे सकते है।

6. भ्रष्ट्राचार तथा अपराध को जानबूझकर बढावा दिया जाता है जिससे यह सुनिश्चित होता है कि निचे के स्तर से कमीशन के पैसे सर्वोच्च स्तर तक लगातार प्रवाहित होते रहे। भारत में वरली मटका इ. सट्टे के अंक प्रमुख अखबारों में छापे जाते है। वेश्या व्यवसाय खुलेआम चलता है। सरकार की इजाजत से ही अपराधी अपने अपराधिक धंदों को जारी रख सकते है इसलिये वे सरकार के खिलाफ कैसे जा सकते है ? साल भर में एक दो बार उनके खिलाफ छापा मारने का दिखावा किया जाता है ताकि लोगें में भ्रम रखा जा सके कि सरकार इन अपराधों के खिलाफ है। इन्ही अपराधियों को लोगों के खिलाफ इस्तेमाल कर शोषण-व्यवस्था की रक्षा की जाती है।

7. सी.आई.ए. इ. गुप्तचर संस्थाएं अफीम इ. नशीली दवाओं के व्यापार से अपने लिये धन इकट्ठा करती है ताकि वह अपनी गुप्त गतिविधियों को जनता में बेनकाब हुए बिना जारी रख सके। क्योंकि यह धन सरकारी खजाने के बजट में शामिल नही है इसलिये सरकारें जनता की नजर में खुद को बेनकाब किये बिना अपने विघातक कामों को जारी रख सकते है। सी.आई.ए. अपराधों से हासिल पैसों को एक जगह से दूसरी जगह भेजने का काम इसी मकसद से बनाये गए बँकों के माध्यम से करती है। इस धन से अपराध तथा अपराधियों की पूरी यंत्रणा को कायम रखा जाता है। उनकी मदद से देशों में अस्थिरता पैदा कर उन देशों की सरकारों का तख्ता पलटा जाता है।

8. शोषक सरकारें जनता के कई हिस्सों में दुश्मनी पैदा कर उन्हे आपस में संघर्षरत रखती है ताकि संपूर्ण समाज कभी भी शोषकों के खिलाफ एकजूट ना हो सके। इन संघर्षो से नकली नेताओं को अपने स्वार्थ पूरे करने का मौका मिलता है।

9. शोषक तरह तरह की तिकडमों से आम लोगों को जानबूझकर गरीब और लाचार बनाकर एकदूसरे के खिलाफ असंतुष्ठ बनाये रखता है। इसी मकसद से संपूर्ण नौकरशाही को जनता के लिये अकार्यक्षम और भ्रष्ट्र बनाया जाता है ताकि लोगों के सभी हिस्से एकदूसरे से टकराते रहे। इसलिये जनता कभी शोषकों के खिलाफ संगठित नही हो पाती। लोगों के लिये अक्षम साबित हुई नौकरशाही शोषकों के लिये बेहद कार्यक्षम होती है वर्ना उनकी नौकरी पर बन आती है।

10. राजनीतिक तथा सामाजिक नकली मुद्दे तथा नकली गतिविधियाँ वे मुद्दे तथा काम है जो लोगों के भले का ढोंग रचाते हुए वास्तव में लोगों के समय, परिश्रम तथा धन को बर्बाद करते है तथा उन्हे शारीरिक तौर पर भी नुकसान पहुंचा सकते है। शोषक वर्ग ऐसे ही नकली मुद्दों तथा गतिविधियों का निर्माण कर उन्हे अपने मीडिया से प्रचारित करा कर अपने दलाल नेताओं के माध्यम से जनता को इन्ही नकली मुद्दों तथा गतिविधियों में उलझा कर रखते है।

11. शोषक इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखते है कि कभी भी शोषण के खिलाफ संघर्ष का नियंत्रण आम जनता के हाथों में ना आने पाये, सभी संघषों का नेतृत्व हमेशा ही नकली नेताओं के हाथों में रहे। क्योंकि नकली नेता कभी भी शोषकों के लिये या उनकी शोषण-व्यवस्था के लिये खतरा नही बन सकते।

12. शोषित जनता पर नजर रखने के लिये शोषक वर्ग CCTV कॅमेरे, वाहनों पर मायक्रो चीप्स, मुद्राविरहीत लेनदेन का रिकार्ड, मोबाईल फोन के रिकार्ड, इंटरनेट गतिविधियों के रिकार्ड, आधार कार्ड को तमाम सेवाओं से जोडना, सॅटेलाईट से निगरानी करना, आधुनिक टी.वी. तथा स्मार्टफोन के माध्यम से हर गतिविधी तथा बातचित की खबर रखना, सरकारी एजन्सियों के माध्यम से खबर रखना इ. राजनीतिक नियंत्रण के चंद उपाय मात्र है।

13. सभी शोषण-व्यवस्थाएं जाति-व्यवस्था की तरह विभिन्न श्रेणियों वाली पिरॅमिड जैसी संरचना होती है जिसमें सबसे उंचे स्थान पर शोषक वर्ग तथा सबसे निचले स्तर पर आम मूलनिवासी दमित-शोषित जनता होती है। इन दोनों के बीच में नौकरशाही तथा तकनीशियनों के विभिन्न स्तर तथा मध्यम वर्ग होता है।

14. शोषकों की शोषण-व्यवस्था में संप्रेषण (**communication**) हमेशा ही उपर से निचे की ओर होता है। वहां निचे से उपर की ओर संप्रेषण नही पाया जाता। एक जैसे स्तरों में एक स्तरीय (Horizontal) संप्रेषण पाया जाता है।

15. शोषक वर्ग जीवनावश्यक वस्तूओं जैसे कि अनाज, पानी, बिजली इ. पर पूर्ण नियंत्रण कायम कर जनता को नियंत्रित करता है। जहां लोग राज्य आतंकवाद का प्रतिरोध करते है वहां लोगों में राशन इ. का वितरण चयनात्मक तरीके से पुलिस तथा सुरखा बलों के माध्यम से किया जाता है ताकि प्रतिरोध करने वालों को इन चीजों से वंचित किया जा सके तथा अन्यों को सहयोग के लिये बाध्य किया जा सके।

16. सभी शोषक वर्ग खुद को धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक रुप से श्रेष्ठ तथा जनता को हीन समझकर उनसे नफरत करते है। साहित्यकार एच. जी. वेल्स के मुताबिक शोषक वर्ग इस बात से ही संतुष्ठ नही होता कि वह संपन्न हुक्मरान वर्ग है बल्कि वह जनता को जानवरों के स्तर से भी निचे लाता है ताकि उसे अपनी श्रेष्ठता

का लगातार अहसास होता रहे। इस बात को एक कहानी से स्पष्ट किया जा सकता है :- यौनसंबंधों से अनजान एक राजकुमारी की शादी हुई। सुहागरात से आनंदित उसने अपने पति से पूछा कि क्या गरीब लोग भी यह सब करते है ? उसके पति ने हां में जवाब दिया तब उसने तपाक से कहा कि उन्हे ऐसा करने से रोकना होगा। यह कहानी शोषक वर्ग की मानसिकता को उजागर करती है। इसी मानसिकता की वजह से भारत के कई गांवों यहांतक कि कुछ शहरों तक में दलितों को घोडे पर बैठकर अपनी बारात ले जाने, पगडी पहनने, बडी मूंछे रखने, अच्छे कपडे पहनने तक की मनाही है। इसी मानसिकता के तहत देश के विभिन्न प्रांतों में जानबूझकर सीर पर मैला ढोने की प्रथा को जारी रखा गया है। कानूनन प्रतिबंध होने के बावजूद दलितों को सीवर में बिना सुरक्षा इंतेजाम के उतारा जाता है जिससे रोज दलितों की मौते होती है।

भारत विभाजन के दौरान आर्य-ब्राह्मणवादियों ने बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर को कांन्स्टिटयुएंट असेंबली में चुनने वाले बंगाल के दलित बहुमत तथा मुस्लिम अल्पमत के जैसोर, खुलना, बरीसाल, फरीदपुर ढाका, मैमनसिंह तथा बुध्दीस्ट बहुमत के चिटगांग हिल्स क्षेत्र जानबूझकर पाकिस्तान के हवाले कर दिये। इस्लाम में धर्मांतरित पाकिस्तान के हुक्मरान आर्य-ब्राह्मणों ने दलितों पर जुल्म ढाये जिससे उन्हे भारत वापस आना पडा। भारत की केन्द्र तथा राज्य सरकार पर काबिज ब्राह्मणवादियों ने उन्हे हर तरह से प्रताडित किया और उनकी ताकत को खत्म करने के लिये उन्हे देश भर के दुर्गम स्थलों में स्थानांतरित कर दिया। इतने से भी उन्हे तसल्ली नही हुई तो पश्चिम बंगाल की आर्य-ब्राह्मणवादी कम्युनिस्ट सरकार ने षडयंत्र से उनका मोरिचझापी में जनसंहार किया। उन्हे जानबूझकर सुंदरबन के बाघों का भोजन बनाया गया। इतना ही नही तो तमाम अंर्तराष्ट्रिय नियमों कानूनों को ताक पर रख कर संसद में एक काला कानून पास किया गया जिसके मुताबिक कई दशकों से भारत में विस्थापित बंगाली दलितों को तथा यहां पैदा हुए उनके बच्चों तक को भारतीय नागरिकता लेने से प्रतिबंधित किया गया है। इन बंगाली दलितों को आतंकवादी घुसपैठिये घोषित कर उनको जबरन ''भारत बंगलादेश की सीमा पर बने नो मेन्स लँड'' में बंदूक की नोक पर खदेडा जाता है। ये दलित बंगाली चाहे जिस भी देश में जाने की कोशिश करते है, वहां तैनात सैनिक बल उन्हे गोलियों से हलाक करते है। कई दशकों से यह सिलसिला लगातार जारी है। यह है आर्य-ब्राह्मणवादियों की मूलनिवासियों के प्रति नफरत का एक नमुना।

17. जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में रोबोटस् के उपयोग से एक बहुत बडी तादाद में लोग बेरोजगार हो जाएंगे। ऐसी **90%** आबादी को कृत्रिम रुप से पैदा किये गए भुकंप, सुनामी, बाढ, इ. विपदाओं, तथा AIDS, EBOLA इ. जैविक हथियारों के माध्यम से खत्म किया जाएगा।

4. वैश्वीक शोषण-व्यवस्था

वैश्विक शोषण व्यवस्था का नियंत्रण पर्दे के पिछे से 13 झाओनिस्ट बँकिंग परिवारों व्दारा किया जाता है। इन्हे इल्युमिनॅटी के नाम से भी जाना जाता है। आरोपों के मुताबिक वे तलमुद तथा शैतानवाद में यकीन रखते है। इल्युमिनॅटी-यहूदी बँकिंग समुह अपने धन की बदौलत विश्व की लगभग सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को नियंत्रित करते है। दावा किया जाता है कि रोथ्सचिल्ड इन बँकिंग परिवारों का मुखिया है। वे हर देश के प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया को, सभी मजदूर संगठनों को; सभी राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक संगठनों को नियंत्रित करते है। उनके माध्यम से वे सभी सरकारों को नियंत्रित करते है, उन्हे आर्थिक समझौतें करने पर मजबूर करते है।

यहूदी-इल्युमिनॅटी बँकिंग समुह देशों के बीच युध्द कराकर दोनों युध्दरत पक्षों को आर्थिक मदद देकर अपने पसंद के युध्द परिणाम तय करता है तथा सभी युध्दरत देशों को अपने कर्जे की गुलामी में जकड लेता है। यह दावा किया गया है कि अबतक हुए सभी युध्द यहूदी-इल्युमिनॅटी बँकिग समुह व्दारा कराये गये है। उन्होने न सिर्फ देशों को बल्कि देशों की तमाम आर्थिक संस्थाओं तक को अपने नियंत्रण में किया हुआ है। यह दावा किया गया है कि ईरान, उत्तर कोरिया तथा क्युबा के अलावा सभी देशों के केन्द्रिय बँकों को रोस्थचिल्ड व्दारा नियंत्रित किया जाता है।

यहूदी-इल्युमिनॅटी बँकिंग समुह को सभी देशों पर अपने नियम-कानून लागु कर उन पर राज करने के लिये एक वैश्वीक सरकार की आवश्यकता है। अपने इस मकसद को पूरा करने के लिये उन्होने विश्व बँक, इंटरनॅशनल मॉनिटरी फंड, बँक ऑफ इंटरनॅशनल सेटलमेंट, संयुक्त राष्ट्र संघ, युरोपियन युनियन इ. संस्थाएं कायम की।

लोगों की सभी समस्याएं चाहे फिर वह बेरोजगारी हो या आदिवासियों, किसानों को उनके जल, जंगल और जमीन से विस्थापित करने के मामले हो, ये सभी समस्याएं यहुदी बँकिंग समुह व्दारा नियंत्रित बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ सरकारों व्दारा किये गये विभिन्न MOUs के परिणाम है। GATT इ. जैसे समझौतों के प्रावधानों के मुताबिक अगर देश का संविधान या उसके कोई कानून इन समझौतों में रुकावट बनते है तो उन्हे निरस्त माना जाएगा। इसतरह इन समझौतों से देश के कानून तथा संविधान अर्थहीन बनाये गए है। जमीन की सीलिंग का कानून बेमतलब हो गया है क्योंकि ''विशेष आर्थिक क्षेत्र'' (SEZs) हजारों-लाखों एकड जमीन रख सकते है।

अमेरिका तथा नाटो (NATO) अन्य देशों पर सैनिक दबाव बनाने के माध्यम है जबकि सी.आई.ए. इ. गुप्तचर संगठनाओं के माध्यम से उनके आर्थिक हितों के आगे न झुकने वाले देशों की सरकारों का तख्ता पलटा जाता है। इजरायल का निर्माण रोथ्सचिल्ड ने कराया था। ब्रिटीश सरकार ने रोथ्सचिल्ड को लिखे अपने बालफोअर

घोषणापत्र (**Balfour declaration**) में यह वादा किया था कि फिलीस्तीन में इजरायल का निर्माण किया जाएगा। रोथ्सचिल्ड बँकिंग समुह ने अपने वादे के मुताबिक तमाम षडयंत्रों को अंजाम देते हुए व्दितीय विश्व युध्द में अमेरिका को ब्रिटीश खेमे में लाने में कामयाबी हासिल की और इसके बदले में अंततः इजरायल का निर्माण कराया गया। अमेरिका को यहूदी बँकिंग समुह नियंत्रित करते है। इसलिये इजरायल को अमेरिका से भारी आर्थिक तथा सैनिकीय मदद हासिल होती है। अमेरिका इजरायल के हर कदम का समर्थन करने पर मजबूर है। इसलिये इजरायल के युध्द अपराधों तथा मानवाधिकार हनन के खिलाफ पारित संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी प्रस्तावों पर कभी अमल नही किया जा सका। दुनियां की कोई भी ताकत इजरायल को अपने आण्विक ठिकानों का अंर्तराष्ट्रिय निरिक्षण कराने के लिये बाध्य नही कर सकी है। व्दितीय विश्व युध्द में जर्मनी में हुए कथित यहूदी जनसंहार के आरोप में जर्मनी की सरकार इजरायल को भारी मुआवजा अब तक अदा कर रही है, जबकि इस जनसंहार की सत्यता को चुनौतियां दी गई है। यहूदी बँकिंग समुह के दबाव में कई सरकारों ने एन्टी-सेमिटीजम कानून पारित कर जर्मनी में यहूदियों के कथित जनसंहार पर सवाल खडे करने वाले लेखकों को इस कानून के तहत जेल भेज दिया है। दरअसल कई देशों की सरकारे मात्र यहूदी बँकिंग समुह की फ्रंट सरकारें है। भारत की सरकार पर काबिज आर्य-ब्राह्मण ावादियों ने यहूदी -बँकिंग समुह व्दारा नियंत्रित बहुराष्ट्रिय कंपनियों को हर तरह से लाभ पहुंचाया है। भोपाल के गॅस पीडितों से धोखेबाजी करते हुए कॉंग्रेस तथा बिजेपी दोनों ने ही युनियन कार्बाईड के एंडरसन को भारत से बाहर जाने में मदद की तथा यह सुनिश्चित किया कि उसे भारी मुआवजा न देना पडे।

यहूदी बँकिंग समुह का अंतिम मकसद तलमुद की शिक्षा के मुताबिक लोगों को गुलाम बनाकर उनपर राज करना है। आर्य-ब्राह्मणों की मनुसमृति की तरह ही तलमूद यहूदियों का धार्मिक ग्रंथ है। तलमुद की व्यवस्था के तहत दुनियां के मूलनिवासी बहुजनों के बडे हिस्से का जनसंहार किया जाएगा तथा बचे बहुजनों को जानवरों से भी बदतर हालत में लाकर उन पर कठोरता से राज किया जाएगा।

5. शोषण-व्यवस्थाओं का आधार

1. झाओनिजम, ब्रह्मणवाद तथा शैतानवाद (ZBS) :- सभी शोषण व्यवस्थाओं का मनोवैज्ञानिक आधार इन्सान में पाई जाने वाली आलस, लालच, ईर्षा तथा व्देष इ. भावनाएं है। इन्ही भावनाओं से झाओनिजम, ब्राह्मणवाद तथा शैतानवाद का विकास हुआ है। चाहे कोई अमीर हो या गरीब, समाज के हर हिस्से में ये भावनाएं पाई जाती है। आलसी इनसान कोई काम नही करना चाहता। वह किसी भी अनैतिक तथा आसान तरीके से अपनी जरुरतें पूरी करना चाहता है। वह किसी परजीवी की तरह दूसरों

के श्रम पर जिना चाहता है। ZBS के मुताबिक ताकतवर इनसान को यह हक है कि वह कमजोर लोगों को अपना गुलाम बना कर उन पर चाहे जैसी क्रूरता से राज करे। ZBS खुद को ताकतवर बनाने के लिये धोखेबाजी, मक्कारी, झूठ, हत्याएं (साम, दाम, दंड, भेद), इ. के इस्तेमाल को मान्यता देता है। ताकतवरों को कमजोरों का विनाश करने का अधिकार देता है। शैतानवाद इसे नैसर्गिक नियम करार देकर घोषित करता है कि वह ''निसर्ग चयन'' (natural selection) प्रक्रिया की मदद कर रहा है ताकि एक दूसरों को धोखा देने में सक्षम ताकतवर तथा चालाक लोगों के समाज का निर्माण किया जा सके।

इन्सान अपनी लालसाओं के पिछे इसलिये भागता है क्योंकि उसे लगता है कि ज्यादा से ज्यादा धन तथा सुविधाएं हासिल करने से वह सुखी हो जाएगा। इनसान की लालसा की कोई सीमा नही होती। हमेशा ही कोई न कोई उससे ज्यादा धनवान व्यक्ति मौजूद होता है। अपने से ज्यादा धनवान व्यक्ति के प्रति उसे ईर्षा होती है और वह असमाधानी बनता है। वह किसी भी तरीके से और धन हासिल कर उसकी बराबरी करना चाहता है। किसी को सारी दुनियां का शहनशाह भी बना दिया जाये तब भी वह सुखी नही बन सकता क्योंकि उसे हमेशा डर बना रहता है कि कोई उसका गुप्त शत्रु या कोई उसका अपना ही रिश्तेदार कही उसका तख्ता न पलट दे।

इसलिये अगर शोषकों की सरकारों को चाहे हजारों बार ही क्यों न पलटा जाये, हर बार आलसी, लालची और स्वार्थी लोग दोबारा सत्ता में आ जाएंगे। इसलिये जब तक आलस, लालच, ईर्षा और झाओनिजम, ब्राह्मणवाद और शैतानवाद की व्यर्थता को जान समझकर खुद में तर्क से प्राप्त ज्ञान (प्रज्ञा), अच्छा चरित्र (शील) तथा दूसरों के दूखों के प्रति संवेदक्षमता (करुणा) को विकसित नही किया जाता तब तक सामाजिक न्याय पर आधारित शोषण विहीन समाज को कायम नही किया जा सकता। तबतक स्वार्थी परजीवी लोगों का सत्ता के लिये सतत संघर्ष चलता रहेगा। गरीब और कमजोर लोगों का हर क्रूर तरिकों से दमन-शोषण चलता रहेगा। सामाजिक न्याय के कामयाब संघर्ष के लिये लोगों में प्रज्ञा, शील और करुणा का विकास होना जरुरी शर्त है।

2. सूदखोरी :- निचे दी हुई कहानी से स्पष्ट होता है कि सूदखोरी से शोषण व्यवस्था का जन्म होता है :- एक अज्ञात छोटे से व्दीप के रहिवासी चीजों को आपस में बदल कर अपनी जरुरतें पूरी करते थे। खेतिहर इ. उत्पाद खास मौसम में ही उपलब्ध थे जिससे वस्तूओं को बदलने में दिक्कत थी। इसलिये वे परेशान थे। संयोगवश नाव से एक आदमी उनके व्दीप पहुंचा। उसने कहा कि उसके पास प्लास्टिक के विभिन्न मूल्य के सिक्के है जो उसके बक्से में बंद सोने का प्रतिनिधित्व करते है। लोग इन सिक्कों को कर्ज में लेकर सिक्कों की मदद से एक-दूसरे की चीजों को खरीद सकते है। लोगों ने सिक्के कर्ज में लिये। सूद सहित कर्ज की किश्तें देने के बाद उनके

सिक्कों की तादाद कम होने लगी क्योंकि कूल कर्ज मूल रकम से हमेशा ज्यादा होता है। उपाय यही था की या तो वे साहुकार से और कर्ज ले या फिर अनैतिक व्यापार नियमों का पालन कर औरों से सिक्के हडपें। व्याज सहित कर्ज की रकम दिये गये कर्ज से हमेशा ही ज्यादा होती है इसलिये अगर सारे निवासी अपने सारे सिक्के सूदखोर को लौटा दे तो भी सूदखोर का कर्ज खत्म नही हो सकता। इसलिये लोगों की हालत बदतर होने लगी। सूदखोर ने व्दीप के कुछ हष्ठपुष्ठ सशस्त्र लोगों को नौकर रखा। वे जबरन वसूली इ. करते थे। व्दीप के अधिकांश लोग कर्जे से बर्बाद होकर सूदखोर के बंधुआ मजदूर बन गये। सूदखोर के बक्से में सोना नही बल्कि कपडे इ. मामूली चीजे थी। उसने चंद प्लॅस्टिक के टूकडों के बदले में लोगों की जायदाद गिरवी रखवाकर अंततः हडप ली थी।

कूल कर्जा लिये गये कर्जे की रकम से हमेशा ही ज्यादा होता है इसलिये मुद्रास्फिती (महंगाई) बढती है। इसलिये कर्मचारियों की तनख्वाह बढानी पढती है। तनख्वाह अदा करने के लिये और ज्यादा मुद्रा छापनी पडती है जिससे और ज्यादा मुद्रास्फिती होती है। यह दुष्चक्र चलते ही रहता है और इसमें असंगठित गरीब जनता और ज्यादा गरीब बनते जाती है। इसलिये व्याज और सूदखोरी से मुक्त व्यवस्था का निर्माण होना सामाजिक न्याय के लिये अनिवार्य शर्त है।

3. अन्यायपूर्ण लाभखोरी :- उद्योगपति लाभ का बहुत ही नगण्य हिस्सा मजदूरों को देकर विषमतापूर्ण समाज-व्यवस्था की बुनियाद डाल देता है। जमाखोरी से कृत्रिम अभाव की हालत पैदा करना, व्यापारियों व्दारा आपस में संगनमत करके तथा औद्योगिक एकाधिकार कायम करके भी अन्यायपूर्ण तरिकों से लाभ वसूला जाता है। इन सभी से विषमतापूर्ण समाज-व्यवस्था का निर्माण होता है।

4. केन्द्रिकृत राज्य-यंत्रणा :- राज्य यंत्रणा हमेशा ही जाति-व्यवस्था की तरह पिरॅमिड की तरह श्रेणियों वाली व्यवस्था होती है। राज्य-यंत्रणा अपने आप में एक जनविरोधी शोषक वर्ग होता है। आम जनता कभी भी पुलिस थाने में, न्यायालय में या सरकारी दफ्तरों में कदम नही रखना चाहती। केन्द्रिकृत राज्य से तानाशाही का निर्माण होता है।

5. लोगों में परनिर्भरता की मानसिकता :- आलस, लालच, इर्षा और व्देष के अलावा लोगों में व्याप्त परनिर्भरता की मानसिकता भी हर शोषण-व्यवस्था की मनोवैज्ञानिक बुनियाद होती है। परनिर्भरता की मानसिकता के लोगों को अपने उध्दार के लिये हमेशा ही किसी न किसी नेता या संत की जरुरत होती है। इसलिये जो भी कोई उन्हे गरीबी हटाने, अच्छे दिन लाने, शोषण विहिन समाज व्यवस्था कायम करने का लालच देता है, वे उसका समर्थन करते है और उन्हे अपना मुक्तिदाता मानने लगते है। ऐसी जनता में स्थिति को खुद नियंत्रण करने का साहस और क्षमता नही होती :-

प्लासी की लडाई में विजय हासिल करने के बाद इस्ट इंडिया कंपनी के लार्ड क्लाईव्ह ने अपने 200 युरोपियन सैनिकों तथा 500 बहुजन सैनिकों के साथ मुर्शिदाबाद शहर में प्रवेश किया। उन्हे देखने के लिये सडक के दोनों ओर लाखों लोगों की भीड जमा हुई। क्लाईव्ह लायड को डर लगा कि ये लोग चाहते तो उन्हे मात्र लाठी और पत्थरों के सहारे खत्म कर सकते थे। लेकिन ऐसा करने का उनमें साहस नही था। (Bharatiya vidya Bhawan, The History and Culture of the Indian people,Vol.10 p.3) परनिर्भरता की मानसिकता वाले लोग शोषण-व्यवस्था को तथा सामाजिक न्याय पर आधारित समता मूलक समाज व्यवस्था के स्वरुप को तथा सामाजिक न्याय के लिये कामयाब संघर्ष कैसे किया जाये, इसके लिये उन्हे खुद में कौनसी काबिलियत पैदा करनी होगी इ. बातों को जानने समझने की कोशिश ही नही करते क्योंकि अपनी परनिर्भरता की मानसिकता की वजह से यह काम उन्होने अपने नेताओं पर छोड रखा होता है।

बहुजन जनता कभी भी सामाजिक न्याय पर आधारित समतामूलक समाज व्यवस्था कायम करने के लिये या अपने पर होने वाले जुल्मों को रोकने के लिये तबतक कोई कामयाब संघर्ष नही कर सकती जबतक वह अपनी परनिर्भरता की मानसिकता को त्याग कर खुद में दृढ निश्चय और संघर्ष पर खुद नियंत्रण करने की क्षमताएं खुद में विकसित नही कर लेती। इसलिये परनिर्भरता की मानसिकता वाले लोग खुद अपनी दुर्दशा के लिये जिम्मेदार है। मेमने को शेर खायेगा यही सच्चाई है।

6. लोगों में असहायता की भावना विकसित होना :- जब लोगों को अपने दमन-शोषण और अपनी मुश्किल हालत से बचने का कोई रास्ता नजर नही आता तब सबसे पहले उनके मन में गुस्सा पैदा होता है लेकिन बाद में हताशा की भावना विकसित होती है। अंततः वे दमन-शोषण को अपनी नियती मानकर कबूल कर लेते है। इस प्रक्रिया को सेलिगमॅन नामक मनोवैज्ञानिक ने अपने प्रयोगों से साबित किया है। उन्होने कुत्तों के दो समुह बनाये। पहले समुह के कुत्तों को ऐसे बडे कमरे में रखा गया जिसका एक हिस्सा बिजली रोधक था। सेलिगमॅन ने बजर की आवाज शुरु की और उसके कुछ ही सेकंद बाद कमरे के फर्श में बिजली का प्रवाह शुरु किया। कुछ प्रयासों के बाद इन कुत्तों ने बजर की आवाज शुरु होते ही छलांग लगाकर बिजली रोधक हिस्से में जाकर बिजली के झटके से अपना बचाव करना सीख लिया। दूसरे समुह के कुत्तों को ऐसे कमरे में रखा गया जहां कोई बिजली रोधक हिस्सा नही था। इसलिये इन कुत्तों को हर हाल में बिजली का झटका सहन करना पडता था। ये कुत्ते बजर की आवाज सुनते ही रोने-चिल्लाने लगते थे और बिजली का झटका सहन करते थे। जब इन कुत्तों को बिजलीरोधक हिस्से वाले कमरे में रखा गया तो कई प्रयासों के बावजूद भी वे कुदकर बिजलीरोधक हिस्से में जाना नही सीख सके। उन्हे उस हिस्से में लाने

के लिये कई तरह से प्रेरित किया गया इसके बावजूद भी वे छलांग लगाकर उस हिस्से में नही पहुंचे। इससे यह साबित होता है कि जो लोग खुद में असहायता को विकसित कर लेते है, उन्हे बहुजन मिशन के संघर्ष में लाना लगभग नामुमकिन होता है।

7. शोषित जनता में दूरदर्शिता का अभाव :- दूरदर्शिता के लिये जरुरी है कि मौजूदा हालात का तर्कपूर्ण रुप से विश्लेषण किया जाये और हर संभावना का दूर तक विचार किया जाये। इसके बिना किसी भी कदम का भविष्य में क्या नतिजा होगा इसे जाना समझा नही जा सकता। लोगों में दूरदर्शिता का अभाव होने की मुख्य वजह उनमें परनिर्भरता की भावना पैदा होना है। ऐसे लोग अपनी हालात का तर्कपूर्ण रुपसे विश्लेषण नही कर सकते क्योंकि वे यह मानकर चलते है कि यह सब करना नेताओं का काम है, उनका काम नही है। इसलिये वे नकली नेताओं के हाथों बार बार धोखा खाने के बावजूद आरी पारी से लगातार उनके झांसे में आते रहते है क्योंकि अपनी परनिर्भरता की वजह से अपना रास्ता खुद चुनने का न ही उनमें साहस होता है और न ही ऐसी क्षमता वे खुद में विकसित करना चाहते है। इसलिये उनका अचेतन मन स्पष्ट सबूतों के बावजूद नकली नेताओं के हर वादे की व्यर्थता को जानबूझकर नजरंदाज करता है; ठिक उसी तरह जैसे लोग अप्रिय व्यक्ति की अच्छाईयों को नजरंदाज कर देते है। इसलिये वे नकली नेताओं की कथनी और करनी के फर्क को नजरंदाज कर देते है। परनिर्भरता से ग्रसित और दूरदर्शिता के अभाव से ग्रस्त लोग अपने नेता व्दारा कही हुई हर बात को सच मान लेते है और उसपर जरा भी तर्क नही करते और चंदे से नेता का खजाना लगातार भरते रहते है। ये लोग खुद में यह भ्रम विकसित कर लेते है कि उनका मिशन आगे बढ रहा है। मिसाल के लिये बहुजनों के एक सफेदपोश कर्मचारियों के संगठन का नेता पिछले कई सालों से जन आन्दोलन करने की सिर्फ बातें करते रहा है लंकिन उसने कथित जनआन्दोलन की न ही कोई रुपरेखा पेश की है और न ही उसके संगठन के लोगों ने कभी उससे इस रुपरेखा के बारे में पूछा है।

भाग 2

संक्षेप में नकली संघर्ष का स्वरुप

नकली संघर्ष वह संघर्ष, गतिविधि अथवा हालात है जिनसे लोगों का परिश्रम, पैसा और समय जाया होता है तथा कभी कभी उन्हे शारीरिक तौर पर नुकसान भी पहुंचता है। इन कामों से वे लगातार कमजोर होते है जबकि शोषक वर्ग और उसकी शोषण-व्यवस्था लगातार मजबूत होते जाती है।

बहुजनों को यह भ्रम होता है कि उनके नेताओं व्दारा किया जाने वाला कथित संघर्ष असली है। आर्य-ब्राह्मणवादी शोषक वर्ग शोषित जनता के इस भ्रम को कायम रखने

के लिये ऐसे नकली संघर्षो को भी अपने मनुमीडिया के व्दारा असली संघर्षो जैसा प्रचारित कर उससे उसी तरह से निपटते है। इससे उसके दो मकसद पूरे होते है :- 1) शोषित बहुजन जनता के मन का यह भ्रम और ज्यादा मजबूत होता है कि उनका संघर्ष वाकई सच्चा संघर्ष है तथा 2) बहुजनों पर लाठियां, गोलियां चलाकर तथा उनके खिलाफ मुकदमें दायर कर वह बहुजनों की क्रूर प्रताडना करने का आनंद लेता है।

नकली संघर्ष तथा गतिविधियों के चंद उदाहरण

1. सुनहरे भविष्य के वादे

बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जब भी किसी समस्या पर बात करते थे तो उस समस्या को कैसे हल किया जाएगा इसकी पूरी कार्ययोजना भी पेश करते थे। इसके विपरित नकली नेता सिर्फ भविष्य के वादे घोषित करते है लेकिन उन्हे किस तरह से पूरा किया जाएगा इसकी कोई कार्ययोजना प्रस्तुत नही करते। वे सिर्फ इतना ही कहते है कि ''जब हमें सत्ता मिलेगी तब हम इन समस्याओं को सुलझा देंगे''। लगातार बढती बहुजन पार्टियों की संख्या के चलते सिर्फ उन्हे ही सत्ता कैसे हासिल होगी इसकी भी वे कोई कार्ययोजना पेश नही करते।

हमने लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक पार्टीयों, किसान तथा मजदूर संगठनों, छात्र तथा युवक संगठनों की वेबसाईट पर मौजूद कार्यक्रमों को पढा है। किसी ने भी वर्तमान में समस्याओं को हल करने की कोई कार्ययोजना पेश नही की है सिर्फ भविष्य में इन समस्याओं को सुलझाने के वादे किये है।

नीचे दिये गये कार्टुन में एक व्यक्ति एक गधे पर सवार है उसने गधे की गर्दन से छड का एक सिरा तथा दूसरे सिरे पर गधे से कुछ ही दूरी पर घास बांधी है। घास भविष्य के सुनहरे वादों का तथा गधा संगठन के कॅडर का प्रतिक है। गधे पर सवार व्यक्ति संगठन का नेता है। संगठन का कॅडर सुनहरे वादों की अपेक्षा में नेता को लगातार लादता फिरता है। नेता के कमर में नोटों की थैली बंधी है जो यह दर्शाती है कि कॅडर के चंदे से तथा पर्दे के पीछे शोषक वर्ग से वोट काटने के किये गये समझौतों से नेता मालामाल हो गया है।

अपनी परनिर्भरता की मानसिकता की वजह से संगठन के कॅडर, कार्टुन के गधे की तरह ही यह नही समझ सकते कि वादे कभी पूरे नही होने वाले है तथा संघर्ष के नाम पर किये जाने वाले काम शोषितों का सशक्तिकरण कतई नही करेंगे। कार्टुन के गधे की तरह ही उनका भी परिश्रम बेकार जाने वाला है।

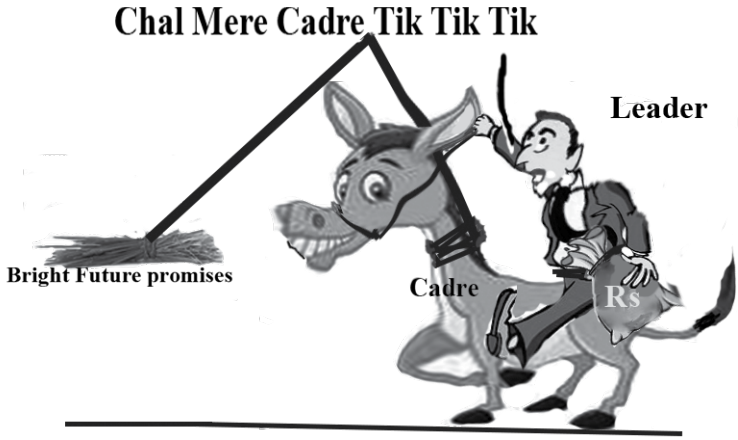

2. सशक्तिकरण के कार्यक्रमों को लागु नही करना

संगठन के सभी कार्यक्रम लोगों की समस्याओं को वर्तमान में हल होने वाले होने चाहिये जिससे शोषित अवाम सतत रुप से मजबूत होता है, साथ ही उसका संघर्ष लगातार ताकतवर बनकर वह सतत रुप से शोषकों तथा उसकी शोषण-व्यवस्था को कमजोर करता है। लेकिन नकली नेता लोगों की समस्याएं हल करते हुए उनका सतत रुप से सशक्तिकरण करने वाले कार्यक्रमों को कभी लागु नही कर सकते क्योंकि :-

1) इसके लिये उन्हे लोगों की विभिन्न समस्याओं को कैसे हल किया जा सकता है इसके लिये समस्याओं का सभी पहलुओं से अध्ययन करना होगा, समस्या हल करने की कार्ययोजना बनाकर उसे अंजाम देना होगा। यह सब करना उनके बूते से बाहर का होता है क्योंकि उन्हे सिर्फ भाषण देना आता है।

2) लोगों की समस्याओं को हल करने के लिये उन्हे मुहल्ला स्तरों पर संरचनाएं (**infrastructure**) तैयार करना होगा। ऐसा करना उनके स्वार्थो के आडे आता है क्योंकि :- अ) इससे मुहल्ला स्तरों पर अपनी समस्याएं आप हल करने वाला कार्यक्षम स्थानीय नेतृत्व विकसित होगा। तब केन्द्रिय नेताओं की उन्हे उतनी जरुरत नही होगी। नकली नेता अपने नेतृत्व का स्थानीय स्तर पर स्थानांतरण कैसे कर सकते है ? ब) विभिन्न समस्याओं को हल करने में दक्ष स्थानीय विशेष कार्यदलों के कामों में ही लगभग सारा स्थानीय फंड खर्च होगा तब केन्द्रिय नेतृत्व के लिये शायद ही कोई फंड भेजा जा सकेगा। नकली नेता अपने निजी खजाने का इतना बडा आर्थिक नुकसान भला कैसे सहन कर सकते है ? इसलिये कोई भी नकली नेता लोगों की हल होने वाली समस्याओं को हल करने के लिये स्थानीय कार्यक्षम संरंचनाएं बनाने की कभी

जोखिम मोल नही लेगा। वह कार्टुन के नेता की तरह ही लोगों को भविष्य के सुनहरे सपने दिखाकर उन्हे भ्रमित कर अपना उल्लू सिधा करते रहेगा।

3. केवल शाब्दिक सेवा (Lip Service only)

सभी नकली नेता आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा के शिकार शोषितों की सुरक्षा का कायम उपाय करने की बजाय शोषितों से केवल शादिक सहानुभुति जताते है। वे प्रेस कान्फ्रेंस आयोजित करते है, आम सभाएं करते है, मोर्चा निकालते है, तथा उच्च सरकारी अधिकारियों से मुलाकातें करते है। यह सब कुछ दिनों तक चलते रहता है। इसके बाद जमानत पर छुट कर आये हुए अत्याचारी, पीडितों को तथा गवाहों को धमकाते है। जब भी पीडित कोर्ट में पेश होते है, उनकी रोजी छीनी जाती है। कोर्ट के चक्कर काटते काटते तथा वकीलों की भारी भरकम फीस अदा करते करते पीडितों का आर्थिक रुप से दिवाला निकल जाता है। वे मानसिक रुप से निराश और हताश हो जाते है। तब उन्हे महसूस होता है कि आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा से बचने का कोई रास्ता नही है और वे इस हिंसा को अपनी नियती मानकर सारे जुल्म चुपचाप सहन करने की मानसिकता खुद में विकसित कर लेते है। इसके बाद अगर कोई उन्हे जुल्मों से बचने के लिये चाहे जितना प्रेरित करें वे संघर्ष के लिये कभी तैयार नही होते। उनकी इस दयनीय हालात के लिये खुद नकली नेता जिम्मेदार है।

4. कार्ययोजना की बजाय सिर्फ भाषणबाजी

नकली नेता शोषितों की समस्याएं हल करने की जरा भी काबिलियत नही रखते इसलिये वे सिर्फ भाषणों से लोगों को बहलाकर उनसे सतत रुप से चंदा वसूलकर मालामाल होते रहते है। वे सभाओं में, मोर्चो में, तथा बहस में सिर्फ वही रटे रटाये भाषण देते रहते है जिन्हे हम लगभग अपने बचपन से सुनते चले आ रहे है। इन भाषणों से कोई समस्या हल नही होती बल्कि शोषितों का समय, परिश्रम और पैसा जाया होता है। मिसाल के लिये अगर कोई युवक प्रेम की डायलागबाजी करने में चाहे जितना कुशल क्यों ना हो लेकिन अगर वह लैंगिक रुप से नपुंसक है तो किसी युवती के लिये उसका क्या उपयोग है ? नकली नेता भी इस युवक से कोई अलग नही है क्योंकि दोनो ही सिर्फ लुभावनी बातें करते है लेकिन दोनों ही किसी काम के नही है।

5 आत्म-सुरक्षा के उपायों का अभाव

बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा अन्य सामाजिक मुक्तियोध्दाओं के प्रयासों से दलित राजनीतिक रुप से ज्यादा सक्रिय है। इसलिये वे लगातार कोशिश करते है कि ओबीसी इ. समाज उनके साथ शोषण विरोधी संघर्ष में शामिल हो जाये।

दिगर समाजों का उनसे एक ही सवाल है कि जब आप आर्य-ब्राह्मणवादी जुल्मों से अपनी खुद की रक्षा नही कर सकते तो आप हमारी रक्षा कैसे करेंगे ? वे सौ फीसदी सही है। सिर्फ राजनीतिक सक्रियता ही सबकुछ नही है। गलत दिशा में होने वाली राजनीतिक सक्रियता के सिर्फ और सिर्फ नुकसान ही होते है। सबसे ज्यादा जरुरी है कि हम आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा को भली भाँति जाने समझे और आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा से बचने के तमाम उपायों को लागु करें। अन्य जरुरी उपायों जैसे कि अन्याय प्रतिरोधी आर्थिक फंड, वकील इ. की यंत्रणा, सामाजिक समर्थन इ. उपायों के अलावा नौजवानों का मजबूत और प्रशिक्षित आत्मरक्षा दल कायम करें। शोषितों का मौजूदा आन्दोलन पूरी तरह से नाकाम है क्योंकि उनकी ''समझदार और प्रशिक्षित'' आत्मरक्षा यंत्रणा विकसित नही की गई है। नकली नेता कभी भी मुहल्ला स्तरों पर ऐसी कारगर आत्मरक्षा यंत्रणा विकसित नही करेंगे क्योंकि :-

1) लगभग सभी नेता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से आर्य-ब्राह्मणवादियों के दलाल है। कुछ लोग सीधे सिधे आर्य-ब्राह्मणवादियों के साथ मिलकर चुनाव लडते है जबकि दूसरे चुनाव के बाद उनको समर्थन देते है। जिन नेताओं के संगठन चुनकर आने की स्थिति में नही होते वे पर्दे के पिछे से आर्य-ब्राह्मणवादियों से उनके हित में बहुजनों के वोट काटने के सौदे करते है और मालामाल होते है।

2. दलाल नेता भली भांति जानते है कि अगर वे दलितों-शोषितों के लिये कारगर आत्मसुरक्षा यंत्रणा विकसित करने की कोशिश भी करेंगे तो आर्य-ब्राह्मणवादी उनके प्रतिस्पर्धी दलाल नेता को तरजीह देंगे। इससे उनका राजनीतिक करियर ध्वस्त हो जाएगा। इसलिये नकली नेता शाब्दिक बकवास के सिवा कुछ नही कर सकते।

3. मुहल्ला स्तरों पर आत्म सुरक्षा की यंत्रणा को विकसित करने का मतलब मुहल्ला स्तर पर आत्मसुरक्षा के लिये कार्यक्षम आत्मनिर्भर संरचना का विकास होना है। तब लोगों को केन्द्रिय नेताओं की कोई खास जरुरत ही नही होगी। नकली नेता ऐसी जोखिम क्यों लेंगे ?

4. मुहल्ला स्तरों पर ऐसी कार्यक्षम आत्मनिर्भर संरचनाओं का विकास करने का मतलब आने वाले चंदे का बहुत बडा हिस्सा मुहल्ला स्तरों पर ही काम में आ जाना है। तब केन्द्रिय नेताओं के पास शायद ही कोई धन पहुंचे। अपनी निजी आय के स्त्रोत का बंद होना भला कौन नकली नेता पसंद करेगा ?

6. नकली नेता दलितों को दमित-शोषित रखना चाहते है

जब तक दलितों-शोषितों पर जुल्म होते रहेंगे तभी वे नकली नेताओं के संगठनों में अपनी सुरक्षा की झूठी आस लिये शामिल होंगे और उन्हे चंदे से मालामाल करते रहेंगे। इसलिये बिहार की रणवीर सेना इ. संगठनों से शोषक आर्य-ब्राह्मणवादियों की

कॉंग्रेस, बिजेपी के अलावा कई बहुजन संगठनों के नेताओं के संपर्क उजागर हुए है।

जो नेता शोषक और शोषितों के बीच के फर्क को झुठलाकर ''सर्व समाज'' के नारे का जाप करते है, वे सवर्ण वोटों के लालच में दलितों शोषितों के खिलाफ हिंसा करने वाले आर्य-ब्राह्मणवादियों के खिलाफ कोई भी सार्थक कदम कैसे उठा सकते है ?

7. नकली नेताओं की कोई कार्य-प्राथमिकताएं नही होती

क्योंकि नकली नेताओं का मकसद सिर्फ और सिर्फ लोगों से चंदा तथा वोट वसूलकर मालामाल होना होता है इसलिये भाषणबाजी के अलावा उनकी कोई कार्य-प्राथमिकता नही होती। क्योंकि उन्हे किसी भी मुद्दे को लेकर इमानदारी कार्य नही करना होता है इसलिये उनके भाषणों के विषय हर बार अलग अलग होते है। कई साल पहले नागपुर में सफेदपोश कर्मचारियों के एक संगठन ने भारत वापस आने पर मजबूर हुए बंगाली दलितों की समस्याओं पर भाषण ऋंखला रखी। गर्मागर्म भाषण हुए। बंगाली दलितों से भारी तादाद में चंदा वसूला गया। कथित कॉन्फ्रेंस खत्म होते ही मामला ऐसे खत्म हुआ जैसे ''रात गई बात गई''। यह है नकली नेताओं की संवेदन हीनता।

नकली नेता कोई भी कार्य-प्राथमिकताएं तय करने की बात तो छोडिये वे बहुजनों की किसी भी समस्या को हल करने के लिये कुछ भी करना नही चाहते क्योंकि उन्हे भाषण देने के सिवा कुछ भी नही आता। समस्या सुलझाने के लिये समस्याओं को जानने समझने के लिये जरुरी अध्ययन करना होता है, स्थानीय स्थितियों को जानना समझाना होता है, स्थानीय तथा उच्च स्तरों पर आवश्यक संरचनाएं बनानी होती है, आर्य-ब्राह्मणवादियों से दो दो हात तक करने पडते है। महान अय्यंकाली के संघर्ष में दलितों और सवर्णो के बीच सशस्त्र संघर्ष तथा दंगे हुए और हजारों का खून बहा। तब जाकर दलितों को अपने मानवीय अधिकार हासिल हुए। क्या नकली नेताओं में यह सब करने का साहस और काबिलियत है ? उनमें कायरता की कोई कमी नही है। लोगों को मूर्ख बनाना वे अच्छी तरह से जानते है। वे यही करते रहे है जिसमें वे खुब माहिर है।

8. शोषण-दमन को सिर्फ मौखिक रुप से बेनकाब करना

नेताओं को, बुध्दिजीवियों को, तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपने भाषणों में, लेखों में तथा टी.वी. और रेडिओ शो में जुल्म और शोषण को शाब्दिक रुप से बेनकाब करने में बडा फक्र महसूस होता है। लेकिन वे इन जुल्म और शोषण को खत्म करने की कोई भी कारगर कार्य-योजना पेश नही करते। ज्यादा से ज्यादा वे सिर्फ इतना कहते है कि शोषितों ने इन अत्याचारों और शोषण का विरोध करना चाहिये या शोषितों ने बगावत कर देनी चाहिये। ये लोग भूल जाते है कि आम जनता किसी भी संघर्ष के लिये नेताओं पर निर्भर है। तब नेताओं पर निर्भर जनता खुद अपने बल बूते पर संघर्ष

या विद्रोह कैसे कर सकती है ? इन लोगों को समाज में नायक समझा जाता है लेकिन जाने या अनजाने में वे शोषक वर्ग की ही मदद कर रहे होते है :- जब भी हम दलितों आदिवासियों पर जुल्म और हिंसा की खबरों को पढते, सुनते या देखते है तो हमारा मन क्रोधित हो उठता है। जब लगातार ऐसी घटनाएं होती है और उसके खिलाफ कोई कारगर कदम नही उठाया जाता तब हमारा गुस्सा निराशा और असहायता में बदल जाता है। मन में जबर्दस्त मानसिक तनाव पैदा होता है। इस तनाव से बचने के लिये हमारा मश्तिष्क इन घटनाओं को अपनी नियती मान कर कबूल करने की मानसिकता को विकसित करता है। इस प्रक्रिया को मनोविज्ञान में cognitive dissonance कहते है। इसी प्रक्रिया के तहत हमने कई सामाजिक दुर्गुणों को सामान्य मानकर कबूल किया है :- हम मानकर चलते है कि हर तरफ भ्रष्ट्राचार फैला है, भ्रष्ट्राचार के सिवा कोई पर्याय नही है इसलिये अपना काम निकालने के लिये हम घूस देते है। नेताओं के भ्रष्ट्राचार की इतनी खबरे पढी है कि न ही इन खबरों पर आश्चर्य होता है और न ही गुस्सा आता है, क्योंकि हमने नेताओं का भ्रष्ट्राचार सामान्य बात मान ली है। झूठे इंनकाउंटर्स, पुलिस कस्टडी में तीसरे दर्जे की यातनाएं इ. की खबरे हमने इतनी बार पढी है, इन्हे फिल्मों तथा सिरियलों में महिमामंडित होते देखा है की अब हमें ये सब सामान्य लगने लगा है। फिल्म इंडस्ट्री में जाने वाली अधिकांश लडकियां यह मानकर चलती है कि कास्टींग काउच सामान्य बात है, इससे बचना मुश्किल है।

इसलिये जब भी हम जुल्म के खिलाफ बोलते है तो हमारे लिये यह जरुरी है कि हम इन जुल्मों को रोकने की कारगर कार्य-योजना पेश करे और इस कार्य-योजना पर ईमानदारी से अमल करें। हमने इस बात को हर हाल में सुनिश्चित करना चाहिये कि आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों को हर हाल में उनके किये की सजा मिले।

9. आत्मघाति संघर्ष

अधिकांश बहुजन संगठन ''भेड-प्रवृत्ति'' के शिकार होते है इसलिये वे बिना सोचे समझे आर्य-ब्राह्मणवादी कम्युनिस्ट नेताओं व्दारा बहुजनों को नुकसान पहुंचाने के लिये किये गये संघर्ष के आत्मघाति तरिकों का अनुकरण करते है। इन संघर्षो में न सिर्फ हमारा समय, परिश्रम तथा पैसा जाया होता है, बल्कि हमें शारीरिक तौर से भी नुकसान उठाना पडता है। लंबे समय तक हम इन आत्मघाति संघर्षो की आंच को सहन करने पर मजबूर होते है। मसलन जब भी हम कोई मोर्चा निकालते है, तो पुलिस लाठीचार्ज कर हमारी हड्डियां तोड देती है। फायरिंग कर कईयों को हलाक कर देती है। घरों में घुस कर लोगों को मारती पीटती है। शोषित युवकों पर झूठे मुकदमें दायर करती है। इन मुकदमों की वजह से कई युवक सरकारी नौकरी पाने में नाकामयाब हो जाते है।

कोर्ट में मुकदमें लंबे समय तक चलते रहते है।

आर्य-ब्राह्मण नेता तथा मोर्चे में घुसपैठ किये हुए उनके एजन्ट बसों, रेलों इ. को नुकसान पहुंचाते है। अंततः इस नुकसान की भरपाई लोगों पर टॅक्स लगाकर की जाती है। नई बसें खरीदने तथा दूरुस्ती इ. के ठेके देकर आर्य-ब्राह्मणवादी नेता तथा ठेकेदार दोनों ही मालामाल होते है।

पीडितों को कई महिनों से ऋंखलाबध्द भूख हडताल करते हुए देखा गया है। इनका कोई परिणाम नही निकला है। उल्टे शांतिपूर्ण तरीके से भूख हडताल कर रहे लोगों पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर उन्हे खदेड देने के उदाहरण है। कईयों ने भूख हडताल में अपने प्राण तक त्याग दिये है।

कई नेता ''जेल भरों'' आन्दोलन करते है। इसका कोई नतिजा नही निकलता क्योंकि पुलिस उनके खिलाफ केस दायर कर उन्हे अक्सर दूर निर्जन जगह छोड देती है। लोगों को पैदल वापस आना पडता है। अमेरिका में जेलों को पूंजीपतियों के कारखानों के कामों से जोडा गया है। कैदियों को नाम मात्र की रोजी पर इन कामों में लगाया जाता है। पूंजीपतियों तथा सत्ताधारी नेताओं का फायदा होता है, कैदियों का नही। भारत में भी यही कुछ हो सकता है।

हम पानी के लिये मोर्चा निकालते है और अपने ही मटके फोडते है, अपना ही दूध रोड पर बहा देते है, अपनी फसल जला देते है, अपने प्याज टमाटर फेंक देते है। इससे शोषकों का क्या नुकसान हुआ ? अगर आपको ये चिजे नही चाहिये थी तो अपने किसी गरीब भाईयों को दान में दे देते, कम से कम जनता से तो दोस्ती होती।

ऐसे आत्मघाति संघर्ष की बजाय हमने अपनी अपनी बस्ती मुहल्ले के समाज भवन, बौध्द विहार या मैदान में बिना लाउड स्पीकर के नागरिकों की बैठक बुलाकर तय करना चाहिये कि :- 1) हमने सभी मनुवादी अखबारों तथा पत्र-पत्रिकाओं को हमेशा के लिये त्याग देना है। 2) तमाम टी.वी प्रसारण कंपनियों के डीश टी.वी. को हमेशा के लिये त्याग देना है। 3) सभी मनुवादी कंपनियों के गैर-जीवनावश्यक उत्पादों को हमेशा के लिये त्याग देना है। 4) अत्याचार से संबंधित सभी राजनीतिक लोगों तथा उनकी पार्टियों को चुनाव में परास्त करना है इ०।

बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, पेरियार इ. की प्रतिमाओं को अपमानित कर बडी ही आसानी से बहुजनों को आत्मघाति आन्दोलनों के लिये उकसाया जाता है और बहुजनों के बीच संघर्ष पैदा किया जाता है। इससे सिर्फ आर्य-ब्राह्मणवादियों को फायदा पहुंचता है। सही तरिका यह है कि सभी जातियों के समझदार लोगों की मदद से प्रतिमा को साफ किया जाये, उसका और भी ज्यादा सौंदर्यिकरण किया जाये, तथा आर्य-ब्राह्मणवादी शोषण के प्रति सभी बहुजनों को जागरुक किया जाये।

10. नकली नेताओं के सम्मेलन

कई बहुजन संगठन हर साल राष्ट्रीय स्तर पर विशाल संम्मेलन आयोजित करते है। इन सम्मेलनों में हजारों लोगों का समय, परिश्रम, आने-जाने तथा अन्य खर्चे को जोड दिया जाये तो यह रकम कई करोडों में जाएगी। इन संम्मेलनों में भाषणबाजी के सिवा कुछ नही होता। ऐसे भाषणों से आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों का बाल तक टेढा नही होता और न ही शोषित बहुजनों का सशक्तिकरण होता है। यह जरुर होता है कि इन संम्मेलनों की भारी भीड में सबको ताकतवर होने का तात्कालीन अहसास होता है। ऐसी तात्कालीन ताकत का क्या फायदा ? रोज रात को कुत्ते इकट्ठा होकर खुद को ताकतवर अनुभव करते है और आने जाने वालों पर भौंकते है। लेकिन सबेरा होते ही वे फिर से लाचार बन जाते है, कोई भी उन्हे लाठी पत्थरों से मार भगा देता है।

जितना पैसा इन संम्मेलनों में खर्च होता है, उतने पैसे ब्राह्मणवादी हिंसा के शिकार शोषितों के सशक्तिकरण पर खर्च किये जा सकते थे। हरियाणा के मिर्चपूर, गोहाना इ. जगहों से लोगों को आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा के चलते पलायन कर दिल्ली जैसे शहरों में कई सालों से रहना पड रहा है। वे अपने गांव वापस नही जा सकते। गांव का कोई भी व्यक्ति उनसे बात तक नही कर सकता वर्ना उसे पंचायत को कई हजार का जुर्माना अदा करना पडता है। जब ऐसे सैंकडों उदाहरण मौजूद है तब हम पीडितों पर एक नया पैसा खर्च किये बिना इन कॉन्फ्रेंसों में पैसे जाया करने की ऐय्याशी कैसे कर सकते है ? यह ''बहुजन कॅडरों के बौध्दिक दिवालियेपन'' की इन्तेहा है।

ऐसे संम्मेलनों को आयोजित करने का नेताओं का मकसद ब्राह्मणवादी शोषकों को अपनी ताकत दिखाना होता है ताकि पर्दे के पिछे चुनाव में वोट काटने के लिये सौदेबाजी की जा सके। शोषकों से इस बात का भी सौदा किया जाता है कि नकली नेताओं व्दारा भ्रमित किये गये संगठन के शोषितों को सच्चे संघर्ष से हमेशा दूर रखा जाएगा। इन कॉन्फेसों में गर्मागर्म भाषणबाजी से यह आभास दिया जाता है कि बहुजनों का मिशन आगे बढ रहा है ताकि बहुजन आसानी से अपनी जेबें खाली कर सके।

11. लादा गया आर्य-ब्राह्मणवादी नेतृत्व

समय समय पर आर्य-ब्राह्मणवादी शोषक सरकारें अपने आर्य-ब्राह्मणवादी उद्योगपतियों तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारी फायदा पहुंचाने के लिये आदिवासियों को तथा किसानों को उनके जल, जंगल और जमीन से जबरन विस्थापित करती है। अपने बचाव में आदिवासी तथा किसान जुल्म के खिलाफ अपना संघर्ष छेड देते है। ठिक ऐसे वक्त पर मेधा पाटकर इ. आर्य-ब्राह्मणवादी नेता आकर नेतृत्व पर काबिज हो जाते है इन नेताओं की प्रसिध्दी तथा खुद के मन की हीनता की भावना की वजह से बहुजन अक्सर ही इन ब्राह्मणवादियों के हाथों में संघर्ष की कमान सौंप देते है। वे उनके संघर्ष

को गलत दिशा देकर, बेहद लंबा खिंचकर उसे विफल बना देते है। जिस भी संघर्ष का नेतृत्व आर्य-ब्राह्मणवादियों के हाथों में होगा वह संघर्ष यकीनी तौर पर असफल होगा। कई आर्य-ब्राह्मण बुध्दिजीवी सहानुभूति जताते हुए ऐसे संघर्ष में शामिल होते है और अपने शोषक आर्य-ब्राह्मणवादियों के लिये मुखबिरी का काम करते है। इसलिये हर संघर्ष की कमान हमेशा पीडित बहुजनों के हाथों में ही होनी चाहिये।

12. सुधारवादी आन्दोलन

शोषकों की शोषण-व्यवस्था का मकसद बहुजन जनता को लाचार और कमजोर बनाना होता है इसलिये उसमें किसी भी सुधार की कोई गुंजाईश ही नही होती। इसके बावजूद नकली नेता तथा तरह तरह के NGOs समय समय पर सुधारवादी आन्दोलनों से लोगों को भ्रमित करने तथा उन्हे सच्चे संघर्ष से दूर करने की कोशिश करते है। अन्ना हजारे के कथित जनलोकपाल को जनता के उध्दारक के रुप में प्रचारित किया गया। उस जन लोकपाल कानून का लोगों को क्या फायदा हुआ है ?

हम कैसे भूल सकते है कि संविधान में कई कारगर प्रावधान मौजुद होने के बावजूद उन प्रावधानों पर क्या कभी ईमानदारी से अमल हुआ है ? इन प्रावधानों को हमेशा ही नजरंदाज किया गया। आदिवासियों के स्वायत्त शासन की व्यवस्था पर क्या कभी अमल किया गया ? आर्य-ब्राह्मण न्यायाधीश अपने आर्य-ब्राह्मणों को जज बनाते है। ऐसी घटीया चयन पध्दति क्यों जारी रखी गई है ? आर्य-ब्राह्मणवादी अपराधियों के खिलाफ कभी भी सख्त कानूनों का इस्तेमाल नही किया जाता जबकि बहुजनों के खिलाफ झूठे मुकदमें दायर कर उन्हे जबरन जेलों में ठूंसा जाता है। कानून को कब सख्ती से लागु करना है और कब लागु नही करना है यह व्यक्ति की जाति को देखकर तय किया जाता है।

13. अनुत्पादक सामाजिक समारोह

14 अप्रैल इ. समारोहों के लिये दलित-शोषितों से चंदा इकट्ठा करने के लिये कोई विशेष कौशल्य की आवश्यकता नही होती। इन समारोहों में भाषणबाजी, मनोरंजन कार्यक्रम, भोजनदान, रोशनाई इ. कार्यक्रम आयोजित किये जाते है जिसमें भारी तादाद में पैसा खर्च किया जाता है। इन सारे तामझाम का ब्राह्मणवादी हिंसा से पीडित दलितों को क्या उपयोग है ? क्या हम ये समारोह सादगी से मनाकर बाकी का पैसा दलितों-शोषितों पर होने वाले जुल्मों के प्रतिकार तथा सशक्तिकरण यंत्रणा के विकास में नही लगा सकते ?

14. पूजारी और उनके कर्मकांड

बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के मुताबिक पूजारी वह शैतानी दिमाग है

जो अवाम की तार्किक सोच (सम्मा दिती) को खत्म कर देता है। पूजारी धर्म को अंध ाविश्वासी कर्मकांडों तथा खर्चिली प्रथापरंपराओं में तब्दिल कर मालामाल होते है तथा शोषण-व्यवस्था फलती फूलती है। दूसरी ओर बहुजन अवाम तार्किक रुप से दिवालिया तथा आर्थिक रुप से कमजोर हो जाता है। होली, दिवाली जैसे त्योहार ब्राह्मण-धर्म के अंधविश्वासों में ग्रसित बहुजनों पर भारी आर्थिक बोझ डालते है। कई लोगों को अपनी शान निभाने के लिये साहूकारों से या सरकार से कर्जा लेना पडता है।

कई लोग अपने बच्चों की धूमधाम से शादी करने के लिये साहूकारों से भारी व्याज पर कर्जा लेते है, खेत, जेवर इ. जो कुछ भी गिरवी रखा जाता है वह शायद ही छुडाया जाता है। कई लोग दहेज की वजह से अपनी जान तक दे देते है। इन सभी दुष्परिण ामों के बावजूद कभी किसी भी बहुजन नेताओं को पूजारियों के अंधविश्वासों तथा इन प्रथा परंपराओं के खिलाफ आन्दोलन छेडते नही देखा गया। क्योंकि ये बहुजन नेता अपने अंधविश्वासी कॅडरों को नाराज कर चंदे तथा वोटों के रुप में मिलने वाले लाभ को भला कैसे खो सकते है ? पूजारियों को अपने अंधविश्वासी जजमानों के घर के सारे सदस्यों की जानकारी होती है। उनकी कमजोरियां और राज तक उन्हे मालूम होते है। पूजारी एक तरह से आपके घर में आने जाने वाले एक जासूस की हैसियत रखता है। अपने फायदे के लिये वह इस जानकारियों का गलत इस्तेमाल कर सकता है।

15. बेकार के मुद्दों में उलझना

हमारे हर काम से शोषित बहुजनों का सतत रुप से सशक्तिकरण होना चाहिये जबकि शोषक तथा उसकी शोषण व्यवस्था सतत रुप से कमजोर होनी चाहिये। जिन कामों में हमारा समय, परिश्रम तथा पैसा व्यर्थ में खर्च होता है तथा सशक्तिकरण की बजाय हमें सतत नुकसान पहुंचता है वे मृद्दे व्यर्थ के मुद्दे है। आर्य-ब्राह्मणवादी तथा उसके एजेन्ट शोषितों को इन्ही व्यर्थ के मुद्दों में उलझाकर कमजोर बनाना चाहते है। उदाहरण के लिये कुछ बुध्दिजीवी अनावश्यक विवाद पैदा करते है कि 1) हम अनुसुचित जनजाति को आदिवासी या मूलनिवासी न कहे। 2) विपस्यना ठिक है या गलत इ.। इन विवादों में पडने का बहुजनों के सशक्तिकरण में क्या कोई फायदा है ? आदिवासियों को अगर आप चाहे जो कह ले क्या उससे उनका शोषण-दमन रुकने वाला है ? अगर विपस्यना से लोग संघर्ष के लिये नाकारा हो जाते है तो उनके पिछे अपनी ताकत बर्बाद करने की बजाय हम अपनी ताकत को शोषकों के खिलाफ संघर्ष करने में क्यों ना लगाये ? शोषकों के एजन्ट आपको इस बात के लिये उकसाते है कि सेना तथा अर्धसैनिक बलों में होने वाले ब्राह्मणवादी कर्मकांडों के खिलाफ संघर्ष किया जाये। या आधार (UID) प्रणाली के खिलाफ संघर्ष किया जाये। क्या ये मुद्दे हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है ? इनके खिलाफ किये जाने वाले संघर्ष से नुकसान के

सिवा क्या मिल सकता है ? तब हम ऐसे संघर्षो से खुद को क्यों कमजोर करे ? कुछ नकली नेता ''खुप लढलो बेकी ने आता लढू या एकी ने'' (बहुत लडे है विभाजित रहकर आओ लडे अब एकता से) जैसे नारों से दलाल नेताओं को एक करने की बातें करते है। ब्राह्मणवादियों की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से दलाली करने वाले स्वार्थी नेता एक क्यों होंगे ? अगर ये एक हो भी गये तो समाज से धोखेबाजी के सिवा क्या करेंगे ? इन दलालों को एक करने में अपनी ताकत खर्च करने की बजाय समाज की समस्याओं को हल करने में अपनी ताकत खर्च करना चाहिये। ये नेता शोषितों की समस्याओं को सुलझाने के लिये खुद कुछ नही करना चाहते है और लोगों को व्यर्थ के मुद्दों में उलझाकर लोगों को भी कुछ नही करने देना चाहते है। इसलिये ये शोषक आर्य-ब्राह्मणवादियों के दलाल मात्र है। हमने अपनी ताकत सिर्फ और सिर्फ उन मुद्दों पर खर्च करनी है जिससे सीधे तौर पर शोषितों की समस्याएं सुलझाती है और उनका सतत रुप से सशक्तिकरण होता है।

16. आर्य-ब्राह्मण प्रतिक-पुरुषों के प्रशंसक

बहुजनों ने उन सभी बुध्दिजीवियों, पत्रकारों, टी.वी. एंकरों, नेताओं इ. लोगों के प्रति बहुत सतर्क रहना चाहिये जो खुद को प्रगतिशिल तथा बहुजनों के हितचिंतक दिखाते हुए आर्य-ब्राह्मणवदियों के प्रतिक-पुरुष गांधी, नेहरु इ. दलितों-शोषितों के हकों के दुश्मनों की तारीफ करते है। वे अपनी प्रगतिशिलता की साख का इस्तेमाल करते हुए ब्राह्मणवादी जहर को धीरे धीरे बहुजनों में दिमागों में प्रवाहित करना चाहते है। वे अपनी झूठी दलिलों से इन आर्य-ब्राह्मणवादियों को बेहतर रुप में पेश कर हम पर थोंपना चाहते है। हम इस बात को कैसे भूल सकते है कि गांधी ने पूना पॅक्ट के माध्यम से दलितों को दिये गये स्वतंत्र मतदार संघ के अधिकार को छीनकर उन्हे उनके सच्चे प्रतिनिधियों से वंचित करने का काम किया है। गांधी की वजह से ही दलितों में चमचा युग की शुरुवात हुई है। नेहरु इ. ब्राह्मणवादियों के ओबीसी आरक्षण में लगातार अडंगे डाले जिसकी वजह से बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। नेहरु ने ओबीसी आरक्षण से हमेशा धोखेबाजी की है। इसलिये ऐसे लोग या तो अज्ञानी है या फिर बडे मक्कार और चालबाज है। ऐसे लोगों से सावधान रहे।

इन दिनों कुछ आर्य-ब्राह्मणवादी कथित कम्युनिस्ट छात्र नेता ''हमे चाहिये आजादी, अम्बेडकर वाली आजादी, गांधी वाली आजादी'' इ. भजन ढपली पर गा रहे है। वे दलितों के हितों के दुश्मन गांधी को तथा दलितों के मुक्तियोध्दा बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को एक ही पाले में रख रहे है। ये नेता अपने भाषणों में राम की तारीफ करते है, जबकि मूलनिवासियों के आराध्य देवता रावण को खलपुरुष दर्शाते है। ब्राह्मण प्रतिक-पुरुष तुलसिदास, कालीदास इ. की तारिफ करते है, जिन्होने जाति

व्यवस्था का समर्थन करते हुए ''शुद्र, गंवार, पशु, नारी सबहु ताडन के अधिकारी'' जैसे ब्राह्मणवादी-मनुवावादी विचारों को प्रचारित किया है। हमें उन दलित, बहुजनों के बौध्दिक दिवालियेपन पर हैरानी होती है जिनके कानों में बाबासाहब का गौरवगान पडते ही वे ब्राह्मणवादी-जहर की ओर से अपनी आंखें मूंद लेते है। इनमें से किसी ने भी इन नकली छात्र नेताओं से यह नही कहा कि आपको अम्बेडकर चाहिये तो आप अपने गांधी, राम, तुलसिदास, कालिदास इ. आर्य-ब्राह्मणवादी प्रतिक-पुरुषों को अपने घर में ही छोडकर आओ, हमने उन्हे कब का नकार दिया है। अगर आप बाबासाहब के नाम का भजन कीर्तन नही भी करेंगे तो हमें कोई फर्क नही पडने वाला।

याद रखिये कि इन नकली आर्य-ब्राह्मणवादी कम्युनिस्ट छात्र संगठनों ने रोहित वेमुला का कभी साथ नही दिया जब राहित वेमुला दलितों के खिलाफ पक्षपात का विरोध कर रहे थे। रोहित वेमुला को मजबूरन कम्युनिस्टों के छात्र संगठन से इस्तीफा देना पडा था और दलित-बहुजन छात्रों का अपना खुद का संगठन खडा करना पडा था। इससे ब्राह्मणवादी कम्युनिस्ट छात्र संगठन बेनकाब होने लगे थे। रोहित बेमुला आर्य-ब्राह्मणवादी वर्चस्व को कडी चुनौति देने लगे थे इसलिये रोहित वेमुला को आत्महत्या करने पर मजबूर किया गया। इसके बाद कम्युनिस्ट छात्र संगठनों ने रोहित वेमुला को न्याय के देने के नाम पर नकली आन्दोलन किया ताकि दलितों में इनकी सियासत चमक सके। क्या रोहित वेमुला को कभी न्याय मिला ? कम्युनिस्ट छात्र संगठनों को अपनी सियासत चमकाने के लिये सिर्फ मरा रोहित वेमुला चाहिये, वे जिंदा रोहित वेमुला से नफरत करते है क्योंकि जिंदा रोहित वेमुला उनके ढोंग पाखंड को बेनकाब करता है। दलितों के लिये नारेबाजी और भजन-कीर्तन के सिवा इनके पास कुछ भी नही है। जे.एन.यु. में दलित ओबीसी बहुजन छात्रों को लिखित परीक्षा में बहुत अच्छे नंबर हासिल होते है लेकिन उन्हे मौखिक परीक्षा में सबसे कम नंबर कैसे दिये जाते है इस बात पर क्या कभी इन्होने आन्दोलन किया है ? क्या उन्होने कभी जे.एन.यु. में बहुजनों के आरक्षण को पूरा करने के लिये सार्थक रुप से आवाज उठाई है ? हमने इनसे मांग करनी चाहिये कि वे अपने कम्युनिस्ट नेताओं का खुलेआम विरोध करें क्योंकि उनके विरोध की वजह से ही महिला आरक्षण में दलित, ओबीसी, आदिवासी तथा अल्पसंख्यंक महिलाओं का कोटा निश्चित नही हो सका है।

हमने उनसे स्पष्ट रुप से कहना चाहिये कि वे ढपली पर मनुवाद के खिलाफ भजन-कीर्तन करने की बजाय मनुवाद के खिलाफ कोई सार्थक कदम उठाये। हमने इनसे मांग करनी चाहिये कि वे हिंदु मंदिरों में जमा असीम संपदा को आत्महत्या करने वाले हिन्दू किसानों के तथा सांप्रदायिक दंगों में मरे हिन्दूओं के परिवारों में वितरित करने के लिये आन्दोलन करें। हमने मांग करनी चाहिये कि वे मंदिरों में देवदासी प्रथा को समाप्त करने के लिये आन्दोलन करें। किसानों की आर्थिक मदद करने के लिये

मंदिरों के बाहर चंदे की पेटियां रखे और ऋध्दालूओं को भगवान के नाम पर किसानों को चंदा देने की अपील करे। क्या ये ऐसा कर सकते है ? उन्हे कहिये कि वे यह सब करें वर्ना दलितों में खुद की सियासत को चमकाने के लिये मनुवाद के खिलाफ भजन-कीर्तन के ढोंग को बंद करें।

बहुजन पार्टी-संगठनों का भविष्य

हम कभी यह अपेक्षा नही करते कि मछलियाँ हवा में उडेगी या पक्षी पानी के भीतर तैरेंगे क्योंकि यह उनकी क्षमता के बाहर की बातें है। उसी तरह अगर हम सभी संगठनों तथा उनके नेताओं की सीमाओं को जान समझ लें तो उनसे हमें क्या अपेक्षाएं करनी चाहिये और क्या नही करनी चाहिये यह स्पष्ट हो जाएगा।

ब्राह्मणवादी इंदिरा गांधी का अनुकरण करते हुए लगभग सभी पाटियों के नेताओं ने अपने अपने संगठनों पर अपना पूरा एकाधिकार कायम करना शुरु किया, तबसे संगठनों का आंतरिक लोकतंत्र खत्म हो गया और ''हाय-कमांड'' तथा उत्तराधिकारी नियुक्त करने वाली संस्कृति का प्रचलन शुरु हुआ। नेताओं ने अपनी सर्वोच्चता को सुरक्षित करने के लिये अपने इर्दगीर्द ''येस-मेन'' नेताओं को प्राथमिकता दी। कुछ नेताओं ने आर्य-ब्राह्मणों की मदद से पार्टी में अपने एकाधिकार को पुख्ता करने के लिये ''सर्व समाज'' का नारा भी जपना शुरु किया। इन नेताओं ने अपने अलावा किसी को जन नेता बनने नही दिया। इसलिये उन संगठनों के नेताओं के प्रांत को छोडकर बाकी के प्रांतों में उनके पार्टी-संगठनों का विकास नही हो सका। इन संगठनों के पास बहुजनों के सतत सशक्तिकरण के लिये कोई कार्यक्रम ही नही है। ये सभी चुनावी संगठन ''सत्ता मिलने पर बहुजनों का भला करेंगे'' यही इकलौती दलील देते है।

इनके खुद के प्रांतों में भी जो जन नेता थे जिन्हे बाहर का रास्ता दिखाया गया था उन्होने अपने अपने संगठन खडे कर लिये। इतने सारे बहुजनों के चुनावी संगठन हो चुके है, और हर रोज नये नये चुनावी संगठन पैदा हो रहे है, ऐसे में बहुजनों का कोई भी संगठन अपने बलबूते पर सत्ता में नही आ सकता। जिस तरह बिजेपी नही आनी चाहिये इसलिये कांग्रेस को वोट दिये जाते है उसी तरह जहां जो ताकतवर है वहां उसे जनता के रोष का फायदा मिल सकता है।

बहुजन संगठनों से निराश हो रहे बहुजनों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये तथा अपने संगठनों के बहुजनों को अपने पास टिकाकर रखने के लिये अब कांग्रेस, कम्युनिस्ट तथा बिजेपी इ. आर्य-ब्राह्मणवादी संगठनों ने दलितों के नाम पर अपने फ्रंट संगठन बनाकर खुद को दलित-बहुजनों के हमदर्द जता रहे है। कम्युनिसट पार्टी

ने दलित शोषण मुक्ति मोर्चा बनाकर दिल्ली में जंतरमंतर तक मार्च भी किया है। महिला आरक्षण में ओबिसी, दलित, आादिवासी तथा अल्पसंख्यंक महिलाओं का कोटा सुनिश्चित करने का सख्त विरोध करने वाले ये सब ब्राह्मणवादी संगठन भाषणबाजी, मोर्चे इ. नकली संघर्षो से परनिर्भरता की मानसिकता से ग्रसित दलित-बहुजनों को भ्रमित कर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकना चाहते है। इसलिये बहुजनों के संगठनों का सत्ता में आना लगभग नामुमकिन हो चला है। उनके खुद के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। इसलिये कुछ इक्के दुक्के राज्यों में इक्के दुक्के बहुजनों के संगठन मसलन बसपा तथा सपा चुनावी गठबंधन के लिये राजी हो गए है। ब्राह्मणवाद के खिलाफ दो-टूक नीति नही होने से यह भूलकर कि बिजेपी और कांग्रेस नागनाथ और सांपनाथ है, बिजेपी को हराने के नाम पर वे कांग्रेस की हिमायत करते दिखाई देते है। ब्राह्मणवाद खिलाफ सभी एकजूट हुए बिना ये बहुजन संगठन केन्द्र में सत्ता कैसे हासिल कर सकते है ?

बहुजन संगठनों को सत्ता से दूर रखने का इन्तेजाम कर लिया गया है। जब बहुजनों के संगठन विभिन्न राज्यों में सत्ता में आने लगे तब ब्राह्मणवादी कांग्रेस ने बहुजनों को सत्ता में आने से रोकने के लिये EVM मशीनों का प्रचलन शुरु किया। इन इलेक्ट्रानिक मशीनों को अपने हिसाब से प्रोग्रॅम कर किसी भी पार्टी को जिताया या हराया जा सकता है। दिल्ली विधानसभा में इन मशीनों को नियंत्रित कर विशेष उम्मीदवार को कैसे जिताया जा सकता है इसका खुला प्रदर्शन किया जा चुका है। EVM में लगातार गडबडियों की शिकायतों के बावजूद चुनाव आयोग EVM से ही चुनाव कराने पर आमादा है क्योंकि सरकार पर काबिज आर्य-ब्राह्मणवादियों ने नौकरशाही, इलेक्शन कमीशन, न्यायपालिका, पुलिस, सीबीआय, इ. सभी संस्थाओं को अपने पूर्ण नियंत्रण में लाया हुआ है। इसलिये चुनाव आयोग ने सुप्रिम कोर्ट के आदेश के विपरित जाकर गिने चुने जगहों में ही वी.वी. पॅड लगाये। यह सुप्रिम कोर्ट की अवमानना होने के बावजूद सुप्रिम कोर्ट ने चुनाव आयोग के खिलाफ कोई कर्रवाई नही की। आर्य-ब्राह्मणवादी संगठन मिलकर **EVM** से इलेक्शन लेना जारी रखेंगे और एक-दूसरे को आरी पारी से जिताते रहेंगे। न कभी बिजेपी ने काँग्रेस के और न कभी काँग्रेस ने बिजेपी के भ्रष्ट्राचार के आरोपित नेताओं को कभी जेल भेजा है। दोनों ने एक-दूसरे की नीतियों तथा फैसलों को बरकरार रखा है। नागनाथ और सांपनाथ बारी बारी से पांच साल निगलते है और पांच साल तक निगला हुआ पचाते रहते है। इसलिये उनका विरोध दिखावा मात्र है। क्या आपको याद नही कि बिजेपी का नेता लालकृष्ण अडवाणी बहुजन पार्टियों के सत्ता में आने की संभावना से इतना आतंकित था कि वह चुनाव में लगभग हर सभा में प्रचार करता था कि अगर आपको बिजेपी अच्छी नही लगती तो काँग्रेस को वोट करिये लेकिन क्षेत्रीय बहुजनों की पार्टियों को हबल्कुल वोट मत दिजिये।

इसलिये अगर आप इस भरोसे है कि बहुजनों के संगठन सत्ता पर आने के बाद आपका कुछ भला होगा तो आप इसे भूल ही जाये तो बेहतर है।

भारत का संविधान अब अर्थहीन हो चुका है क्योंकि उसपर बिल्कूल अमल नही किया जाता। कुछ ही समय बाद पूरे प्रजातंत्र को लपेटकर भारत को हिंदूराष्ट्र घोषित किया जाएगा और मनुस्मृति की व्यवस्था लागु की जाएगी।

बहुजनों के कुछ संगठन सफेदपोश कर्मचारियों के संगठन है। उनसे भी कोई उम्मीद नही की जा सकती क्योंकि कर्मचारी सेवा नियमों के अंतर्गत बंधे होने की वजह से ये एक सीमा से बाहर जाकर जोर से नारा तक नही लगा सकते। बहुजन संगठनों को दलित-शोषित जनता की समस्याओं को हल करने में अपनी पार्टी के सारे साधन संसाधन झोंक देने में कोई रुची नही है इसलिये लोगों को अपनी समस्याएं सुलझाने के लिये इन संगठनों से कोई अपेक्षा नही रखनी चाहिये। अगर ये कुछ भी काम के होते तो गोहाना, मिर्चपूर इ. जगहों के दलितों को पलायन कर इतने सालों से दिल्ली में बसने की जरुरत ही नही पडती।

उपरोक्त सभी बातों पर चिंतन मनन करने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि बहुजन अवाम न ही चुनावी संगठनों पर निर्भर रह सकता है और न ही सफेदपोश कर्मचारियों के संगठनों पर। बहुजन समाज को अपने खुद के बलबूते पर ''असली संघर्ष'' को अंजाम देना होगा।

भाग 3

असली संघर्ष की संक्षिप्त रुपरेखा

सामाजिक न्याय के लिये असली संघर्ष वह संघर्ष है जिससे कम से कम प्रयासों तथा संसाधनों में, शोषित जनता का सतत रुप से सशक्तिकरण होता है तथा आर्य-ब्राह्मण वादी शोषक तथा उनकी शोषण-व्यवस्था निरंतर रुप से कमजोर होती जाती है। सामाजिक न्याय के सच्चे संघर्ष को :- 1) व्यक्तिगत सशक्तिकरण, 2) पारिवारिक सशक्तिकरण तथा 3) सामाजिक सशक्तिकरण इन तीन स्तरों पर किया जा सकता है। पहले दो स्तरों के संघर्ष बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि वे सामाजिक संघर्ष की मजबूत बुनियाद को कायम करते है। व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सशक्तिकरण के संघर्ष शोषकों तथा उनके एजन्टों के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त है।

31
व्यक्तिगत सशक्तिकरण

1. स्वास्थ्य-वर्धक आदतें

हर व्यक्ति की सबसे बडी प्राथमिकता अपने शरीर को स्वस्थ्य रखना होनी चाहिये। शोषक आपको शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक रुप से कमजोर बनाकर रखना चाहते है। आपको रक्तचाप, मधुमेह, कॅन्सर, इ. बीमारियों से ग्रसित रखकर ही वैद्यकीय तथा दवा उद्योगों का मुनाफा लगातार जारी रह सकता है। इसलिये इन बीमारियों के कायम इलाज की कोशिशों का इन्होने न सिर्फ कडा प्रतिरोध किया है बल्कि पर्यायी चिकित्सा पध्दतियों को बदनाम किया है। उनके शोधकर्ताओं का कत्ल तक किया है क्योंकि उन्होने इन बीमारियों के कायम तौर से इलाज को खोजने का दावा किया था। खुद को स्वस्थ्य रखकर न सिर्फ आप इन शोषकों को आर्थिक रुप से लाभ पहुंचाना बंद कर देते है, बल्कि खुद की आर्थिक स्थिति को मजबूत करते है।

स्वास्थ्य वर्धक जीवनशैली पर अच्छा स्वास्थ्य निर्भर करता है :-

अ) विषैले तत्वों (**toxins**) तथा हानिकारक पदार्थो से बचना :- ऐसे तत्व हमारे घरेलु इस्तेमाल की कई चीजों में पाये जा सकते है। जैसे कि साबुन, हॅन्ड वाश, फर्श को साफ करने वाले द्रव पदार्थ, मच्छर भगाने वाले द्रव पदार्थ, कीटाणु नाशक पदार्थ इ. अनेक चीजों में हानिकारक रसायन होते है। प्लास्टीक की वस्तूओं में बी. पी.ए. नामक खतरनाक तत्व होता है। घातक तत्वों वाले घरेलु सामानों की सूची काफी लंबी है। इंटरनेट पर आपको इसकी पर्याप्त जानकारी मिल जाएगी। आप इन चीजों की जगह देसी स्वास्थ्यवर्धक वस्तूओं का उपयोग कर अपने पैसे तथा स्वास्थ्य दोनों को बचा सकते है। ऐसा करके आप शोषकों को अमिर बनाना बंद कर देंगे।

ब) विषैले (**toxic**) अन्न से बचिये :- हानिकारक अन्न में जेनेटिकली मॉडीफाईड ऑरगॅनिजम (GMO) वाले वनस्पति तथा प्राणियों का समावेश होता है। जी.एम.ओ. वाले अनाज, सब्जियां, बिजे, फल, अंडे, प्राणी तथा पक्षी तक विकसित किये गए है। हमने उनका अन्न के रुप में उपयोग नही करना चाहिये। हमने देसी अनाज, सब्जियों, फलों इ. का उपयोग करना चाहिये जिनकी पैदावार बिना कीटनाशकों के छीडकाव से की गई है। प्राणियों को ग्रोथ हार्मोन्स इ. न दिये गये हो। ऐसे खतरनाक इंजेक्शन प्राणियों को लगाकर कृत्रिम रुप से उनका दूध बढाया जाता है। खतरनाक हार्मोन इंजेक्शन लगाकर मुर्गियों को सतत रुप से अंडे देने वाली मशिन में तब्दिल किया जाता है। ऐसे अंडों, दुध, प्राणियों के मांस तथा ऐसी सब्जियों से ये खतरनाक तत्व हमारे शरीर में प्रवेश कर हमें बीमार बनाते है।

उसी प्रकार हमने सभी रासायनिक प्रक्रिया किये जंक फुड, डालडा इ. ट्रांस-फॅट,

रिफाइन्ड तेल, कॉफी, सभी साफ्ट ड्रिंक्स के इस्तेमाल को बंद कर देना चाहिये। ये न सिर्फ शरीर के लिये हानिकारक है बल्कि वे आपको इसके आदी भी बनाते है।

क) स्वास्थ्यवर्धक अन्न का सेवन करें :- स्वास्थ्यवर्धक अन्न वह अन्न है जो हल्का अल्कलाईन (pH level of 7-8) होता है। इनमें हरी सब्जियों का मुख्य रुप से समावेश होता है। एसिड पैदा करने वाले पदार्थ कम मात्रा में खाये जाये क्योंकि आपके शरीर में ॲसिड की मात्रा बढने से तरह तरह की बीमारियाँ विकसित होती है।

ड) उचित व्यायाम और आराम करें :- सबेरे रोज कम से कम 30 मिनट व्यायाम करें। सही तरीके से व्यायाम करने का नियम यह है कि आप की सांस नही फुलनी चाहिये तथा व्यायाम से उल्हास प्राप्त होना चाहिये न कि मानसिक तनाव। अति व्यायाम से शरीर में अंदरुनी जख्म पैदा होते है। शरीर को भरपूर आराम देना चाहिये ताकि शरीर को नुकसान से उबरने तथा बढने का मौका मिल सके। सप्ताह में चार दिन व्यायाम और तीन दिन आराम तथा रोज आठ घंटे की नींद एक बढीया आदत है।

2) खुद को मानसिक तनाव से मुक्त रखे

मानसिक तनाव आपके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिये हानीकारक है। मानसिक तनाव होने पर हमारे शरीर से कार्टोसाल नामक हार्मान का रिसाव होता है जिससे हमारी पाचन क्रिया बूरी तरह से प्रभावित होती है। आप कम भोजन कर स्वस्थ्य रह सकते है लेकिन अगर आप हमेशा तनाव में है तो पोषक तत्वों से भरपूर भोजन करने के बावजूद आप स्वस्थ्य नही रह सकते।

अगर आपको रोजमर्रा के जीवन में पैदा होने वाले मानसिक तनावों से बचना है तो आपको विभिन्न व्यक्तियों से तथा परिस्थितियों में कैसा बर्ताव करना है इसकी पहले से ही परिणामकारक बर्ताव की नीतियों (strategies) को तर्कपूर्ण रुप से तय करना होगा। इसके लिये सबसे पहले आप जिनसे भी संबंधित है उन सभी लोगों की तथा जिन परिस्थितियों से आपको गुजरना पडता है उनकी सूची बनाईये। इसके बाद हर व्यक्ति तथा परिस्थिती से कैसे निपटा जाये इसके हर तरीके का तर्कपूर्ण ढंग से विश्लेषण किया जाये कि अमुक व्यक्ति से अथवा अमुक परिस्थिति में अमुक बर्ताव करने पर उसके तात्कालीन तथा दूरगामी क्या परिणाम होंगे। हर एक संभावित बर्ताव के परिणामों का विश्लेषण कर सबसे फायदेमंद बर्ताव का चयन करना चाहिये। इस तरह आपके पास हर किस्म के व्यक्ति से उचित ढंग से बर्ताव करने की पूर्व नीति मौजूद होगी जिससे आपके सब के साथ अच्छे संबंध बनेंगे, कोई भी आपका दूरुपयोग नही कर सकेगा और कठिन परिस्थितियों में भी आप सही सलामत रह सकेंगे। आपका बर्ताव कभी भी खुद को नुकसान पहुंचाने वाला नही रहेगा। बात को और भी स्पष्ट करने के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत है :- श्रीमान ''ए'' हमेशा की तरह नाई की दुकान

में अपने बाल बनाने गए। बाल बनने के बाद उन्होने नाई से पुछा कि कितने पैसे हुए। नाई ने कहा कि 20/- रुपये हुए। श्रीमान 'ए' को इस कम किमत से आश्चर्य हुआ। नाई ने कहा कि हमेशा आते है फिर भी भाव पूछ रहे है, पचास रुपये हुए है। श्रीमान ए पैसे देकर चुपचाप चला गया। इसके बाद उसने फिर कभी इस नाई की दूकान में प्रवेश नही किया। इस उदाहरण में नाई में ग्राहकों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये इसकी दूरदृष्टी नही थी। हम अपने वरिष्ठ अधिकारियों से, दोस्तों से, बच्चों से नौकरों से अलग अलग ढंग से बातें करते है। हम सभी से एक जैसे ढंग से बात नही कर सकते। यही दूरदृष्टी नाई में नही थी इसलिये उसने एक हमेशा के ग्राहक को खो दिया। दलित-बहुजन व्यापार तथा जीवन के कई मामलों में नाकामयाब इसलिये होते है क्योंकि उन्होने अलग अलग स्थिती में कैसा बर्ताव करना है इसकी पूर्वनीति कभी तैयार नही की है। इसकी वजह से वे जल्दी उत्तेजित होकर अतार्किक रुप से बर्ताव करने लगते है। परिणाम स्वरुप अकारण झगडे, मनमुटाव, अकारण बहस होती है तथा मानसिक तनाव बढ जाता है। इस तनाव का विस्फोट अक्सर परिवार के सदस्यों पर होता है और वे भी तनावग्रस्त हो जाते है।

3. ॲलोपॅथी की दवाओं के इस्तेमाल से बचे

यह स्पष्ट हो चुका है कि ॲलोपॅथिक दवाएं सिर्फ रोगों के लक्षणों को दूर करने का काम करती है रोगों के कारणों को दूर नही करती। शरीर में टॉक्सीन यानी विषाणू होना रोग पैदा होने का मूल कारण है। अगर शरीर से टॉक्सीन बाहर किये जाते है तो रोग का जड से इलाज मुमकिन है। ऍलोपॅथी दवा लेने संबंधित अपनी सभी शंकाओं को बताकर पहले, दूसरे तथा तीसरे मेडीकल परामर्श को जरुर ले क्योंकि इन दवाओं के हानिकारक पश्चात दुष्परिणाम (**after effects**) होते है। ॲलोपॅथिक दवाओं का इस्तेमाल आपातकालीन परिस्थितियों में जबतक आपातकालीन स्थिति बरकरार रहती है तबतक ही करना चाहिये। इसके बाद आप स्वास्थ्य वर्धक जीवनशैली को अपनाए तब आपको मामूली सर्दी खांसी तक नही होगी।

ऍलोपॅथी की दवाएं तात्कालीन आराम क्यों देती है इसे निम्नलिखित उदाहरण से बताया गया है :- अगर आप अपने घर का कचरा साफ कर रहे है और उसी समय अगर कोई बाहर से आपके घर के अंदर कचरा फेंकना शुरु करता है तो आप क्या करेंगे ? आप घर की सफाई बंद कर सबसे पहले उस व्यक्ति को कचरा फेंकने से रोकेंगे। ठिक इसी तरह जब हमारा शरीर टॉक्सिन्स को बाहर करने की कोशिश करता है या कीटाणुओं से लडने की कोशीश करता है तो हमारे शरीर में जो लक्षण दिखाई देते है उसे ॲलोपॅथी में रोग कहा जाता है। जब आप ॲलोपॅथी दवा लेते है जो अपने आप में एक टाक्सीन है तो आपका शरीर इस एलोपॅथिक दवा (टाक्सिन) को शरीर से बाहर करने में जुट जाता है इसलिये रोग के लक्षण समाप्त हो जाते है। आपको लगता

है कि रोग का उपचार हो गया। जबकि रोग का कारण मौजूद होता है, ये टॉक्सिन शरीर के अंरुनी हिस्सों में धकेल दिये जाते है जहां वे दूसरी बीमारियों के रुप में प्रकट होते है। इसलिये यही बेहतर है कि आप कुदरती तौर से स्वस्थ्य रहे।

4. हानिकारक उपकरणों से दूर रहे

1. मायक्रोवेव ओवन :- अन्न पदार्थ की आण्विक संरचना जिससे वह भोजन में रुपांतरित होता है उसे मायक्रोतरंगे (Microwaves) पूरी तरह से ध्वस्त कर देती है जिससे वह अन्न पोषक भोजन नही रहता। मायक्रोतरंगे बिलियन्स प्रति सेकंद की रफ्तार से अन्न की नमी तथा अन्न के आवरण को आगे-पिछे झंझोडते है। इस सतत घर्षण से अन्न की आण्विक संरचना बदल जाती है जिसे हमारा शरीर अन्न के रुप में स्वीकार नही करता। यह अन्न हमारे शरीर में एक तरह का आण्विक कचरा होता है। मायक्रोवेव ओवन में रखे हुए पानी में बीजे अंकुरित नही हो सकती। रुसी वैज्ञानिकों ने पाया कि मायक्रोवेव ओवन में बने अन्न में पोषक तत्वों की भारी कमी होती है, उसमें कॅन्सर पैदा करने वाले तत्व बनते है तथा मश्तिष्क को नुकसान पहुंचाने वाले रेडिओलिटिक्स (**radiolytics**) होते है। मायक्रोवेव में बना खाना खाने से स्मृतिभ्रंश, एकाग्रता का अभाव, भावनात्मक अस्थिरता, तथा बौध्दिक स्तर में कमी जैसे लक्षण पैदा होते है। मायक्रोवेव भोजन में विटॅमिन बी कॉम्प्लेक्स, विटॅमिन सी तथा ई लगभग नष्ट हो जाते है। इन विटॅमिन्स की तनाव तथा कॅन्सर से लडने में अहम भुमिका होती है। इसके अलावा मायक्रोवेव ओवन से अन्न के ट्रेस मिनरल्स जो हमारे शरीर तथा मश्तिष्क को सुचारु रुप से कार्य करने के लिये जरुरी है, बेकार हो जाते है। मायक्रोवेव ओवन का खाना खाने से लिम्फॅटिक (**lymphatic**) बीमारियाँ तथा कुछ विशेष कॅन्सर से लडने की क्षमता नष्ट होती है। खून में कॅन्सर सेल की अधिकता पैदा होती है। रुसी वैज्ञानिकों के मुताबिक पेट के तथा अतडियों के कॅन्सर की दर बढ जाती है, शरीर में टयुमर तथा सारकोमा (**arcoma**) बनते है। मायक्रोवेव ओवन में बने खाने के अन्य पश्चात परिणामों (**side-effects**) में **1**) उच्च रक्तचाप, **2**) मायग्रेन, **3**) चक्कर आना, **4**) पेट में दर्द होना, **5**) दुष्चिंता का पैदा होना, **6**) बाल झडना, **7**) अपेन्डीक्स, **8**) मोतियाबिन्द, **9**) प्रजनन संबंधी बीमारियां, **10**) एड्रेनल निष्क्रीयता, **11**) हृदय रोग, **12**) स्मृतिभ्रंश, **13**) ध्यान से संबंधित रोग, **14**) भावनिक अस्थिरता, **15**) अवसाद (**Depression**), **16**) असंबध्द विचार, **17**) नींद में बाधा, **18**) मश्तिष्क में चोट (**damage**)। इ. है। मायक्रोवेव ओवन का खाना शरीर में तनाव पैदा करता है जिसके परिणाम स्वरुप हमारे खून के रसायनतत्वों (**chemistry**) में परिवर्तन होता है। रुस सहित कई देशों ने मायक्रोवेव ओवन के इन दुष्परिणामों की वजह से मायक्रोवेव ओवन के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाई हुई है।

2. अल्ट्रासाउंड स्कॅन के खतरे :- असोसिएशन फॉर इम्प्रुवमेंट इन मॅटरनिटी सर्विसेस, इंग्लंड ने ऐसे कई वाकयों को दर्ज किया है जिसमें उनके गर्भाशय में पुरी तरह से स्वस्थ बच्चों का अल्ट्रासाउंड स्कॅन का गलत ढंग से आकलन करने की वजह से गर्भपात किया गया है। इस तरह के अनेक वाकये हो सकते है जो दर्ज नही हो सके। कई मिलियन औरतें अल्ट्रासाउंड स्कॅन के खतरों को जाने समझे बिना इसे कबूल करती है। इसका दुष्परिणाम उनके गर्भ में पल रहे बच्चे पर होता है। अंतिम उपाय के रुप में अल्ट्रासाउंड स्कॅन तभी उचित है जब स्त्री को किसी हिस्से में दर्द है जिसकी वजह डॉक्टर के समझ से बाहर है।

5) सभी टिकों को नकार दे

विभिन्न टिकों में सोडियम हायड्रोस्काइड (Sodium Hydroxide (caustic soda, soda lye.)) पाया जाता है जो हमारे अंदरुनी अंगों को जलाने की क्षमता रखता है। परिणाम स्वरुप फेफडों तथा पेशियों को नुकसान पहुंचता है। Formaldehyde हमारे मज्जासंसथान (nervous system) को प्रभावित करता है तथा कॅन्सर पैदा करता है। वह निद्रानाश, कफ, सिरदर्द, मितली आना, नाक से खून बहना तथा चमडी पर फुंसियाँ पैदा होना जैसे लक्षण पैदा कर सकता है। formaldehyde की सुरक्षित सीमा तय नही की जा सकी है। टिकों में पाई जाने वाली Hydrochloric अम्ल का पेशियों से प्रत्यक्ष संपर्क होने पर वे नष्ट हो सकती है। टिकों में पाया जाने वाला Thimerosal पारे से पैदा किया जाता है जिससे लीवर तथा मश्तिष्क को नुकसान पहुंचता है तथा कॅन्सर पैदा होता है। मेलिसा रॉस (Melissa Ross) ने प्रस्तुत किये हुए दस्तावेज यह सिध्द करते है कि CDC को यह पता था कि मिसल्स (Measles) के टिकों में पाये जाने वाले Thimerosal का संबंध ऑटिजम (autism) से है। CDC ने इस जानकारी को जानबूझकर दबा दिया।

फास्फेटस् (Phosphates) पानी के सभी जीवों का दम घोटने का काम करता है। अल्युमिनियम मज्जा तंतुंओं (nerve fibres) को आपस में उलझा देता है जिससे अल्झायमर्स की बीमारी पैदा होती है। Polysorbate 80 चूहों में प्रजनन क्षमता को खत्म करता है। टिकों में पाये जाने वाले अन्य खतरनाक जहरीले रसायन Methyl mercury, MSG, carbolic acid (phenol), mercury इ. है। टिकों में सडे अंडों को अन्य जहरिले तत्वों में मिलाकर अथवा जानवरों के फोडों में व्याप्त पीप (pustules) से लिये गए विघटित प्रोटिन (Decomposed proteins) होते है जिन से botulism, salmonella इ. शारीरिक जहर निर्माण होते है।

सभी वैज्ञानिक इस बात से सहमत है कि टिकों से उसी रोग के सौम्य लक्षण निर्माण होते है जिन्हे रोकने के लिये यह टीका बनाया गया है। लेकिन ये लक्षण सौम्य

होंगे, तीव्र होगे या घातक होंगे इसे यकीनी तौर पर नही बताया जा सकता। तमाम टिके अपने आप में एक जहर है इसलिये सौ फीसदी मामलों में वे शरीर को नुकसान पहुंचाते है। यह नुकसान अचानक होने वाली मौतों से लेकर कई सालों बाद पैदा होने वाली असाध्य बीमारियों में परिलक्षित होते है। लगातार दिये जाने वाले टिकों से हमारे शरीर की रक्षा प्रणाली (**immune system**) बूरी तरह से प्रभावित होती है जिससे एडस सहित कई तरह की बीमारियों का खतरा पैदा होता है। यह पाया गया है कि टिके लगाये गये कई लोगों में मश्तिष्क को नुकसान पहुंचा है।

सायन्स नामक पत्रिका के **4** मार्च **1977** के अंक में Jonas तथा Darrell Salk आगाह करते है कि इन्फुन्झा तथा poliomyelitis के टिके लोगों में इन्ही बीमारियों को पैदा कर सकते है जिन्हे रोकने के लिये ये टिके बनाये गए है। सन **1918** के इन्फ्लुंजा के फैलाव (epidemic) की वजह इनका टिकाकरण था।

टिके हमारे शरीर में एक टाईम बम की तरह काम करते है जो दस से तीस साल बाद मजबूती से सक्रिय हो जाते है। कई टिके जिसके प्रतिबंध के लिये टिके बनाये गए है, उनके अलावा भी अन्य बीमारियां पैदा करते है जैसे कि टिका देने के बीस साल बाद syphilis, paralysis, leprosy, cancer, spinal meningitis, blindness, tuberculosis तथा arthritis, kidney disease, nerve damage, heart disease, heart failure इ. बीमारियां होती है। इंडियाना के **Dr. W. B. Clarke** के मुताबिक काउपॉक्स टिके अनिवार्य रुप से लगाये जाने के पहले कॅन्सर का कहीं कोई नामो निशान तक नही था। उन्होने खुद टिके लगाये हुए **200** लोगों के कँसर का उपचार किया जबकि उन्होने अपने मेडिकल अनुभव में कभी किसी को कॅन्सर होते नही देखा जिसे कभी टिका न लगाया गया हो।

टिकों के कारण बच्चों में कम-अधिक तिव्रता के शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक अक्षमताएं पैदा होती है। Ontario प्रांत में बच्चे को एक साल के भीतर **24** टिके लगाये जाने की सीफारीश की गई है। एक साल के बच्चे में शारीरिक रक्षा यंत्रण ा (immune system) का ठिक से विकास भी नही हुआ होता है। इसलिये इसमें आश्चर्य नही है कि टिका लगाने के कुछ ही सेंकद से लेकर कुछ ही घंटों में बच्चों की मौतें होती है। टिकाकरण पर और भी विस्तृत जानकारी के लिये हमारी किताब 'Impending Satanist World Order" पढीये। यह किताब हमारी वेबसाईट https://www.bahujanmarch.org पर मुफ्त में डाउनलोड के लिये उपलब्ध है।

6. कृत्रिम विटॅमिन्स न ले

प्राकृतिक अन्न में सभी विटॅमिन्स कॉम्प्लेक्स रुप में यानी अपने समुह के विटॅमिन्स तथा मिनरल्स के साथ उपस्थित होते है जिसकी वजह से वे हमारे शरीर में उपयोगी

भूमिका निभाते है। किसी विटॅमिन को अकेले ही उसके समुह के बिना लिया जाये तो शरीर पर उसका कोई असर नही होता। कृत्रिम विटॅमिन्स बिना समुह के होते है तथा वे कृत्रिम रुप से तैयार किये गये होने की वजह से हमारा शरीर उसे जहरीले तत्व मानकर उन्हे शरीर से फौरन बाहर करने का प्रयास करता है। इसलिये विटॅमिन्स लेने के कुछ समय बाद आप देखते है कि पेशाब की रंगत तथा गंध बदल गई है।

विभिन्न ॲलोपॅथिक दवाएं तथा ऐसी दवाये जो फार्मसी में बिना डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन से उपलब्ध है उनके लेने से हमारे शरीर की glandular system यानी ग्रंथियों की प्रणाली में बदलाव होता है। परिणामस्वरुप हमारे शरीर का कॅलशियम व फास्फोरस का अनुपात प्रभावित होता है। ॲलोपॅथिक दवाओं के साथ सिगरेट इ. के प्रयोग से भोजन में से आवश्यक पोषण तत्व ग्रहण करने की शरीर की क्षमता प्रभावित होती है। कई कॅलशियम की दवाओं में जो कॅलशियम होता है उसे हमारा शरीर पोषक तत्व के रुप में स्वीकार नही करता। ऐसे कॅलशियम की मात्रा खून में बढ जाने से वे शरीर की वाहिनियों में ठोस पदार्थ के रुप में जमा होते है।

नार्वे की Tromso युनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट के मुताबिक 400 IU के उपर विटॅमिन डी की औषधी लंबे समय तक लेने से हार्ट ॲटॅक हो सकता है तथा विघटनकारी जोडों की बिमारी (degenerative joint disease) तथा आर्थिरिटिस हो सकती है। विटामिन डी का सबसे सुरक्षित तथा सस्ता स्त्रोत सुरज की किरणें है। अन्य विटॅमिन्स का सबसे अच्छा स्त्रोत हरी सब्जियां, ताजे फल, दाले, बीज इ. है।

7. अल्कोहोल (शराब) से दूर रहे

अल्कोहोल से इस्ट्रोजेन (**estrogen**) नामक स्त्री हार्मोन पैदा होता है जिसकी वजह से शरीर का टेस्टोस्टेरोन (**testosterone**) नामक पुरुष हार्मोन घट जाता है। टेस्टोस्टेरोन का संबंध पुरुष लींग के इरेक्शन (लींग खडे होने) से संबंधित है इसलिये शराब के लगातार सेवन से व्यक्ति में लींग का इरेक्शन न होने की बिमारी (**erectile dysfunction (ED)**) पैदा होती है।

अल्कोहोल से शरीर में पानी की मात्रा बेहद घट जाती है। एक गिलास बियर पीने का मतलब शरीर से तीन गिलास पानी की कमी होना है। अल्कोहोल में काफी अधिक कॅलरी होती है जिसकी वजह से लीवर की बिमारी होकर मौत हो सकती है। अल्कोहोल के लगातार सेवन से हमारे मश्तिष्क की पेशियां प्रभावित होती है तथा नष्ट होने लगती है जिससे Korsakoff's syndrome, Wernicke's encephalopathy इ. मश्तिष्क के बिकार पैदा होते है। अल्कोहोल का बूरा असर औरतों पर ज्यादा तेजी से होता है।

अल्कोहोल के लगातार सेवन से हार्ट ॲटॅक, उच्च रक्त चाप, कई प्रकार के कॅन्सर,

इ. बीमारियां हो सकती है। अल्कोहल एक महंगी आदत है जिससे न सिर्फ आपके परिवार का सारा बजट बिगडता है बल्कि सारा परिवार अस्त व्यस्त हो जाता है।

8. तर्कपूर्ण बर्ताव को विकसित करें

तमाम मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक इ. जंजीरों से मुक्त होने के लिये सबसे जरुरी है कि हम खुद में तर्कपूर्ण बर्ताव को विकसित करें। इसलिये हमें गुलाम बनाने के लिये शोषक वर्ग सबसे पहले धार्मिक अंधविश्वासों से हमारी तार्किक क्षमता को ध्वस्त कर देता है और हमें खर्चीली आत्मघाति प्रथा परंपराओं की मानसिक जंजिरों से लाचार गुलाम बना देता है। हमें चाहिये कि हम किसी भी कदम को उठाने से पहले उसके हर पहलु पर हर परिणामों पर सवाल करे। हमने किसी बात का इसलिये विश्वास नही करना है कि उस बात को किसी विशेषज्ञ ने कही है। हम विशेषज्ञ का आदर करते है लेकिन ऐसा नही है कि वह हमेशा सही होगा या अपने व्यवसायिक स्वार्थ के लिये हमें गुमराह नही कर रहा होगा ? रिसर्च से बातों की जांच पडताल करना जरुरी है। हमें कोई बात इसलिये नही मानना है कि वह बात किसी धार्मिक ग्रंथ में लिखी है। या बात को कहने वाले का स्तर क्या है। या कही जाने वाली बात कितनी आकर्षक लग रही है क्योंकि वह फँसाने के लिये पेश किया हुआ चारा भी हो सकती है। हमें तर्कपूर्ण ढंग से यह तय करना है कि वह बात क्या आपके अथवा आपके परिवार के लिये वर्तमान में तथा भविष्य में भी लाभकारी है ? कई बातें वर्तमान में लाभकारी हो सकती है लेकिन भविष्य में घातक साबित हो सकती है। मसलन, किसी अपराधी से मदद लेना वर्तमान में फायदे का हो सकता है लेकिन भविष्य में वह आपको अपने अपराध में मदद करने पर विवश कर सकता है। इसलिये हम सब में दूरदृष्टी का विकास होना सबसे जरुरी शर्त है। यह सब तर्कपूण र्ा चिंतन करने से ही संभव है। बाबासाब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने तर्कपूर्ण चींतन को ही सम्यक समाधी कहा है।

9. मानसिक स्वास्थ का विकास

अच्छा मानसिक स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन में कितने समाधानी और सुखी है, और एक अर्थपूर्ण जीवन जी रहे है।

एक जैसा अर्थहीन जीवन जिने से असमाधान पैदा होता है। लालच, आलस तथा ईर्षा सच्चे सुख के लिये घातक है। आलसी, लालची और ईर्षालु व्यक्ति सदैव अभाव में जिता है क्योंकि उसके पास क्या नही है जो औरों के पास है यही वह देखते रहता है। इसलिये धनवान होने के बावजूद वह खुद को गरीब महसूस करता है। लालच की कोई सीमा नही होती। चाहे वह कोई उद्योगपति हो या राजा हो, उसे पृथ्वी पर मौजूद

हर चीज भी मिल जाये तब भी वह सुखी नही बन सकता क्योंकि वह सदैव इस डर और चिंता में जिता है कि कोई उसका ही रिश्तेदार या अनजान दुश्मन उसकी हत्या न कर दे या उसका तख्ता न पलट दे। इसलिये वह अपनी सारी ताकत, सारा समय अपनी सुरक्षा में लगा देता है। इन्ही चिंताओं की वजह से वह चैन की नींद तक नही ले सकता। उसे लजीज खाना उपलब्ध होता है लेकिन वह उसे बेस्वाद लगने लगता है क्योंकि वह कभी भी भूखा नही होता है। असल में स्वाद भूख से आता है। भूखे इनसान को रुखी सुखी रोटी भी स्वादिष्ट लगती है क्योंकि उसके शरीर को उसकी जरुरत होती है। हमारा शरीर तब और ज्यादा संतुष्ट और तृप्त होता है जब वह भूखा हो और उसे भोजन में सारे पोषणतत्व मिल जाये।

आराम और सुख दोनों एकदम अलग अलग चिजें है। सुख आरामदेह या मंहगी चीजों पर निर्भर नही है। मखमल के पलंग पर भी चिंतित व्यक्ति को नींद नही आती। अमीर लोग नींद की गोलियां खाकर सोते है। बच्चे मिट्टी के खिलौनें से भी आनंदित होते है। सुख अच्छे परस्पर संबंधों से हासिल होता है। प्रज्ञा (तर्कपूर्ण सोच से विकसित ज्ञान), शील, तथा करुणा से संपन्न व्यक्ति को समाज उपयोगी अर्थपूर्ण जींदगी से सच्चा आदर और सच्चा सुख हासिल होता है। जब हम इस बात को जान समझ लेते है कि आलस, लालच और ईर्षा सभी बुराईयों की जड तथा सच्चे सुख की दूश्मन है तब हमारे लिये प्रज्ञा, शील, और करुणा के विकास का रास्ता खुल जाता है।

10. अलग स्थितियों में अलग व्यवहार की समझ

अलग अलग परिस्थितियों के मुताबिक योग्य बर्ताव करने की समझ तर्कपूर्ण सोच और दूरदृष्टी से पैदा होती है। ऐसे व्यक्ति ने तर्कपूर्ण रुप से पहले से तय किया होता है उसे विभिन्न परिस्थितियों में क्या करना है अथवा विभिन्न व्यक्तियों से कैसा बर्ताव करना है। इसलिये वह संवेगात्मक तथा भावनात्मक रुप से बिना विचलित हुए बडी खुबी से परिस्थितियों से कामयाबी से निपटता है।

इसके विपरित जिस व्यक्ति ने ऐसी सोच विकसित नही की है वह जल्दी गुस्सा हो जाता है या भावनात्मक रुप से अस्थिर होकर उत्तेजना में अतार्किक व्यवहार कर बैठता है जिससे उसे मनमुटाव, लडाई, व्यापार या संबंधों में नुकसान इ. कई दुश्परिणाम झेलने पडते है। इसलिये ऐसे व्यक्ति का जीवन तनावपूर्ण होता है। इसी बात को और स्पष्ट करने के लिये हम नाई वाले उदाहरण पर दोबारा गौर करेंगे :- श्रीमान ''ए'' ने क्योंकि पहले से ही तय किया था कि उसे किस स्थिति में क्या करना है, इसलिये उसने और लोगों की तरह नाई से यह बहस नही की कि बाल बनाने की फीस को याद रखना उसका काम नही है, जब भी ग्राहक पुछे बाल बनाने की फीस बताना नाई का काम है, दुकानदार को यह बिल्कुल भी हक नही है कि वह ग्राहक का अपमान करें

इ.। श्रीमान ''ए'' अच्छी तरह से जानता था कि ऐसी बहस से दोनों के आत्मसम्मान को चोट पहुंच सकती थी या उनमें लडाई झगडा तक हो सकता था। नाई में तार्किक दूरदृष्टी नही थी इसलिये उसने अपने हमेशा के ग्राहक को अपने बर्ताव से खो दिया। कई बार हमें बहुत नाजुक स्थिति का सामना होता है जब हम गुंडे किस्म के लोगों के बीच फंस जाते है। वह व्यक्ति ऐसी स्थितियों से सकुशल निकल आता है जिसने ऐसी स्थितियों से निपटने की पहले से ही नीति बनाई है।

इसलिये यह जरुरी है कि आप अपने परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों सहित उन सभी लोगों की एक सूची बनाये जिनसे भी आपका संबंध आता है। इसके बाद हर किसी के आपके साथ के बर्ताव के बारे में तथा उसके पिछे के संभावित सभी कारणों के बारे में तर्क किजिये और उनके साथ आप जो व्यवहार करेंगे उस हर व्यवहार के तात्कालीन तथा दूरगामी परिणाम क्या होंगे इस पर मनन किजिये तब सबसे अच्छा और लाभदायक बर्ताव क्या होगा इसका आपको पता चलेगा।

11. आत्म-रक्षा के हुनर सीखना

आत्म रक्षा के हुनर सीखना बहुजनों के लिये अत्यावश्यक है। इससे न सिर्फ आप अपनी रक्षा कर सकेंगे बल्कि आप में आत्मविश्वास बढेगा तथा आपके मन की बची खुची हीनता की भावना भी खत्म होगी। इसका सबसे अच्छा उपाय यह है कि आप अपने सामान्य व्यायाम को मार्शल आर्टस् के प्रशिक्षण में बदल दें। इससे आपका व्यायाम होने के साथ साथ आप में आत्मरक्षा का हुनर भी विकसित होगा। इंटरनेट में यु टयुब पर आपको सैंकडों मार्शल आर्टस् प्रशिक्षण के वीडियो मुफ्त डाउनलोड के लिये मिल जाएंगे। हममे से एक प्रशिक्षित व्यक्ति औरों को प्रशिक्षण दे सकता है या औरों के साथ इसका अभ्यास कर सकता है।

12. सबसे पहले बहुजन मिशन, बाद में संगठन

बहुजन मिशन में उन सभी कामों का समावेश होता है जो बहुजनों का सतत रुप से सशक्तिकरण करने तथा आर्य-ब्राह्मणवादियों तथा उनकी शोषण-व्यवस्था को कमजोर और अंततः ध्वस्त कर सामाजिक न्याय पर आधारित शोषण-विहिन समाज व्यवस्था को कायम करने के लिये जरुरी है। सामाजिक न्याय का मतलब समाज के हर घटक को उसकी संख्या के मुताबिक जीवन के हर श्रेत्र में अनिवार्य रुप से प्रतिनिधित्व देना है।

बहुजन मिशन के कार्य वह काम है जिससे बहुजनों का सतत रुप से सशक्तिकरण होता है, उनका आर्य-ब्राह्मणवादी शोषण-व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष लगातार मजबूत होता है तथा आर्य-ब्राह्मणवादी व उनकी शोषण-व्यवस्था लगातार कमजोर होती है।

आर्य-ब्राह्मणवादी बहुजनों के विभिन्न घटकों जैसे कि छात्र, युवक, किसान, मजदूर,

महिलाएं इ. को उनके हकों से वंचित कर उनका दमन-शोषण करते है। आर्य-ब्राह्मण ावादियों की रणवीर सेना, सनलाईट सेना, लोरिक सेना, बजरंग दल इ. सशस्त्र दल बहुजनों के खिलाफ हिंसात्मक कार्रवाईयां करते है। बहुजनों का कोई भी एक संगठन बहुजनों के इन सभी घटकों पर होने वाले अन्यायों तथा आर्य-ब्राह्मणवादियों के सशस्त्र संगठनों का मुकाबला नही कर सकता। इसलिये हम किसी भी एक संगठन पर निर्भर नही रह सकते। आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों को परास्त करने के लिये यह जरुरी है कि हम मिशन के सभी कामों का समर्थन करे चाहे फिर वे मिशन के काम किसी भी बहुजन संगठन या व्यक्तियों व्दारा क्यों ना किये जा रहे हो।

जो काम समाज के लिये सर्वाच्च प्राथमिकता रखते है उनके लिये हमें सबसे पहले मदद करनी करनी चाहिये, अन्य दुय्यम प्राथमिकता के कामों को बाद में किया जा सकता है। समाज की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये इसके बाद रोटी, कपडा और मकान की समस्याएं हमारी जरुरी प्राथमिकताएं है।

13. सिर्फ मिशन के कामों के लिये चंदा दे

अगर आप किसी संगठन को चंदा देते है तो आपको यह पता नही होता कि उसका क्या इस्तेमाल हो रहा है। इसलिये आप सिर्फ और सिर्फ बहुजन मिशन के काम की पूरी रुपरेखा को जान-समझकर ही चंदा दें। बहुजनों को इस बात का विशेष रुप से ध्यान रखना है कि वे बहुजन संगठनों के किसी भी ''नकली संघर्ष'' के लिये चंदा न दे। उन्हे नम्रता से मना कर दे। अगर वे कारण पुछे तो नम्रता से उन्हे असली और नकली संघर्ष को समझने के लिये मौजूदा किताब को पढने का अनुरोध करें, उनसे बहस ना करें।

14. खुद को पसंदीदा मिशनरी गतिविधी में समर्पित करे

लगभग सभी संगठन अपने समर्थकों से चंदा वसूलने, सभा का निमंत्रण देने, मोर्चे में शामिल कराने, इ. कामों के लिये साल में ज्यादा से ज्यादा 15 बार संपर्क करते है। बाकी के 350 दिन उनके अपने होते है। वे अपनी योग्यताएं, साधन-संसाधन, जिम्मेदारिया, कमजोरियां इ. का पूर्ण रुप से विचार कर अपने लिये बहुजन मिशन का कोई काम तय करें। खुद को पूरी तरह से सुरक्षित रहकर कामों में जुट जाये। जब सभी अपनी अपनी पसंद के बहुजन मिशन के कामों में सक्रिय होंगे तभी हम आर्य-ब्राह्मण ावादी शोषण-व्यवस्था को परास्त करने के बारे में सोच सकते है।

15. सोशल मीडिया को मजबूत करे

आर्य-ब्राह्मणवादियों का मनुमीडिया अपने आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों का महीमामंडन

करता है तथा उनके अपराधों को छुपाता है या नजरंदाज करता है। क्या आपने कभी किसी मनुमीडिया को इल्युमिनॅटी तथा उसके बँकिंग समुह को बेनकाब करते देखा है ? क्या आपने उन्हे विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बेनकाब करते हुए देखा है ? क्या आपने शोषकों के विश्व की 90 फीसदी आबादी को सभी अनैतिक तरिकों से खत्म करने की योजना को बेनकाब करते हुए देखा है ? क्या आपने उन्हे टिकारण के खतरनाक दुष्परिणामों को बेनकाब करते हुए देखा है ? क्या आपने उन्हे विश्व स्वास्थ्य संगठन व्दारा अपने टिकाकरण अभियानों के जरिये अफ्रीकी देशों में एडस जैसी बिमारियों के व्यापक संक्रमण फैलाने को बेनकाब करते हुए देखा है ? ऐसे सैकडों मसले है जिन पर वे चुप रहते है। इसके विपरित वे बहुजनों के संघर्ष की उपेक्षा करते है और जब यह मुमकिन न हो तो बहुजन संघर्ष का विकृतिकरण करते है, उसे जातियवादी इ. कहकर बदनाम करते है। बहुजन कार्यकर्ताओं को तरह तरह से बदनाम किया जाता है। मनुमीडिया आपको नकली मुद्दों में उलझाकर रखता है ताकि आप कभी भी असल मुद्दों को देख-समझ ना सके।

हमें न सिर्फ अपने असली मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करना है बल्कि औरों को उनके प्रति जागरुक और सक्रिय भी करना है। इसलिये इलेक्ट्रानिक सोशल मीडिया का बहुत ज्यादा महत्व है। आप यु टयुब पर मुफ्त में अपना चॅनल खोलकर मोबाईल फोन के माध्यम से अपनी बातचित इ. रिकार्ड कर उसका बहुजनों प्रचार कर सकते है। आप इंटरनेट पर अपना ब्लाग खोल सकते है जिसमें आप अपने विचार लिख सकते है, जरुरी जानकारियां दे सकते है।

16. कम्प्युटर उपभोक्ता के तौर पर लायनुक्स मिंट अपनाएं

1. लायनुक्स मिंट क्यों अपनाएं ?

अ) मायक्रोसाफ्ट विंडोज तथा उसके साफ्टवेअर काफी मंहगे होते है। मुफ्त के एन्टी वायरस साफ्टवेअर तथा अन्य युटिलिटी साफ्टवेअर्स आप को बार बार उनका प्रोफेशनल वर्जन खरीदने के लिये कहते है। जो काफी झुंझलाहट पैदा करता है। हो सकता है कि कुछ समय बाद इन साफ्टवेअर्स के कुछ फिचर जानबूझकर काम करना बंद कर दे ताकि आप उनके प्रोफेशनल वर्जन खरीदने पर मजबूर हो जाये।

ब) अगर आप टोरंट वेबसाईटों से पायरेटेड साफ्टवेअर डाउनलोड करते है तो आपको पायरेसी कानूनों के तहत जेल जाने का खतरा होता है। आपने इंटरनेट पर भेंट किये हुए प्रत्येक साईट तथा वहां से डाउनलोड किये गए हर चीज का पता गुगल को होता है। जो लोग पायरेटेड साफ्टवेअर डाउनलोड करते है उनमें नैतिक रुप से भ्रष्ट्र होने की संभावना बढ जाती है।

क) क्योंकि मायक्रोसाफ्ट विंडोज तथा अन्य विंडोज साफ्टवेअर्स का सोर्सकोड बंद यानी अज्ञात होता है इसलिये इन साफ्टवेअर्स में जो भी समस्याएं होती है उन्हे सिर्फ वही साफ्टवेअर कंपनियां दूर कर सकती है। वे फौरन ऐसा करना ना चाहे क्योंकि वे इन कमियों को अपने अगले वर्जन में दूर करना चाहते हो या फिर वे अपने मौजूदा वर्जन को सपोर्ट करना ही बंद कर दे।

ड) जब आप विंडोज का कोई साफ्टवेअर इन्टाल करते है तो उसके साथ साफ्टवेअर की डिपेन्डेन्सिज भी अपने आप इंन्टाल होती है। डिपेन्डेन्सिज वे साफ्टवेअर है जिनकी मदद से मुख्य साफ्टवेअर काम करता है। जब आप अनेक साफ्टवेअर इन्टाल करते है तो एक ही तरह की विभिन्न नामों की डिपेन्डेन्सिज अपने आप इंन्टाल होकर आपके सिस्टम को धीमा या अस्थिर करती है।

इ) म्युजिक प्लेअर को सिर्फ म्युजिक की फाईले, वर्ड-प्रोसेसर को सिर्फ टेक्स्ट फाईले, वीडिओ प्लेअर को सिर्फ वीडिओ फाईले खोलने की अनुमति होती है। लेकिन एन्टी-वायरस साफ्टवेअर को कम्प्युटर की सारी फाईले खोलने की अनुमति होती है इसलिये अगर खुद एन्टी-वायरस साफ्टवेअर में वायरस आ जाये तो कम्युटर की सारी जानकारी बर्बाद हो सकती है। एन्टीवायरस साफ्टवेअर अपनी कमजोरी का दोष आसानी से नये पैदा होने वाले वायरस साफ्टवेअर्स पर डाल सकता है क्योंकि नये वायरसों को ढुंढकर उसका अपडेट तैयार करने के बीच समय का काफी बडा अंतराल होता है। मायक्रोसाफ्ट विंडोज के साफ्टवेअर्स को एन्टीवायरस साफ्टवेअर की जरुरत होती है क्योंकि ये साफ्टवेअर विभिन्न कंपनियों व्दारा तैयार किये गये होते है तथा उनका सोर्स कोड बंद होने से उनको जांचा परखा नही जा सकता।

फ) विंडोज कम्प्युटर्स का हार्डवेअर proprietary होने की वजह से उनके ड्राईवर साफ्टवेअर में कोई भी समस्या हो तो सिर्फ वही कंपनी उसे ठिक कर सकती है। इस तरह विंडो का उपयोग करने वाले इन हार्डवेअर कंपनियों की मेहरबानी पर निर्भर होते है कि वे कब अपनी कमी को दूर करेंगे। लायनुक्स के साथ ऐसा नही है।

2. लायनुक्स मिन्ट के लाभ

अ) लायनुक्स मिंट तथा उसके सारे साफ्टवेअर पूरी तरह से मुफ्त है। Libre office एक संपूर्ण ऑफिस सुईट है। GIMP फोटो एडिर्टींग साफ्टवेअर है। ब्लेंडर 3D एनिमेशन साफ्टवेअर है। OpenShot विडिओ एडिटिंग साफ्टवेअर है। uGet बहुत ही बेहतर डाउनलोड मॅनेजर है। Handbrake वीडिओ कन्वर्टर है। VLC प्रसिध्द मीडिया प्लेअर है। Firefox सर्वोत्तम वेब ब्राउसर है। Transmission टोरेंन्ट डाउनलोडर है। Rhythmbox म्युजिक को आर्गनाईज करने तथा प्ले करने का साफ्टवेअर है। Kde Marble इंटरएक्टिव ग्लोब है। Artha इंग्लिश डिक्शनरी है।

Kalgebra से लेकर दर्जनों शिक्षा से संबंधित साफ्टवेअर्स है। इसके अलावा सैंकडों साफ्टवेअर्स मुफ्त में डाउनलोड के लिये उपलब्ध है।

ब) लायनुक्स मिंट मायक्रोसाफ्ट विंडोज जैसा है इसलिये उसे अपनाते वक्त आपको किसी भी प्रकार की दिक्कत नही होगी। लायनुक्स के अन्य डिस्ट्रोज जैसे कि उबुंटू अथवा रेड हॅट इ. उतने युजर फ्रेंडली नही है।

क) ओपन सोर्स कोड होने से लायनुक्स बहुत ही स्थिर सिस्टिम है क्योंकि प्रोग्रमिंग को जानने वाला कोई भी व्यक्ति इसके सोर्सकोड को पढकर उसकी खामियों को ढुंढ सकता है। हजारों शौकिया तथा तनख्वाहशुदा प्रोग्रॅमर्स रोज लायनुक्स तथा उसके अन्य साफ्टवेअर्स की कमियों को तथा उसमें वायरस प्रवेश की संभावनाओं का ढुंढते है और ऐसी कमी नजर आते ही उसे फौरन दूर किया जाता है। इस तरह लायनुक्स कोई व्यवसायिक कंपनी नही है बल्कि लोगों को मुफ्त में बेहतरीन साफ्टवेअर मुहैया कराने के लिये समर्पित समाज है। तनखाहशुदा प्रोग्रमर्स का खर्चा आम लोगों तथा संस्थाओं के डोनेशन्स से चलता है। आपको गुगल या याहू पर लायनुक्स के साफ्टवेअर्स नही मिलेंगे सिर्फ जानकारी मिलेगी क्योंकि लायनुक्स के साफ्टवेअर्स को लायनुक्स की अपनी "Linux repositories" से ही डाउनलोड किया जा सकता है। "Linux repositories" वह वेबसाईट है जहां सारे जांचे परखे और सुरक्षित करार दिये गए लायनुक्स साफ्टवेअर्स होते है। इन्हे कोई भी प्रोग्रमर पढ सकता है। जरा भी खामी नजर आये तो इसमें फौरन सुधार किया जाता है इस दौरान अपउेट जारी होता है। लायनुक्स के अपउेटस लगभग रोज जारी होते है। जब भी आप यहां से कोई साफ्टवेअर डाउनलोड करते है तो लाईनुक्स (Software manager / synaptic package manager) यह देखता है कि उसका डिपेन्डसी साफ्टवेअर पहले से ही इन्टाल है या नही। अगर वह इंस्टाल है तो सिर्फ साफ्टवेअर डाउनलोड होता है डिपेन्डन्सी नही। इससे सिस्टिम स्थिर और कार्यक्षम रहती है।

ड) लायनुक्स के लिये आपको अलग से कोई एन्टीवायरस साफ्टवेअर इन्स्टाल करने की जरुरत नही होती। Linux repository में कोई एन्टीवायरस साफ्टवेअर नही होता। क्योंकि लायनुक्स सिस्टिम में कोई भी वायरस प्रवेश ही नही कर सकता जब तक उसके पास आपका रुट पासवर्ड ना हो।

विंडोज के सारे वायरस, साफ्टवेअर इन्स्टाल करने के दौरान ही प्रवेश करते है क्योंकि इन्स्टाल करने वाले साफ्टवेअर को असिमित परमिशन्स होते है और ये साफ्टवेअर विभिन्न स्त्रोंतों से जैसे की निजी डी.वी.डी., टोरंट साईटस्, मुफ्त के युटीलिटी साफ्टवेअर्स इ. से होते है। लेकिन Linux repository में इनफेक्टेड साफ्टवेअर्स होते ही नही। मिसाल के लिये मान लेते है कि लायनुक्स में अगर कोई वायरस आ जाये तो पीडित कंम्प्युटर युजर व्दारा उसकी सूचना मिलते ही फौरन

उसका तोड निकालकर अपडेट जारी किया जाता है। इसलिये लायनुक्स के लिये वायरस लगभग नही बनाये जाते। अगर कोई कंपनी लायनुक्स के लिये एन्टीवायरस बनाती है तो वह विंडो से लायनुक्स में आये लोगों के भय का दोहन करना चाहती है।

इ) जब आप लायनुक्स अपनाते है तो आप लायनुक्स समाज में शामिल होते है। आपको इस बात का अहसास होता है कि आप इतनी बेहतर कम्प्युटर सिस्टिम का लाभ हजारों लोगों की मेहनत की वजह से उठा रहे है। आप में सामाजिकता की भावना दृढ होती है और दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। इस तरह आपका कदम नैतिकता, विश्वास और सहयोग की ओर बढता है। लायनुक्स मिंट के संबंध में परिपूर्ण जानकारी के लिये आप हमारी वेबसाईट **https://www.bahujanmarch.org** को भेंट दें।

पारिवारिक सशक्तिकरण

1. मनुवादी डीश टी.वी. कंपनियों तथा पत्र-पत्रिकाओं को त्याग दे

जब आप मनुवादी पत्र-पत्रिकाएं खरीदते है या घर में डीश टी.वी. लगाते है तो आप हर महिने एक बडी रकम अपने शोषकों को देकर उन्हे और ज्यादा मजबूत तथा अपने संपूर्ण परिवार को आर्थिक तथा मानसिक रुप से कमजोर और भ्रमित बनाते है।

इलेक्टानिक तथा प्रिंट मनुमीडिया आपके दिमाग में विभिन्न सामाजिक घटकों के प्रति नफरत पैदा करते है। शोषण परस्त धर्म तथा उसके धार्मिक अंधविश्वासों को तरह तरह के झूठे प्रमाण देकर आपके मन में उतारने का सतत प्रयास करते है। वे अपने टी.वी. सिरियलों के माध्यम से बहुजनों के मन में आलस, लालच, ईर्षा और नफरत पैदा करते है। इन सिरियलों में एक-दूसरे के खिलाफ षडयंत्र, चालबाजियां, मक्कारी इ. को एक आम बर्ताव की तरह पेश किया जाता है। इनको बच्चे भी देखते है और इन दुर्गुणों को स्वाभाविक मान कर अपना लेते है।

आर्य-ब्राह्मण मीडिया हमारी खबरों को नही छापता या दिखाता। हमारे मुद्दों का विकृतिकरण करता है। हमारे संघर्ष को झूठी दलिलों तथा जातिवादी, नक्सली, आतंकवादी इ. झूठे आरोपों से बदनाम करता है। इसके विपरित वे आर्य-ब्राह्मण शोषकों को बहुजनों के हमदर्द के रुप में प्रस्तुत करते है।

हम इस मनुवादी गंदगी को खुद के पैसे देकर अपने घर में लाते है तथा खुद को आर्थिक, मानसिक तथा सामाजिक रुप से कमजोर बनाते है। इसलिये हर बहुजन ने खुद में दृढ निष्चय करना चाहिये कि वे इस गंदगी को न सिर्फ खुद त्याग देंगे बल्कि

औरों को भी इसके लिये जागरुक करेंगे। अगर आप में ऐसा दृढ निश्चय नही है तो आप अन्याय और शोषण दूर करने और सामाजिक न्याय पर आधारित समाज व्यवस्था को कायम करने की बात को भूल जाईये।

आर्य-ब्राह्मणों में ऐसा दृढनिश्चय है। ब्राह्मणवादी गांधी ने अंग्रेजों के सामानों का बहिष्कार किया था। सारे ब्राह्मणवादी दिन रात चर्खा कातते थे। जब निर्भया नामक आर्य-ब्राह्मण लडकी के साथ दिल्ली की बस में बलात्कार हुआ तो उन्होने सारा आसमान सिर पर उठा लिया और दिवाली तक नही मनाई। आर्य-ब्राह्मण ऐसी कोई फिल्म या ऐसा कोई खेल या स्पोर्ट नही देखते जिसका नायक बहुजन हो। ताकि उन्हे फ्लॉप बनाया जा सके। क्या कोई दलित व्यक्ति सवर्ण बस्ती में दुकान लगाकर व्यवसाय कर सकता है ?

दृढ मानसिकता पैदा करने के लिये आत्मबल की जरुरत होती है जिसका हम बहुजनों में भारी अभाव दिखाई देता है। उस पर तुर्रा यह है कि हम खुद को बडे क्रांतिकारी जताते है। दुश्मनों को अपने पैसे से पालने पोसने वाले भला अपने दुश्मन से कैसे लड सकते है ? हमारे ढोंग-पाखंड की क्या यह इन्तेहा नही है ?

हमारे हर बहुजन संगठन की सदस्यता का यह पहला नियम होना चाहिये की हम अपने पैसे से अपने आर्य-ब्राह्मणवादी दुश्मनों को फलने फूलने का कभी मौका नही देंगे। अगर आप सचमूच आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों को परास्त करना चाहते है तो आप आर्य-ब्राह्मणवादियों से खरीदना बंद कर दे और अपने बहुजनों को सहयोग किजिये।

2. निरुपयोगी पत्र-पत्रिकाओं को न खरीदे

वास्तव में पत्र पत्रिकाओं का मकसद पहले से अमल में लाये जा रहे कार्यक्रम को गति देने के लिये तथा कार्यक्रम के लिये लोगों को जागरुक करने के लिये होना चाहिये। आप आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों को देखिये उनके टी.वी. सीरीयल योजनाबध्द तरीके से हम में अंधविश्वास फैलाने का काम करते है, हमें भ्रमित करने का काम करते है, हम में फुट पैदा करने का काम करते है, वे अपने प्रतिक-पुरुषों को हम पर लादने का काम करते है। वे हमारे इतिहास को विकृत करने का काम करते है। वे झूठा इतिहास गढते है। वे हमें बेकार के मुद्दों में उलझाने का काम करते है। उनके पास इस तरह के दर्जनों कार्यक्रम है जिनको चालना देने के लिये उन्हे मीडिया की सख्त जरुरत होती है। बिना मनुमीडिया के वे उसे ठिक से अंजाम नही दे सकते।

लेकिन बहुजन संगठनों के पास वास्तव में ऐसे कोई कार्यक्रम ही नही है। हम सिर्फ भाषण देना जानते है, बातें बनाना जानते है। हमारे कई बहुजन बुध्दिजीवी तथा बहुजन संगठन सिर्फ इसलिये पत्र-पत्रिका निकालते है कि ऐसा करना बडी महान बात

मानी जाती है। इसी भ्रम में वे अपनी सारी ताकत, धन और परिश्रम लगाकर इन पत्र-पत्रिकाओं को ढोते है। जबकि इन पत्र-पत्रिकाओं में वही रटी रटाई बातें होती है जिन्हे हम अपने बचपन से पढते आये है। इन पत्र-पत्रिकाओं को वही लोग खरीदते है जो पहले से ही जागरुक है तथा संगठन के सदस्य या संगठन से सहानुभूति रखते है। वे इसलिये पत्र-पत्रिका खरीदते है क्योंकि उन्हे लगता है कि ऐसा करने से वे बहुजन मिशन का कोई बडा काम कर रहे है या संगठन के प्रति अपना फर्ज अदा कर रहे है। इससे न ही बहुजनों का सतत रुप से सशक्तिकरण होता है और न ही आर्य-ब्राह्मणवादी किसी भी तरह से कमजोर होते है। वास्तव में वे अपना खुद का तथा इन पत्र-पत्रिकाओं को खरीदने वालों का परिश्रम, समय और पैसा व्यर्थ में जाया कर रहे होते है।

हमारे साहित्य से लोग जागरुक होकर मिशन के असली कामों में सक्रिय होना चाहिये वर्ना ऐसे साहित्य का कोई उपयोग नही है। अगर मौजूदा किताब इस मकसद को पूरा नही कर रही है तो हमारा यह प्रयास पैसे की बर्बादी मात्र है। हमने पिछले चार साल तक शोषित समाज जागरुकता मुहिम की नई किताबों का प्रकाशन तथा उपलब्ध किताबों का प्रसार बंद कर दिया था क्योंकि हमें अपेक्षित परिणाम नही दिख रहे थे। हमने सोचा कि हम अपने पैसे सीधे ब्राह्मणवादी अत्याचार से पीडित लोगों को न्याय दिलाने तथा उन्हे सशक्त करने में लगाये। हमने ''मार्क्स से माओ दुनियां के दमित-शोषित अवाम के सबसे बडे दुश्मन थे'' नामक किताब इंग्लिश तथा हिन्दी में इसलिये छापी है ताकि 1) हमारे बहुजन भाई मनुवादी आर्य-ब्रह्मणवादी कम्युनिस्टों के धोखे से बाहर आ जाये। 2) सरकार पर कबिज आर्य-ब्राह्मणवादी दलित आन्दोलन को नक्सलवादी आन्दोलन साबित करने पर तुले है ताकि बदनाम कर उसे कुचला जा सके। इस किताब से इस बात को स्पष्ट करने में मदद मिलेगी कि दलितों का माओवाद से दूर का भी संबंध नही है। इसी मकसद से हमने अपनी वेबसाईट पर ''मनुवादी आर्य-ब्राह्मण कम्युनिस्टों से सावधान'' नामक किताब जारी की है। इस किताब को छापने की हम पूरी कोशिश करेंगे। मौजूदा किताब छापने का मकसद यह है कि यह किताब हमारे अप्रकाशित प्रस्तावित त्रिइब्लिसी शोषण-व्युह विध्वंस के दूसरे सुधारित भाग का अति-संक्षिप्त रुप है। त्रिइब्लिसी शोषण-व्युह विध्वंस के दूसरे भाग का मकसद त्रिइब्लिसी शोषकों का मुकाबला कैसे करें इसकी कार्ययोजना प्रस्तुत करना है। पहले भाग का मकसद बहुजनों को खुद के तथा त्रिइब्लिसी शोषकों के इतिहास से वाकिफ कराना था। अब हमने लगभग सभी जरुरी जानकारी आपके सामने रख दी है इसलिये शायद ही अब हम किसी नई किताब का प्रकाशन करेंगे।

हमारा मीडिया हमारे मिशनरी कामों पर केन्द्रित होना चाहिये। लेकिन नकली बहुजन नेताओं के पास कोई मिशनरी कार्यक्रम ही नही होता इसलिये वे रटी रटाई बातें ही दोहराते रहते है। क्या आपने कभी किसी बहुजन संगठन के मीडिया को

बहुजन समाज में जारी ब्राह्मणवादी कुप्रथाओं के खिलाफ सतत अभियान चलाते देखा है ? भिख्खुओं के कर्मकांडों के खिलाफ लगातार मुहिम चलाते देखा है ? क्या उन्होने ब्राह्मणवादी शोषकों के दलों में फुट फैलाने के लिये योजनाबध्द तरीके से उन्हे प्रचार अभियान चलाते देखा है ? क्या उन्हे बहुजन अर्थव्यवस्था की ठोस कार्ययोजना बनाकर उसे बहुजनों में प्रचारित करते हुए आपने देखा है ? क्या उन्होने दलितों को ब्राह्मणवादी हिंसा से कैसे बचे इसकी सटीक कार्ययोजना बनाकर उसे प्रचारित करते हुए देखा है ? क्या आपने किसी बहुजन संगठन को समाज के वकीलों को संगठित करने तथा उन्हे समाज की सुरक्षा के लिये प्रेरित करने की कार्ययोजना बनाकर उसके अनुसार पत्र-पत्रिकाओं में लिखने, ऐसे वकीलों के लेख, उनके ऐसे कार्यक्रमों का ब्यौरा, उनसे संपर्क का पता इ. जारी किये है ? आप अपने इर्दगीर्द बहुजन समाज की समस्याएं देखिये और सोचिये कि उन्हे हल करने के लिये हमारी पत्र-पत्रिकाओं की क्या भुमिका हो सकती है और उसके अनुसार लिखिये तब हमारा पत्र-पत्रिकाओं को निकालने का मकसद पूरा होगा। वर्ना आप इन पत्र-पत्रिकाओं को बंद कर दे और इसका पैसा किसी और बेहतर काम में लगाये यही अच्छा है। यही बात हमने दलित वॉयस के प्रकाशक मान॰ वी.टी. राजशेकर को तब लिखी थी जब उन्होने ''क्या दलित वायस को जारी रखा जाये'' इसके बारे में लोगों से राय लेते हुए यही बात हमसे भी पूछी थी।

पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशित करने में बहुत ज्यादा धन तथा परिश्रम की जरुरत होती है। इसलिये जो इनका प्रकाशन करते है वे अक्सर ही साधन-संपन्न होते है। अक्सर ही साधन संपन्न बहुजनों में शोषक आर्य-ब्राह्मणवादियों के खिलाफ सच्चे मिशन के कार्यक्रमों को अमल में लाने की हिम्मत नही होती। इसलिये वे या तो शोषकों के एजेन्ट बन जाते है या फिर पत्र-पत्रिकाओं को धन कमाने का साधन बना लेते है।

पत्र-पत्रिकाओं को छापने से ज्यादा बेहतर यही है कि बहुजन संगठनों का हर सदस्य अपना खुद का यु टयुब चॅनल चलाये, अपना खुद का ब्लाग शुरु करे। इसमें उसे कोई खास साधन-संधाधनों की जरुरत नही लगती। तब हमारे बहुजन सोशल मीडिया के गलत या निरुद्देश राह पर चलने की संभावना न के बराबर होगी।

3. अपने घर को पूजारियों से मुक्त रखे

बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के मुताबिक पूजारी ही वह शैतानी दिमाग है जो हमारी तार्किक शक्ति (सम्मा दिती) को नष्ट करता है। पूजारी चाहे किसी भी ध र्म का क्यों ना हो वह धर्म को अंधविश्वासों तथा हानिकारक खर्चिले कर्मकांडों तथा प्रथा-परंपराओं में बदलकर बहुजनों को ब्राह्मणवादी शोषण के लिये लाचार बेबस बनाने का काम करता है। मौजूदा भिख्खु इसका अपवाद बिल्कुल नही है। भिख्खुओं ने खुद को ब्राह्मणवादी पंडे-पूजारियों में तब्दिल कर दिया है क्योंकि वे सबसे बडे आलसी है

और बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बताये हुए भिख्खुओं के कामों को अंजाम देने की जरा भी काबिलियत नही रखते। उनमें प्रज्ञा, शील और करुणा कही नजर नही आती। न ही वे कडे परिश्रम से अपनी रोजी रोटी कमा सकते है। इसलिये आप के परिवार की बेहतरी के लिये यह जरुरी है कि आप भिख्खुओं सहित सभी किस्म के पूजारियों से अपने घर को मुक्त रखे।

4. कमजोर करने वाली प्रथा-परंपराओं को त्याग दे

महंगी प्रथा-परंपराएं आपको आर्थिक रुप से कमजोर बनाती है जबकि अंधविश्वासों पर आधारित कर्मकांड तथा प्रथा-परंपराएं आपको तार्किक रुप से दिवालिया, मानसिक रुप से गुलाम तथा पूजारियों के हाथों का खिलौना बनाती है। इन प्रथा-परंपराओं का तथा कर्मकांडों का पालन लोग इसलिये करते है क्योंकि वे डरते है कि लोग उन्हे क्या कहेंगे। उनमें इतना साहस नही होता की जिस बात को वे खुद के परिवार के लिये ठीक मानते है उस पर अपने परिवार के हित में अमल करे। वे इस बात को भूल जाते है कि कठिन समय में न ही कोई पूजारी और न ही लोग उसकी मदद के लिये आगे आएंगे। तब आपको औरों की पर्वा क्यों होनी चाहिये कि वे क्या कहेंगे ? आप को पूरा हक है कि आप अपने परिवार के हित की बातों पर अमल करे।

हमने अपने सभी सामाजिक कार्यक्रमों को सादगी तथा कम खर्चे में मनाने चाहिये। मसलन मृतक की राख को नदी में प्रवाहित करने का काम परिवार के दो चार लोगों ने करना चाहिये। तीसरा दिन इ. नही करना चाहिये लेकिन अगर आपका मन नही मानता तो आप परिवार के चार-पांच लोगों के बीच इसे बिना किसी पूजारी के संपन्न करें।

5. परिवार में नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता

परिवार में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रुप से लागु करें। नैतिक शिक्षा परिवार के सदस्यों को आलस, लालच, ईर्षा इ. बूरी प्रवृत्तियों के खतरनाक दुष्परिणामों से बचाती है। उन्हे सचेत करती है कि ये प्रवृत्तियां कैसे समाज की हर बुराई की जड है तथा शोषण व्यवस्थाओं का मानसिक आधार भी है। नैतिक शिक्षा का मकसद परिवार के सदस्यों में प्रज्ञा, शिल ओर करुणा का विकास करना है। उन्हे अपने परिवार तथा समाज के हित में बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का पूरा दर्शन अतिसंक्षेप में समझा देना है। नैतिक शिक्षा का मकसद खुद को तर्कपूर्ण ढंग से सोचने तथा खुद में जीवन की सभी बातों में दूर दृष्टी को विकसित करना है। अलग अलग परिस्थितियों में तथा अलग अलग प्रकार के व्यक्तियों से कैसे बर्ताव करना है इसके लिये प्रशिक्षित करना है। सभी लोगों के मानवाधिकारों की हिफाजत करने की मानसिकता को विकसित करना है। उन्हे आराम और सच्चे सुख के बीच के फर्क को समझाना है। अर्थपूर्ण तथा

समाजोपयोगी जीवन से कैसे सच्चे सुख को हासिल किया जा सकता है इसे समझाना है। शोषण दमन के खिलाफ कब हिंसा का प्रयोग जायज है इसे स्पष्ट करना है। इस तरह नैतिक शिक्षा संक्षेप में बताया गया संपूर्ण जीवन दर्शन है जिसका मकसद समाज का सशक्तिकरण करना और अर्थपूर्ण सुखी जीवन जिना है।

हमारे पूर्वज इसकी शिक्षा छोटी छोटी बोध-कथाओं के माध्यम से बच्चों को देते थे जो नैतिक तथा व्यवहारिक शिक्षा का अत्यंत प्रभावी साधन था। जातक कथाएं इसी मकसद से बनाई गई थी लेकिन ब्राह्मणवादी भिख्खुओं ने अंधविश्वासों की मिलावट से उन्हे विषाक्त बना दिया।

6. परिवार को आर्थिक रुप से सशक्त बनाएं

आप अपने परिवार को आर्थिक रुप से मजबूत बनाएंगे अगर आप 1) मनुवादी पत्र-पत्रिकाओं को 2) मनुवादी डिश टी.वी. को, 3) बेअसर पत्र-पत्रिकाओं को 4) हानिकारक जंक फुड इ. को, 5) हानिकारक प्रथा-परंपराओं को, 6) अल्कोहोल इ. को त्याग देंगे। और 7) स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाकर दवाओं पर होने वाले भारी खर्चे को पूरी तरह से बचा लेंगे। स्वास्थ्य वर्धक जीवन शैली अपनाने वालों को मामुली सर्दी-खाँसी तक नही होती।

उपरोक्त उपायों के अलावा परिवार के हर सदस्य को पैसे के महत्व को समझकर उसे शिक्षा तथा खुद को आर्थिक रुप से मजबूत बनाने में तर्कपूर्ण तरीके से खर्च करना चाहिये। परिवार के हर व्यक्ति ने इस बात को तर्कपूर्ण रुप से सोचना चाहिये कि वे अपने बचे समय का उपयोग किस तरह से अपनी आर्थिक हालत को सुधारने में लगा सकते है। जबतक आप इस दिशा में पूरी संजिदगी से सोचेंगे नही तब तक आपको इसके तरिकों का पता नही चलेगा। इसके संबंध में आपको इंटरनेट तथा अन्य सरकारी रोजगार उपक्रम संस्थानों में थोडा सा रिसर्च करना होगा। कई लोग इंटरनेट पर अपना मुफ्त में चॅनल खोल कर भारी पैसा कमाते है। कई लोग आनलाईन काम करके भी पैसा कमाते है। कुछ लोग घर में खाने पीने इ. चीजें बनाकर उसे अपने मित्रों के बीच बेचकर भी सहायक आर्थिक स्त्रोत पैदा कर लेते है। समाज में आपके अच्छे संबंधों का आपको अवश्य ही लाभ होगा। आप खुद तथा दूसरी बस्ती के कुछ मित्रों की मदद से किसी एक चीज को ज्यादा पैमाने पर खरीद कर अपने अपने घर से ही उसका व्यवसाय कर सकते है। इस तरह आप आर्य-ब्राह्मणवादी दूकानदारों से बेहतर ढंग से प्रतिस्पर्धा कर सकते है। आप को घर पर बोर्ड इ. लगाने की भी जरुरत नही है। मांग होने पर धीरे धिरे एक एक चीज बढा सकते है। हमने इस बात को कतई नही भूलना चाहिये कि बहुजन समाज सबसे विशाल बाजार है जिसका दोहन करके आर्य-ब्राह्मणवादी हमारे पैसे से मालामाल होते रहे है। तब हम बहुजन एक-दूसरे को

उनके व्यवसाय में मदद कर क्यों ना खुद अपनी तरक्की करें ?

इसके लिये आपको सबसे पहले खुद में कई व्यवसायिक कौशल्यों का विकास करना होगा। आपको जानना समझना होगा कि किन व्यापारिक नियमों का पालन कर आप अपना व्यवसाय बढा सकते है। इसके संबंध में इंटरनेट पर रिसर्च करना होगा। इंटरनेट पर सभी जानकारियां उपलब्ध है क्योंकि ऐसी ही उपयोगी जानकारी इंटरनेट पर देकर ये चॅनल यु टयुब के माध्यम से जारी विज्ञापनों से भारी पैसा कमाते है। आपको अपने ग्राहकों से तथा व्यापार से संबंधित सभी लोगों से योग्य व्यवहार करना होगा। इसलिये खुद में सामाजिक बुध्दी (**social intelligence**) तथा सामाजिक कौशल्यों को विकसित करना होगा। सामाजिक बुध्दी तथा कौशल्यों का मतलब हर किसी को उसके व्यकितत्व के मुताबिक इस तरह से व्यवहार करना है, जिससे परस्पर फायदे के साथ आपके उनसे संबंध मधुर बनते है। हमने अपनी उन प्रवृत्तियों को जैसे कि आलस, लालच, इर्षा, घमंड इ. को छोडना होगा जो आपके व्यवसाय को नुकसान पहुंचाते है। आपस में सहयोग की भावना को समाज में विकसित करके ही हम इसे सुहानी सच्चाई में बदल सकते है।

सामाजिक सशक्तिकरण

सामाजिक सशक्तिकरण में समाज के मुद्दों पर सामुहिक प्रयासों की जरुरत होती है। ऐसे प्रयासों को शोषक वर्ग तथा उसके दलाल पार्टी-संगठन अपने लिये खतरा मानकर इन प्रयासों को आपके ही बीच के स्वार्थी लोगों के माध्यम से विफल बनाने की पूरजोर कोशिश करते है। इसलिये सामाजिक सशक्तिकरण के संघर्ष की कुछ मूलभुत अनिवार्यताएं है जिन्हे हम संक्षेप में निचे दे रहे है।

सामाजिक संघर्ष की मूलभुत अनिवार्यताएं

1. किसी भी पार्टी अथवा विचारधारा को बीच में ना लाना :- जब हम दुकान में सामान खरीदने जाते है तो हम वहां अपनी पार्टी या विचारधारा बीच में नही लाते सिर्फ क्या खरीदना है इसकी तथा उसके दाम की बात करते है। विभिन्न कार्यालयों तथा व्यवसायों में हम सिर्फ काम की बात करते है। पार्टी तथा विचारधारा हर व्यक्ति का निजी मसला है, उस पर निजी तौर पर काम करने के लिये हर कोई स्वतंत्र है। इसलिये सभी सामाजिक सशक्तिकरण के संघर्षो में हमने न ही अपनी पार्टी को बीच में लाना है और न ही अपनी विचारधारा को। तभी हमें बहुजन समाज के सभी घटकों के लोगों का व्यापक समर्थन हासिल होगा। जब भी सामाजिक सशक्तिकरण के

लिये किसी समस्या को हल करने के लिये या किसी कार्य को संपन्न करने के लिये सामुहिक प्रयास करे तो उस समस्या को बेहतर ढंग से कैसे सुलझाया जाएगा या उस कार्य को किस तरह बेहतर ढंग से संपन्न किया जायेगा इसी पर हमारी सारी कोशिशें केन्द्रित होनी चाहिये।

2. अपनी परनिर्भरता की मानसिकता को त्याग दें :- जिस तरह आप अपनी रोटी खुद कमाते है, उसी तरह आपको दमन-शोषण से खुद के प्रयासों से ही मुक्त होना पडेगा, अपना भला खुद करना होगा। नेताओं पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति को त्याग कर ही आप सामाजिक सशक्तिकरण के कामों को कामयाबी से अंजाम दे सकते है। नेताओं को लेकर आपका अबतक का अनुभव क्या काफी नही है ? जबतक जागरुक जनता अपने सामाजिक सशक्तिकरण के संघर्ष का खुद नियंत्रण नही करती हम सच्चे सामाजिक सशक्तिकरण के कामयाब संघर्ष की कल्पना भी नही कर सकते। यही सच्चाई है। जागरुक लोगों ने समय समय पर साबित किया है कि वे अपने खुद के बलबूते पर सामाजिक सशक्तिकरण के संघर्ष को कामयाब बना सकते है। नागपुर में रेल्वे तथा कपडा मील मजदूरों ने कई हडतालें खुद के बलबूतें पर की और कामयाब हुए। नेता लोग बाद में बहती गंगा में हाथ धोने के लिये शामिल हुए। महाराष्ट्र में खैरलांजी आन्दोलन लोगों ने अपने बूते पर किया, नेता बाद में आये। भीमा कोरेगांव में बहुजन शौर्य स्तंभ पर इकट्ठा हुए हजारों लोगों पर आर्य-ब्राह्मणवादियों ने किये हिंसक हमले के विरोध में जो संघर्ष हुआ वह भी लोगों ने खुद किया था।

अबतक लोगों ने कभी संजीदगी से यह सोचा ही नही है कि उन्हे अपना संघर्ष खुद के नियंत्रण में खुद के बल पर करना है, इसलिये वह हमेशा नेताओं पर निर्भर रहे है। अगर आप नेता-निर्भरता की मानसिकता को त्याग दे तभी सार्थक संघर्ष हो सकता है वर्ना कामयाब सामाजिक सशक्तिकरण के संघर्ष को भूल जाईये।

3. आत्म-निर्भर अनौपचारिक जागरुक समुह :- सभी औपचारिक संगठन जाति-व्यवस्था जैसी पिरॅमिड जैसी संरचना वाले होते है जिसके शीर्ष स्थान पर केन्द्रिय नेता जबकि नीचली पायदान पर आम कार्यकर्ता होते है। कार्यकर्ताओं का भला या बूरा करने की सारी ताकत केन्द्रिय नेता के हाथों में सिमटी होती है। नीतिगत रुप से भी यह बात जनतंत्र के लिये ठिक नही है। दूसरी बात यह है कि किसी भी संगठन का नेता वही व्यक्ति बन सकता है जिसके पास संगठन को चलाने के लिये पूरा पूरा समय है। ऐसे नेता अक्सर ही उच्च मध्यम वर्ग से तथा साधन-संपन्न होते है या संगठन पर काबिज होने के बाद साधन-संपन्न बन जाते है। ऐसे नेता क्योंकि किसी भी किमत पर अपनी ताकत को बरकरार रखना चाहते है इसलिये भ्रष्ट्र तथा निरंकुश बन जाते है।

आर्य-ब्राह्मणवादी शोषक वर्ग औपचारिक संगठनों को बेहद पसंद करता है क्योंकि

इनको भ्रष्ट्र बनाना या कूचल देना बहुत ही आसान होता है। वे ऐसे नेताओं को खरीद सकते है, उनके संगठन में अपने एजन्ट घूसा कर कर संघर्ष को गलत दिशा दे सकते है, संगठन को विभाजित कर सकते है, संगठन के कामों का भीतराघात कर सकते है। इससे भी काम न बने तो सारे संगठन को कॉंसन्ट्रेशन कॅम्पों तथा जेलों में ठूंस सकते है। अमेरिकी सरकार ने विश्व युध्द के समय अमेरिका की सारी जापानी आबादी को कांसेन्ट्रेशन कॅम्पों में ठूंस दी थी।

कोई भी औपचारिक संगठन आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, न्यायिक, किसान, मजदूर, महिला इ. सभी क्षेत्रों में कार्य नही कर सकता और न ही वह साथ साथ आर्य-ब्राह्मण ावादी शोषकों के रणवीर सेना, बजरंग दल इ. आतंकवादी संगठनों से निपट सकता है। इसलिये जो भी लोग इन क्षेत्रों में बहुजन मिशन के ''असली'' कामों को अंजाम दे रहे है उन सबकी मदद करना हमारा फर्ज है। इसलिये मजबूत इरादों वाले, आलस, लालच, तथा इर्षा से मुक्त सामाजिक न्याय के लिये समर्पित लोग जिनकी निष्ठा सिर्फ और सिर्फ बहुजन मिशन के प्रति है, जो किसी भी संगठन के अंध भक्त नही है वे 1-5 की तादाद में अपना आत्मनिर्भर, अनौपचारिक समुह बनाकर अपनी क्षमताओं को, साध ान संसाधनों को, अपनी जिम्मेदारियों तथा कमजोरियों को ध्यान में रखते हुए अपनी प्राथमिकता के बहुजन मिशन के कामों को अंजाम देने के लिये लोगों के बीच सक्रिय हो जाये। इसके सिवा दूसरा रास्ता नही है।

ऐसे समुह अपने कामों को आपसी पूर्ण सहमति से अंजाम देंगे। पूर्ण सहमति का होना अनिवार्य शर्त है। जो लोग असहमत है वे अपना अलग समुह बनाकर अपने ढंग से मिशन के काम को अंजाम दे। ऐसे हजारों की तादाद में बने स्वतंत्र, एकदूसरे से असंबध्दित आत्मनिर्भर अनौचारिक समुह आम जनता की सबसे अहम जरुरतों के कामों में सक्रिय मदद करेंगे। उनकी वजह से आम लोगों की स्वतंत्रता को जरा भी खतरा नही होगा क्योंकि वे कभी भी किसी भी पद को धारण नही करेंगे। सच्चे बहुजन संघर्ष में वास्तव में कोई पद ही नही होते सिर्फ और सिर्फ अलग अलग जिम्मेदारियाँ होती है। पद सिर्फ औपचारिक संगठनों में होते है। जागरुक बहुजनों के समुह लोगों को अपनी सक्रियता और सुझबुझ से प्रभावित करेंगे। वे किसी एक स्थिति में क्या करना चाहिये इसका सुझाव तथा कार्य-योजना प्रस्तुत करेंगे तथा जनता की पूर्ण सहमति से उनके बीच एक आम कार्यकर्ता की हैसियत से हिस्सा लेंगे। वे अलग अलग हालातों में अलग अलग जिम्मेदारियों का वहन करेंगे। वे संघर्ष का नेतृत्व अपने हाथों में कतई नही लेंगे बल्कि वे संघर्ष के मकसद को स्पष्ट करेंगे, लोगों की आकांक्षाओं के मुताबिक कार्य का चयन कर उसकी कार्य-योजना प्रस्तुत करेंगे, जरुरी प्रचार करेंगे तथा इस का पूरा पूरा ध्यान रखेंगे कि बहुजनों का संघर्ष खुद को नुकसान पहुंचाने वाले नकली संघर्ष में न बदल जाये।

सामाजिक सशक्तिकरण संघर्ष के कार्य

लोगों के विचारों को चालना देने के लिये हम सामाजिक सशक्तिकरण संघर्ष के कुछ कार्यो का संक्षिप्त ब्यौरा दे रहे है। हमें उम्मीद हे कि आम लोग अपनी जरुरत ओर हालातों के मुताबिक अपने कामों को खुद तय करेंगे।

1. सुबह के व्यायाम समुह

आमतौर से मध्यम वर्ग के औरत-मर्द सुबह-सुबह मार्निंग वॉक के लिये अपने मित्रों के साथ निकलते है। जागरुकता समुह ऐसे मार्निंग वाक में हिस्सा लेकर उन्हे शारीरिक व्यायाम, हँसने का व्यायाम, सामाजिक खेल, आपस में एक-दूसरे के जन्मदिन मनाने इ. कामों में मुहल्ले के बगीचे, समाज भवन या मैदान में संगठित कर सकते है। इन सब कामों का मुख्य मकसद लोगों के जीवन में हँसी-खुशी का माहौल पैदा कर उन्हे तनाव से मुक्त करना, तथा उनके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना है। व्यायाम समुह के लोग स्मार्ट फोन के माध्यम से आपस में उपयोगी जानकारियों का आदान-प्रदान कर सकते है। वे सामाजिक रुप से जागरुक रहे और वक्त पडने पर शोषित बहुजन समाज के लिये कुछ करने की मानसिकता को विकसित करें।

भीमा कोरेगांव में बहुजन शौर्य-स्तंभ पर इकट्ठा हजारों बहुजनों पर आर्य-ब्राह्मण वादी आतंकवादियों ने हिंसक हमला किया जिसका विरोध करने वाले दलित-बहुजन युवकों पर पुलिस ने झूठे मुकदमें दायर किये। तब नागपुर में ''सावित्रिबाई फुले महिला मंडल'' नामक महिलाओं के एक सुबह के व्यायाम समुह ने आपसी पूर्ण सहमति से झूठे मुकदमों में फँसाए गए इन युवकों की मदद के लिये एक पर्चा जारी किया। इन पर्चो को पूरे नागपुर में दलित बस्तियों के बौध्द विहारों इ. के निकट लगाया गया। पर्चे में यह सुझाव दिया गया था कि 1) सारे पीडित युवक संगठित होकर आपसी सहमति से वकील तथा उनकी कुल फीस तय करें, 2) वकीलों की कुल फीस को दलित मुहल्लों की संख्या से विभाजित कर हर मुहल्ले के लिये यह खर्चा निश्चित करें। 3) क्योंकि सारा खर्चा एक ही समय नही देना होता है, मुहल्ले की पारी के मुताबिक उस मुहल्ले के जागरुक बहुजन मुहल्ले में इसके लिये चंदा इकट्ठा करे और सब लोगों की उपस्थिति में वकीलों को उनकी फीस अदा करे। चंदा अगर ज्यादा इकट्ठा होता है तो वे उसे आपसी पूर्ण सहमति से किसी के पास भविष्य की मदद के लिये सुरक्षित रखे। इस पर्चे का बहुत ज्यादा महत्व था क्योंकि इससे बहुजन समाज अपने बल पर अपने खिलाफ होने वाले अन्यायों से निपटने की मुहल्ला स्तरों पर संरचना पैदा कर सकता था। बहुजन समाज को किसी भी नेता के पिछे भागने की जरुरत ही नही पडती। यह बात नकली नेताओं तथा आर्य-ब्राह्मणवादी शोषकों के लिये खतरे की घंटी थी इसलिये

इस पर्चे में दिये गये सुझावों के मुताबिक कार्रवाई नही की गई। परनिर्भरता से ग्रसित शोषित अवाम खुद ही सक्रिय नही हो सका था।

2. परस्पर सहयोग का विकास

सुबह के व्यायाम समुह के प्रत्येक सदस्य में कोई न कोई खासियत, कुछ विशेष रुची, संसाधन, संपर्क, उपयोगी कौशल्य इ. होते है। इनका एक-दूसरे के सशक्तिकरण के लिये उपयोग किया जा सकता है। इससे उनका समुह और ज्यादा मजबूत, ज्यादा जागरुक, और ज्यादा संगठित हो जायेगा। ऐसा परस्पर सहयोग एक दूसरे पर नियमों व्दारा थोंपा नही जाना चाहिये बल्कि बल्कि स्वाभाविक रुप से एक दूसरे से प्रेरित होकर उसका विकास होना चाहिये। वे एक-दूसरे व्दारा उत्पादित वस्तूओं को खरीद सकते है।

3. पूजारियों का पर्याय

पितामह ज्योतिराव फुले ने बहुजनों को ब्राह्मण पूजारियों की मानसिक तथा आर्थिक गुलामी से मुक्त करने के लिये बहुजनों ने अपने सारे सामाजिक संस्कार तर्कपूर्ण रुप से तथा सादगी से खुद ही अंजाम देने की यंत्रणा का विकास करने का भरकस प्रयास किया था। कुछ लोग अंधविश्वास से खुद को पूरी तरह से मुक्त नही कर सकते इसलिये नये बनाये घर में प्रवेश करने जैसे कार्यक्रमों के लिये तार्किक रुप से प्रशिक्षित बहुजन बुध्द वंदना / तर्कपूर्ण प्रार्थना के बाद ऐसे कार्यक्रमों से संबंधित पारिवारीक ज्ञान से भरपूर प्रवचन की सी.डी, पेन ड्राईव अथवा मोबाईल रिकार्डिक बजा कर न सिर्फ कार्यक्रम को संपन्न कर सकते है बल्कि उन्हे सामाजिक रुप से जागरुक भी कर सकते है। ऐसे सभी समारोहों को कोई भी आम आदमी अंजाम दें।

4. समाज सहायता केन्द्र

आम बहुजनों को तब बहुत ही मुश्किल होती है जब उन्हे किसी सरकारी इ. कार्यालय की कोई तकनिकी कार्रवाई जैसे की इंटरनेट पर अकाउंट खोलना, कोर्ट से कोई दस्तावेज प्राप्त करना, कोई आवेदन करना, बँक में पैसे निकालने का फार्म भरना इ. कामों को अंजाम देना होता है तब वे इधर उधर भटकते है और दलालों के शिकार होते है। कई बार उनकी मदद के लिये कोई भी नही होता। इसमें न सिंर्फ उनका पैसा, परिश्रम और समय खर्च होता है बल्कि इस प्रक्रिया में उन्हे मानसिक तनाव भी झेलना पडता है। बूढे पेंशनर बँक में अक्सर ही बेबस और परेशान नजर आते है। जब सरकार ने गॅस सबसिडी के लिये बँक में अकाउंट खोलना अनिवार्य कर दिया तब लोग इंटरनेट पर बँक अकाउंट खोलने के लिये दर बदर भटक रहे थे।

कोई भी सामाजिक रुप से जागरुक बेरोजगार नवयुवक बस्ती के समाज भवन में या मैदान में पेड के निचे एक लॅपटॉप तथा प्रिंटर रखकर, अपने पास सभी आवश्यक फार्म, उनके नमुने, बँक के पैसे निकासी की स्लिपें इ. रखकर नाम मात्र की फीस पर बस्ती के ऐसे सभी लोगों की मदद कर सकता है। छोटे मोटे न्यायिक कार्य जैसे कि ॲफिडेविट तैयार करना, छात्रों के लिये आय प्रमाणपत्र, डोमेसाईल प्रमाणपत्र, जाति प्रमाणपत्र, गॅप प्रमाणपत्र इ. तैयार करने में मदद कर सकता है। इस तरह हर बस्ती के लोगों को अपने कामों के लिये इधर उधर नही भटकना पडेगा। उनका समय, पैसा और परिश्रम बच जायेगा।

5. न्यायिक सहायता

कई बार गरीब बहुजनों को वकीलों की जरुरत पडती है। जागरुक बहुजनों ने वकीलों तथा न्यायालय से संबंधित लोगों की सूची तथा विभिन्न कामों के लिये उनकी फीस इ. की जानकारी की फाईल तैयार करनी चाहिये तथा उसे बस्ती के समाज सहायता केन्द्र में रखनी चाहिये। यह सब जानकारी इकट्ठा करने का आसान तरिका यह है कि आप इसके संबंध में एक सामाजिक अनुरोध का पर्चा छापे तथा किसी दिन न्यायालय के बार रुम जाकर उसे सारे वकीलों में वितरित करे। इस पर्चे के पिछे विभिन्न काम छपे होंगे तथा आगे दर के लिये खाली स्थान रखा होगा। निचे वकील के नाम, पता तथा फोन नंबर इ. के लिये जगह होगी। पर्चे में दी हुई तारीख पर जाकर इन सभी पर्चो को इकट्ठा कर लिजिये। आपके पास जरुरी जानकारी हासिल हो जाएगी। इनमें से सामाजिक रुप से जागरुक वकीलों को आप सच्चे सामाजिक सशक्तिकरण के संघर्ष के साथ भी जोड सकते है। वे आर्य-ब्राह्मणवादी अत्याचार से पीडित दलित-बहुजनों के मुकदमें कम फीस पर लडने के लिये राजी हो जाएंगे। अन्याय अत्याचार से पीडित दलितों के खर्चे को उन बस्ती के सारे नागरिकों ने मिल कर उठाना चाहिये जैसे कि ''सावित्रिबाई फुले महिला मंडल'' नागपुर की महिलाओं ने अपने सुझावों में कहा था।

6. छात्रों के लिये मार्गदर्शन केन्द्र

प्रत्येक बस्ती में 1-2 जागरुक बहुजन मिलकर छात्रों के लिये मार्गदर्शन केन्द्र खोल सकते है। वे इंटरनेट तथा अन्य माध्यमों से छात्रों के लिये उपयोगी विभिन्न कोर्सस, उनको करने के बाद रोजगार इ. की पश्चात संभावना, इन कोर्सेस की फीस, अन्य अनिवार्यताएं, कोर्स शुरु होने की तारीख, इन कोर्सेस को पढाने वाले संस्थान इ. की सभी जानकारी की फाईलें रखे। इसके साथ ही शहर में मौजूद सभी शिक्षा संस्थानों,

होस्टलों इ. की जानकारी की फाईलें तैयार करें। इनमें पढाने वाले बहुजन शिक्षकों तथा कर्मचारियों इ. की जानकारी भी रखे ताकि इसका उपयोग हो सके।

छात्रों को दसवी या बारहवी की परीक्षा पास करने से पहले ही उन्हे यह सारी जानकारी दी जानी चाहिये कि उनकी रुची के मुताबिक वे किस कोर्स के लिये कहां जा सकते है। प्रवेश के लिये तथा स्कॉलरशिप इ. के लिये उन्हे पहले से ही कौन से दस्तावेज तैयार रखने चाहिये। इन दस्तावेजों को तैयार करने में इन छात्रों की नाममात्र फीस पर मदद करनी चाहिये।

जब छात्र प्रवेश लेने बाहर के शहर जाते है तो उन्हे पता नही होता कि कब उनका नाम सूची में आया और कब उन्हे अनुपस्थित बताकर उनकी जगह किसी आर्य-ब्राह्मण वादी को प्रवेश दिया गया। इसलिये बाहर के छात्रों ने वहां के स्थानीय बहुजन छात्र मार्गदर्शन केन्द्र से संपर्क स्थापित कर उनसे मदद लेनी चाहिये ताकि उनका हक न छीना जा सके। सूची में छात्र का नाम आते ही वे फौरन उसकी सूचना छात्र को दे सकते है तथा उनकी ओर से प्राथमिक कार्रवाई कर सकते है। मार्गदर्शन केन्द्र अपने शहर के उन लोगों के नामों की सूची भी अपने पास रख सकता है जो बाहर के छात्रों को अपने यहां किराये की जगह देना पसंद करते है।

7. समाज आत्मनिर्भरता केन्द्र

प्रत्येक बस्ती में कुछ परिश्रमी बेरोजगार युवक होते है। इनमें से इच्छुक युवकों को सेहतमंद नाश्ते इ. की चिजें तैयार करने का प्रशिक्षण देकर बहुजनों के ब्रांड से जागरुक दलितों-बहुजनों के बीच इनकी नियमित बिक्री की जा सकती है। इनकी चिजें नियमित रुप से खरीदने के लिये बस्ती के दलित-बहुजनों को जागरुक किया जा सकता है। इसका सबसे बडा फायदा यह होगा कि हमारे किसी नवयुवक को रोजगार हासिल होगा तथा हम बहुजनों का पैसा आर्य-ब्राह्मणवादियों की कंपनियों के सेहत के लिये हानिकारक जंक फुड में बर्बाद नही होगा। ऐसा कार्यक्रम हर बस्ती में शुरु किया जाये तो काफी बडी तादाद में बेरोजगार बहुजन युवकों को रोजगार मिल सकता है। नाश्ते के अलावा और भी जरुरी चीजों के लिये उपक्रम शुरु किये जा सकते है।

8. प्रत्यक्ष उपभोक्ता-उत्पादक संबंध

आर्य-ब्राह्मणवादी बिचौले दलालों की वजह से किसानों को उनकी पैदावार के उचित दाम नही मिलते और उनको भारी नुकसान होता है। ये उत्पाद ग्राहकों तक पहुंचते तक उनकी किमत कई गुना बढ जाती है। इसलिये किसानों तथा उपभोक्ता इन दोनों के फायदे के लिये यह जरुरी है कि जागरुक बहुजन व्यक्तिगत तौर पर या मिलकर अपने

परिचित किसानों से उसका उत्पाद खरीदे और उसे अपनी बस्ती के सामाजिक रुप से जागरुक नागरिकों की मदद से आपस में तकसिम करे। सबसे पहले एक उत्पाद से शुरु करें तथा बाद में मंगाये जाने वाले उत्पादों की तादाद को बढा दे। इससे हर बस्ती के कई बहुजनों को रोजगार हासिल होगा।

जो बहुजन बस्ती में अपनी छोटी छोटी दुकाने बडी ही दयनीय हालातों में चला रहे है उनके व्यवसाय के विकास के लिये उन्हे प्रशिक्षित करने के लिये सेमिनार आयोजित किये जा सकते है। इससे उन्हे आवश्यक कौशल्य सीखकर अपने रोजगार का विकास करने में मदद मिलेगी।

9. दमन-शोषण का प्रतिकार

दलित-शोषितों पर होने वाली हिंसा और दमन का प्रतिकार बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के सारे समाज ने मिलकर करना चाहिये। इसके लिये हमें किसी भी नेता पर या किसी भी संगठन पर निर्भर रहने की बिल्कुल जरुरत नही है। बहुजनों के तमाम पार्टी संगठन इस मामले में अब तक नाकाम साबित हो चुके है। जब भी दलितों-शोषितों के खिलाफ कहीं भी हिंसा होती है तो हमने :-

1) दलित बस्तियों में बिना किसी लाउड-स्पिकर के, बौध्द विहार, समाज भवन, मैदान अथवा बगिचे में नागरिकों की आम बैठक आयोजित करनी चाहिये। वे बस्ती के हिस्से का चंदा इकट्ठा करें और सीधे तौर पर पीडितों के मुकदमों, निर्वाह इ. के लिये संबंधित व्यक्तियों को फीस / किमत इ. के रुप में अदा करें और यह सुनिश्चित करें कि अत्याचारियों को हर हाल में सजा मिल कर ही रहेगी।

2) पीडित परिवारों को प्रत्येक बस्ती में बुलाकर उनके सामने तथा बस्ती के लोगों के सामने इकट्ठा चंदे का भुगतान किया जाना चाहिये ताकि हिसाब किताब में कोई शंका न रहे। पीडितों की सिधी आर्थिक मदद से उन्हे सवर्णो व्दारा उनके होने वाले सामाजिक बहिष्कार से लडने की कुव्वत मिलेगी।

3) अगर अत्याचारी किसी विशेष पार्टी के सदस्य है तो नागरिक इस बात को सुनिश्चित करे कि उनकी पार्टी का बहिष्कार किया जाये और योग्य हो तो अपनी बस्ती में ऐसे जाहिर फलक लगाये जाये।

4) अगर इन अत्याचारियों का कोई व्यापार या कारोबार है तो उनके सामानों का बहिष्कार करके यह सुनिश्चित करें कि उन्हे भारी आर्थिक नुकसान उठाना पडेगा।

5) इस बात को सुनिश्चित करें कि अत्याचारी तथा उनके समर्थकों को हर हाल में अपने किये की सजा मिले।

उपरोक्त उपायों पर अमल करके ही हम अपने उपर होने वाले अत्याचारों का सफलता से मुकाबला कर सकते है।

10. बंधुत्व कमिटियाँ

सांप्रदायिक हिंसा में सभी गैर आर्य-ब्राह्मण ही प्रभावित होते है। इस्लाम में धर्मतरित अथवा धर्मातर न किये हुए दोनों ही किस्म के आर्य-ब्राह्मणवादियों को कभी कोई नुकसान नही पहुंचता। सभी धर्मो के मुस्लिम तथा गैरमुस्लिम आर्य-ब्राह्मणवादी हम बहुजनों को आपस में हलाक करने की पूरजोर कोशिशें करते है। इसलिये, सांप्रदायिक हिंसा की रोकथाम करने के लिये हमने मुस्लिम-गैरमुस्लिम बहुजनों की बंधुत्व कमिटीयां कायम करनी चाहिये। ये कमिटियां निचे दिये हुए कामों को अमल में लाएगी :-

1) हम छोटे छोटे बुकलेटों, पर्चे के माध्यम से मुस्लिम-गैरमुस्लिम बहुजनों को समझाये कि उनके बीच नफरत फैलाने का आर्य-ब्राह्मणवादियों का मूल मकसद मुस्लिम-गैर-मूस्लिम शोषितों को आपस में लडाकर दोनों के हकों को खुद हडपना है।

हमें इन पर्चो-बुकलेटों में आत्महत्या किये हुए हिन्दु किसान परिवारों के हक में यह मांग करनी चाहिये कि हिंदु मंदिरों की विशाल संपत्ति में से हर पीडित किसान परिवार को भारी आर्थिक मदद दी जाये क्योंकि अंततः यह धन हिन्दू जनता का ही है। हमने यह मांग करनी चाहिये कि अगर आर्य-ब्राह्मणवादी सचमूच ही देशभक्त है तो उन्होने मंदिरों में जमा बेशुमार सोने को देश के खजाने में जमा करना चाहिये ताकि रुपये की किमत डॉलर के बराबर या उसके भी उपर पहुंच जाये। हमने मांग करनी चाहिये कि संघपरिवार के सभी संगठनों का शीर्ष नेतृत्व बहुजनों के हाथों में सौंपा जाये। हमने स्पष्ट करना चाहिये कि संघपरिवार के संगठन ओबीसी, दलित, आदिवासियों के आरक्षण का विरोध करते है इसलिये वे हिन्दू हितों के विरोधी है। आर्य-ब्राह्मणवादियों को तथा संघ परिवार के संगठनों को हिन्दू हितों के विरोधियों के रुप में प्रचारित करना चाहिये।

2) खेलकुद इ. से जहां हर टीम में मुस्लिम-गैरमुस्लिम दोनों ही रहेंगे, स्वाभाविक तरिकों से मुस्लिम-गैरमुस्लिम समुदायों के बीच भाईचारा तथा सहयोग विकसित करना चाहिये।

3) दोनों ही समुदायों के बीच आर्थिक सहयोग कायम करना चाहिये।

4) आर्य-ब्राह्मणवादियों के एजन्टों की गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिये तथा उनके षडयंत्रों को समय रहते ही बेनकाब करना चाहिये।

11. समाज आत्मरक्षा दल

शोषितों के महान मुक्तियोध्दा अय्यंकाली तथा बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने शुरु से ही इस बात को जाना समझा था कि जबतक आपका खुद का समाज आत्मरक्षा दल नही होगा तबतक आप आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा से खुद को सुरक्षित नही रख सकते। आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा सिर्फ इसी वजह से होती है क्योंकि हिंसा करते वक्त उनका बाल भी बांका नही होता। जिस क्षण उन्हे अहसास होता है कि हिंसा करना उनके लिये नुकसानदेह है तब वे हिंसा करने से पहले सौ बार सोचते है। इसलिये हर तरह के शोषकों के खिलाफ संघर्ष के लिये समाज आत्मरक्षा दल का होना जरुरी है। ऐसा दल बनते ही बहुजन समाज के अन्य कमजोर हिस्से भले ही आप उन्हे राजनीतिक तौर पर जागरुक न भी करें तब भी वे अपनी सुरक्षा के लिये अपने आप आपसे जुडने लगते है और आपकी ताकत सतत रुप से बढने लगती है। समाज सुरक्षा बल को सभी जरुरी मदद, खास तौर से पुलिस व्दारा उनके खिलाफ दायर किये जाने वाले झूठे मुकदमें इ. में सारे बहुजन समाज ने एकजूट होकर उन्हे मदद करनी चाहिये।

12. बहुजन प्रचार समुह

सभी मुहल्लों में कायम किये गए बहुजन प्रचार समूहों के कार्य निचे बताये मुताबिक होने चाहिये :-

1) बहुजनों ने आर्य-ब्राह्मणवादियों को बेनकाब करना चाहिये कि वे कभी भी देशभक्त नही रहे है। वे हमेशा से ही विदेशी हुक्मरानों की सेवा करते रहे है। उन्होने अंग्रेजों से माफी मांग कर तथा अंग्रेजों के लिये काम करने की इच्छा जताकर जेल से अपनी रिहाई की है। आर्य-ब्राह्मणों ने बंगाल में अपनी राजनीतिक सत्ता कायम करने के लिये भारत के बँटवारे के समय मुस्लिम अल्पमत तथा दलित बहुमत के जेस्सोर, खुलना, बरीसाल, फरीदपूर, ढाका, मैमनसिंह, तथा 98% चकमा बौध्दों की आबादी वाले चिटगांग हिल इ॰ क्षेत्र जबरन पाकिस्तान के हवाले किये। जबकि पाकिस्तान को वही हिस्से दिये जाने थे जहां मुस्लिम आबादी 50 फीसदी से ज्यादा की है। हमें उन्हे बेनकाब करना चाहिये कि उन्होने ही विदेशीयों को भारत पर आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया है। उन्होने अपने हितों की रक्षा के लिये हर हुक्मरान की सेवा की है।

2) इसे उजागर करना चाहिये कि आर्य-ब्राह्मण हिन्दू नही है क्योंकि जिजया टॅक्स से बचने के लिये उन्होने औरंगजेब से कहा था कि वे वैदिक धर्म के है हिन्दू नही है। ओबीसी, दलित, आदिवासियों का हक हडपने के लिये ही वे खुद को हिन्दू कहते है।

3) इस बात को बहुजनों के बीच उजागर किजिये कि आर्य-ब्राह्मणवादी ओबीसी, दलित, आदिवासी हिन्दूओं के हितों के दूश्मन है। मात्र 15% आबादी के आर्य-ब्राह्मणों

ने 85% आबादी वाले हिन्दूओं के अधिकतर हक हडपे है। आर्य-ब्राह्मणों के संघ-परिवार के संगठन हिन्दूओं के आरक्षण का विरोध करते है। उन्होने हिन्दूओं के हकों को हडपा है। वे महिला आरक्षण में भी दलित, ओबीसी, आदिवासी हिन्दूओं को उनका कोटा नही देना चाहते। इसलिये संघपरिवार के संगठन हिन्दू हितों के दूश्मन है। मौजूदा किताब के पिछे तालिका में उन्होने किसका कितना हक हडपा है इसका ब्यौरा दिया गया है।

4) पर्चो में बहुजनों के बीच यह प्रचार करना चाहिये कि संघ-परिवार के संगठनों के सभी शीर्ष पद ओबीसी, दलित, आदिवासी हिन्दूओं को दिये जाये क्योंकि अब तक सिर्फ और सिर्फ ब्राह्मणवादी उन पर काबिज है।

5) अपने पर्चो में मांग करनी चाहिये कि ओबीसी, दलित, आदिवासियों के दान से इकट्ठा हुई हिन्दू मंदिरों की अकूत संपदा में से आत्महत्या किये हुए हिन्दू किसानों के परिवारों को तथा सांप्रदायिक दंगों में मारे गये हिन्दू परिवारों को भारी आर्थिक मदद दी जाये। हमने मांग करनी चाहिये कि इन मंदिरों में रखा हुआ अकूत सोना सरकारी खजाने में जमा किया जाये ताकि रुपये की किमत डॉलर से भी महंगी हो जाये। इस तरह आर्य-ब्राह्मणवादी खुद को हिन्दू तथा राष्ट्रभक्त साबित कर सकते है।

13. आर्य-ब्राह्मणवादी हिंसा के शिकार शोषितों का पूर्नवसन

1) बाबासाहब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर दलितों का सुरक्षित जगहों पर पूर्नवास चाहते थे इसलिये उन्होने दलितों को शहर में बसने के लिये कहा था। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि सारे भारत में दलितों को हिंसा का शिकार बनाया जाता है, इस बात की सख्त जरुरत है कि हम दलितों के लिये सुरक्षित क्षेत्रों की पहचान करें ताकि असुरक्षित क्षेत्रों के दलितों का इन सुरक्षित जगहों में पूर्नवसन किया जा सके।

2) जब भी किसी गांव में दलितों के खिलाफ हिंसा होती है :- अ) बहुजनों के सामाजिक संगठन अथवा जागरुक बहुजन इन दलितों के पूर्नवास को मुमकिन बनाने के लिये एक ''दलित पूर्नवसन फंड'' कायम करें। इस पूर्नवास फंड में सारा दलित समुदाय अपनी क्षमता के मुताबिक हर महिने चंदा दिया करेगा। ब) दलितों को सुरक्षित क्षेत्रों में जमीन उपलब्ध कराने की व्यवस्था करे। इसके लिये कानूनी कागदत्र तैयार कर दलितों से घर की किमत किश्तों में वसूली जा सकती है। इससे पूर्नर्वास फंड की रकम सतत बढते जायेगी क) राज्य सरकार से मांग करे कि वे गांव के दलितों की जमीन, घर इ. संपत्ति को वाजीब किमत पर खुद खरीदे तथा उस किमत सहित उनकी पसंद की जगह पर हुए पूर्नवास के लिये अनुदान भी दे। जिन दलितों को सरकार ने जमीन दी है लेकिन उसपर उनका कभी कब्जा नही रहा है, उन सरकारों से मांग की जाय कि वे दलितों को जमीन के बदले उसकी किमत अदा करें और जमीन अपने कब्जे में ले। ड) इन दलितों को स्वँय-रोजगार इ. का प्रशिक्षण दे तथा उन्हे अपने पैरों

पर खडे होने में मदद करे।

3) जो बहुजनों की पार्टियों तथा संगठनों उपरोक्त कार्यक्रम में अपना सहयोग नही करते उन संगठनों को नजरंदाज करें। जो राज्य सरकारे इस कार्यक्रम में अपना सहयोग नही करती है, उनकी पार्टी का बहिष्कार करें। ऐसे प्रस्ताव सारे देश भर में पास कराने के लिये इंटरनेट, सोशल मीडिया पर प्रचार करे।

4) दलित पूर्नवसन फंड देश के हर जिले में कायम करें तथा 14 अप्रेल इ. के समारोहों को सादगी से मनाकर इस फंड में उसका एक हिस्सा दिया जाये इसका प्रयास करें। इन समारोहों में हर साल देशभर में अरबों रुपये खर्च होते है।

14. बहुजनों को साहुकारों से मुक्त कराना

चाहे फिर वे किसान हो या मजदूर उनकी बदहाली का एक बडा कारण उनका साहूकारों के कर्जे में दबा होना है। किसानों को नैसर्गिक आपदाओं के चलते साहूकारों से भारी ब्याज पर कर्जा लेना पडता है जियसे वे अक्सर चुका नही पाते। साहूकारों या बँक के कर्जे न चुकाने की वजह से उनकी प्रताडना से तंग आकर वे आत्महत्या तक करते है।

हमारे संपन्न बहुजन अपना धन बँकों की विभिन्न योजनाओं में जमा करते है। उन्हे चाहिये की वे उन किसानों को जिन्हे वे अच्छी तरह से जानते है, या जिनकी गँरन्टी समाज के अन्य लोग लेने के लिये तैयार है उन्हे नाममात्र के व्याज पर कर्जा दें। सामाजिक संगठन ये जिम्मेदारी ले कि किसानों का उत्पाद सीधे शहरों के मुहल्लें में खरीदा जायेगा और किसानों को उचित मूल्य मिलेगा ताकि वे अपना कर्जा चुका सके। बहुजन संगठन किसान फंड बना सकते है ताकि किसानों की मदद की जा सके। किसान फंड के चंदे की पेटियां मंदिरों के बाहर रोज रखी जाये तथा श्रध्दालूओं से निवेदन किया जाये कि वे भगवान के नाम पर अन्नदाता किसानों के फंड में दान दें। मिले दान का रोज हिसाब सभी लोगों के सामने किया जाये।

15. आंतर-समाज सहकार्य

आर्य-ब्राह्मणवादी शोषण से पीडित बहुजन किसानों, मजदूरों, छात्रों इ. को मोर्चे निकालने पर, भूख हडताल पर बैठने पर या धरना प्रदर्शन करने पर मजबूर होना पडता है। कई कई महिनों की ऋंखलाबध्द भूख हउताल का भी आर्य-ब्राह्मणवादी सरकारों पर कोई असर नही होता बल्कि वे लाठी, गोली चलाकर उनका क्रूर दमन करते है। इन सभी संघर्षो में हम तभी कामयाब हो सकते है जब हम अपने संघर्ष को आम बहुजन समाज के सहयोग से जोड दे। जब आम जनता की पूरी पूरी सहानुभूति

उनके साथ होगी तो उन्हे कभी भी दबाया-कुचला नही जा सकेगा। महान बहुजन मुक्ति-योध्दा अय्यंकाली ने दलित-पिछडे खेत मजदूरों की हडताल को एक साल से भी ज्यादा समय तक दलितों और मछुआरों के बीच हुए आर्थिक समझौते की बदौलत जारी रखने में कामयाबी हासिल की और जमींदारों को उनकी मांगे मानने पर मजबूर किया। यह तय किया गया था कि खेत मजदूरों के हर परिवार का एक सदस्य मछली पकडने में उनका सहयोग करेगा तथा बदले में अपना हिस्सा पाएगा।

यह खुशी की बात है कि समाज के विभिन्न घटक किसानों के मोर्चे के लोगों को खाने के तथा पीने के पानी के पॅकेट तथा अन्य जरुरी चिजे पहुंचा रहे है। संघर्षरत लोगों का प्रत्यक्ष जनता से संवाद होगा और वे एक दूसरे की बात को जानेंगे समझेंगे तभी समाज से उन्हे हर मुमकिन मदद मिलेगी। किसानों के संघर्ष की आर्थिक मदद के लिये मंदिरों, मजारों इ. सभी धर्मस्थलों के बाहर ''किसान मदत पेटियां'' रखी जानी चाहिये ताकि आने जाने वाले ऋध्दालु इन पेटियों में किसानों को दान करें।

16. बेहतर प्राथमिक शिक्षा

सभी आर्य-ब्राह्मण तथा बहुजन नेतृत्व की सरकारें शिक्षा का निजीकरण कर गरीबों को शिक्षा से पूरी तरह से वंचित करने का काम करते रही है। शिक्षा, डोनेशन तथा लगभग अनिवार्य बन गई टयुशन इ. इतनी मंहगी कर दी गई है कि एक मध्यम वर्ग का परिवार भी अपने बच्चों को उंची शिक्षा नही दिला सकता।

आर्य-ब्राह्मणवादी सरकारों ने गरीब बहुजनों को पूरी तरह से मजबूर, लाचार और गुलाम बनाने के लिये सरकारी प्राथमिक शिक्षा को बद से बदतर बनाया है। शिक्षकों से शिक्षा के अलावा कुटुंब नियोजन, इलेक्शन, सर्वे इ. के ही काम ज्यादा कराये जाते है। सरकारी स्कूलों की बुनियादी प्राथमिक शिक्षा किसी भी काम की नही है। इन स्कूलों के छात्र लगभग अशिक्षित रह जाते है। वे कभी भी अंग्रेजी माध्यम में बेहतर शिक्षा पाने वाले आर्य-ब्राह्मण छात्रों की जरा भी प्रतिस्पर्धा नही कर सकते।

ऐसी हालात में आम जनता को मिलकर ही कोई हल निकालना होगा। ऐसे अनेक उदाहरण है कि जब लोगों ने अपनी कोशिशों से सडके, पुल इ. बनाये है। इसलिये अगर इरादा मजबूत है तो आम जनता अपने संयुक्त प्रयास से बस्ती-मुहल्लों के समाज भवनों, बुध्द विहारों या मैदानों में गरीब बच्चों को बेहतर बुनियादी प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करा सकते है। हमारे बीच अच्छे बेरोजगार शिक्षक तथा न्युनतम जरुरी फीस देने वाले पालक मौजूद है। जरुरत उन्हे आपस में मिलाकर उनके बीच सारी बातें तय करने की तथा उनपर सामाजिक निगरानी रखने की है।

यह बडी ही खुशी की बात है कि भीम आर्मी के प्रमुख मा. चंद्रशेखर आजाद

रावण ने यह घोषणा की है कि उनके संगठन के लोग हर दलित बस्ती में बच्चों को इंग्लीश भाषा में प्रशिक्षित कराएंगे। ऐसे ही बुलंद इरादों वाले संगठनों को आगे आने की जरुरत है। शोषित समाज जागरुकता मुहिम सभी मिशनरी गतिविधियों का तहेदिल से समर्थन करती है चाहे उन्हे कोई भी संगठन क्यों ना अंजाम दे रहा हो। हम नकली तथा आत्मघाति संघर्षो का विरोध करते है भले ही वे किसी भी संगठन व्दारा क्यों ना चलाये जा रहे हो। सिर्फ हम ऐसे संगठनों का नाम लेने से बचते है।

17. जनहित याचिकांएं तथा आर.टी.आई. का उपयोग

आर्य-ब्राह्मणवादी दलितों को उनके हकों से वंचित करने के लिये तथा उनके विकास में अडंगे पैदा करने के लिये कदम कदम पर न्यायालयों में जनहित याचिकाएं दायर करते है। दलित-बहुजनों को चाहिये कि वे अपने हक को पाने के लिये न्यायालयों में जनहित याचिकाएं दाखिल करें। भूख हडताल पर महिनों बैठकर अपना समय, पैसा और परिश्रम बर्बाद कर मानसिक और शारिरिक तनाव झेलने से ज्यादा अच्छा काम जनहित याचिकाएं दायर करना है।

उसी प्रकार दलित-बहुजन जानकारी के अधिकार के कानून (**R.T.I.**) का उपयोग न्याय पाने के लिये तथा जरुरी जानकारियां हासिल कर अपने संघर्ष को और भी असरदार बनाने के लिये कर सकते है।

जनहित याचिकाओं के तथा जानकारी के अधिकार के कानून का योग्य ढंग से उपयोग करने के लिये इच्छुक लोगों के प्रशिक्षण के लिये सेमिनार इ. आयोजित किये जा सकते है।

18. सरकार के पास पडे हुए बाबासाहब के अप्रकाशित साहित्य का प्रकाशन

जागरुक बहुजन इस संबंध में जनहित याचिका इ. दायर कर तथा अन्य उपायों से बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सरकार के पास पडे अप्रकाशित साहित्य का प्रकाशन करने या इस साहित्य की फोटो कापियां वेब साईट पर डालकर लोगों के लिये उपलब्ध कराने की दिशा में योग्य सार्थक कदम उठा सकते है।

.....